

वर्ष: 5 अंक: 10 अक्टूबर, 2025

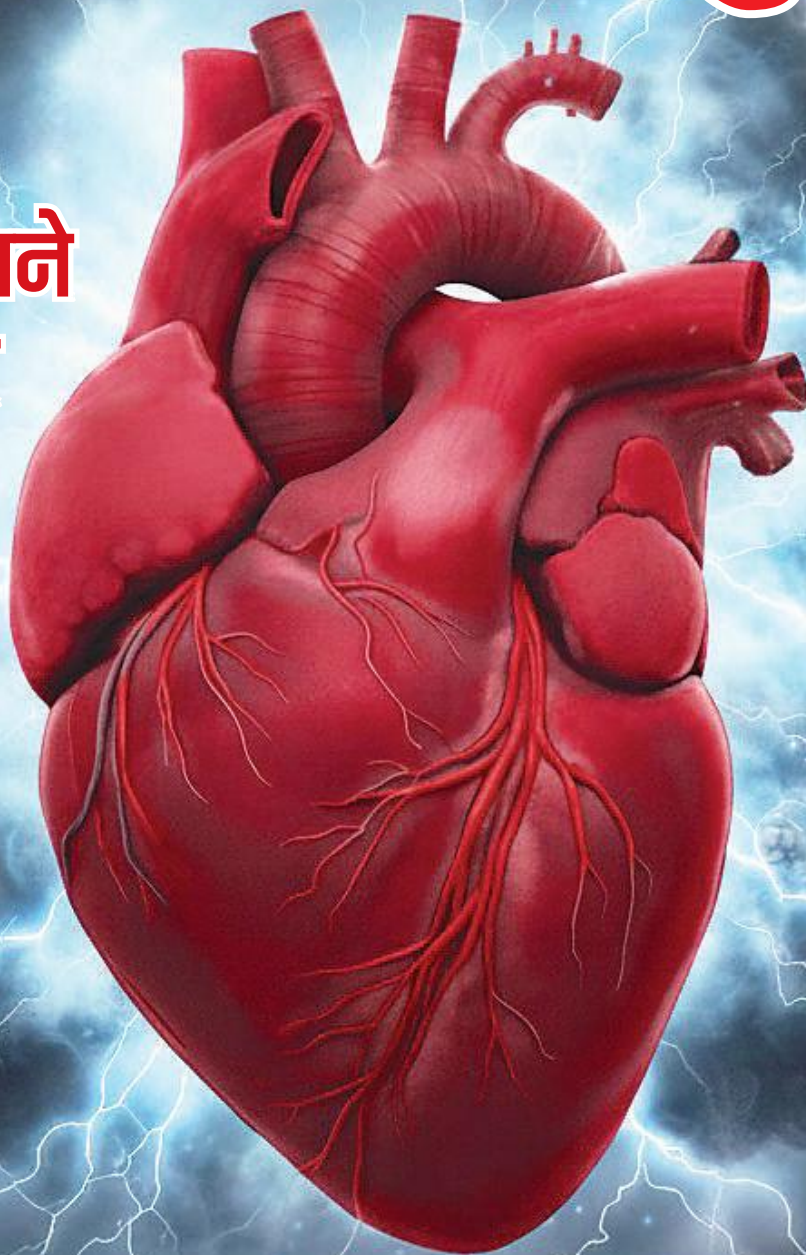
मूल्य: 60 रु.

पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे

दिल की सुनने
का समय

7



खैरात बांटो,
चुनाव जीतो

24

सब्र की परीक्षा
लेना अनुचित

27

कर्नल टॉड की
राजस्थान प्रेम कहानी

31

भारत नौवीं बार
एशिया का बादशाह

32



खुशियों एवं
प्रकाश के महापर्व

दीपावली

की आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएं



राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात



RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 5, अंक 10, अक्टूबर, 2025
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक
दिनेश रामावत

राजनीतिक सम्पादक
सुरेश व्यास

सम्पादक
अजय अस्थाना

प्रबंध सम्पादक
राकेश गांधी

सह सम्पादक
बलवंत राज मेहता

रेखाचित्र
राजेंद्र यादव

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स
महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल,
रातानाड़ा, जोधपुर - 342011
फ़ोन नंबर - 8107800000
ईमेल - rajasthanoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा
में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में
किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की
राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा
जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और
सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी
भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना
नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का
उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

• मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं
प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर,
महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342011 से
प्रकाशित और डी.बी. कॉर्पोरेशन लिमिटेड, 01 पार्वनाथ
इंडस्ट्रीयल एरिया, रिलायंस वेयर हाउस के पास,
मोगरा कलां, जोधपुर-342802 में मुद्रित,
संपादक: अजय अस्थाना।

4 अपनी बात
राहत की राह, संतुलन की चुनौती



नियमित कालम

- 20 बोल हरि बोल
- 21 बात बेलगाम
- 40 अभिव्यक्ति
- 42 ग्रहों की चाल

22-23 ब्ल्यू सिटी डांडिया महोत्सव-2025
सूर्यनगरी झूमी गरबे की ताल पर



35 नई दुल्हन, नया भारत

37 जलाओ दीप मन के

38 परिवार है जीवन निर्माण की पाठशाला

41 एक विरल विश्वविक्रमी मंदिर निर्माता महंत स्वामी महाराज

7 कवर स्टोरी
दिल की सुनने का समय



10 आवरण कथा...
स्वस्थ हृदय के लिए बदलें आदतें

12 आवरण कथा...
'दिल' के लिए जरूरी सही 'ईंधन'

14 आवरण कथा...
दिल पर भारी घर का तनाव

15 अदृश दर्शिता...
स्मार्ट सिटी का सपना, 12 करोड़ की बर्बादी

17 विधानसभा...
विधानसभा का विप्लव होता वातावरण

24 बिहार चुनाव...
खेरात बांटो, चुनाव जीतो

27 देश-विदेश...
सब्र की परीक्षा लेना अनुचित

30 सविधान...
भारतीय संविधान: निर्माण की यशस्वी गाथा

32 स्पोर्ट्स...
भारत नौवीं बार एशिया का बादशाह



राहत की राह, संतुलन की चुनौती



दिनेश रामावत
प्रधान सम्पादक

भारतीय कर व्यवस्था के इतिहास में 22 सितम्बर 2025 एक अहम तारीख के रूप में दर्ज होगी। इसी दिन से लागू हुआ है “जीएसटी 2.0” - एक ऐसा सुधार जो कर ढांचे को न केवल सरल करता है, बल्कि उपभोक्ता को सीधी राहत देने का वादा भी करता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जीएसटी काउंसिल की बैठक के बाद इसकी घोषणा की और कहा कि यह कदम भारत की अर्थव्यवस्था को “सरल कर शासन और व्यापक खपत” की दिशा में आगे बढ़ाएगा। लेकिन क्या यह सुधार वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए स्थायी परिवर्तन का आधार बनेगा, या फिर यह केवल उपभोक्ता राहत तक सीमित रह जाएगा?

भारत में दीपावली केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, बल्कि यह देश की सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधि का अवसर भी है। इस त्योहार के दौरान घरेलू खपत अपने चरम पर पहुंच जाती है। मिठाइयों से लेकर कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर आभूषण, गृह सजावट से लेकर वाहन खरीद तक— हर क्षेत्र में बिक्री का रिकॉर्ड बनता है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 सितम्बर 2025 को लागू हुए “जीएसटी 2.0” को दीपावली पर जनता के लिए “बड़ा तोहफा” करार दिया और इसे “जीएसटी बचत उत्सव” के रूप में मनाने की घोषणा की। इस घोषणा ने आम उपभोक्ताओं, कारोबारियों और उद्योग जगत में नई उम्मीद जगाई है।

भारत में जीएसटी 2017 में लागू हुआ था। शुरूआत में पांच प्रमुख स्लैब और उपकर की जटिल व्यवस्था थी। समय के साथ यह स्पष्ट हो गया कि बहु-स्लैबी संरचना उपभोक्ता और व्यवसाय दोनों के लिए भ्रम पैदा कर रही थी। अब जाकर सरकार ने इसे दो प्रमुख स्लैबों (5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत) में समेटा है।

यह सरलता केवल तकनीकी बदलाव नहीं है, बल्कि कर नीति में एक वैचारिक बदलाव भी है। सरकार यह संदेश देना चाहती है कि कराधान का लक्ष्य उपभोक्ता पर बोझ डालना नहीं, बल्कि उपभोग और उत्पादन दोनों को प्रोत्साहित करना है।

भारत का औसत मध्यमवर्गीय परिवार अपनी आय का बड़ा हिस्सा आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च करता है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के अनुसार, शहरी परिवार अपनी मासिक आय का लगभग 40-45 प्रतिशत हिस्सा भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और घरेलू सामान पर खर्च करते हैं। जब साबुन, टूथब्रश, पैकेड खाद्य, दूध और डेयरी उत्पाद जैसी वस्तुओं पर कर घटेगा, तो उपभोक्ता को यह राहत सीधे अपनी जेब में महसूस होगी। इसी तरह टीवी, एयर कंडीशनर और डिशवाशर पर दरें 28 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत कर दी गई हैं। यह बदलाव मध्यमवर्गीय सपनों को साकार करने की दिशा में मददगार साबित होगा।

यह तात्कालिक बचत केवल उपभोक्ता को ही नहीं, बल्कि पूरे घरेलू मांग तंत्र को गति देगी। जब परिवारों के पास अतिरिक्त पैसा बचेगा, तो वे अन्य सेवाओं और वस्तुओं पर खर्च बढ़ाएंगे। सुधारों के राजस्व असर को समझने के लिए वित्त वर्ष 2024-25 के आंकड़े महत्वपूर्ण हैं। इस अवधि में भारत का कुल सकल जीएसटी संग्रह 22.08 लाख करोड़ रुपए रहा। वृद्धि दर गत वर्ष की तुलना में 9.4 प्रतिशत अधिक है। पूरे वर्ष का औसत मासिक संग्रह 1.84 लाख करोड़ रुपए रहा, जो वर्ष 21 के मात्र 95,000 करोड़ रुपए मासिक औसत से लगभग दोगुना है। वर्ष 2025 का आंकड़ा जीएसटी लागू होने के बाद से रिकॉर्ड स्तर का है।

पांच वर्ष की यह छलौंग (वर्ष 2021 के 11.37 लाख करोड़ से वर्ष 2025 का संग्रह दोगुना) भारत की अर्थव्यवस्था की मजबूती और कर अनुपालन सुधार को दर्शाता है। ये आंकड़े बताते हैं कि आर्थिक गतिविधियों में मजबूती और डिजिटल अनुपालन ने जीएसटी संग्रह को नए स्तर पर पहुंचाया है। लेकिन अब जब दरें



घटेंगी, तो प्रश्न यह उठता है कि क्या यह संग्रह की रफ्तार कायम रह पाएगी?

वहीं भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कही जाने वाली सूक्ष्म, लघु और मध्यम इकाइयों लंबे समय से उच्च इनपुट लागत और जटिल अनुपालन से दबाव झेल रही थीं। अब नए सुधार से कच्चे माल और मध्यवर्ती वस्तुओं पर दर घटने से उनकी लागत कम होगी। अनुपालन सरल होने से कर चोरी का दबाव घटेगा। घरेलू उत्पादन और निर्यात दोनों को प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिलेगी।

इसका अर्थ यह हुआ कि जीएसटी 2.0 केवल उपभोक्ता तक सीमित राहत नहीं है, बल्कि यह आपूर्ति श्रृंखला और उत्पादन तंत्र को भी गति देने का अवसर प्रदान करेगी। लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जीएसटी दरों में कटौती का सीधा असर सरकार के राजस्व पर पड़ेगा।

जबकि वर्ष 2025 में रिकॉर्ड 22 लाख करोड़ रुपए से अधिक का संग्रह हुआ है, विशेषज्ञों का अनुमान है कि दर कटौती से आगामी वर्षों में 40,000-60,000 करोड़ रुपए का वार्षिक राजस्व नुकसान संभव है। यह नुकसान केवल केंद्र को ही नहीं, बल्कि राज्यों को भी प्रभावित करेगा।

राजकोषीय घाटा (जो वर्ष 25 में जीडीपी का लगभग 5 प्रतिशत है) पर इसका अतिरिक्त दबाव पड़ना तय है। ऐसे में सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि वह उपभोक्ता राहत और राजस्व स्थिरता के बीच संतुलन कैसे साधे।

“जीएसटी 2.0” और मोदी सरकार का “जीएसटी बचत उत्सव” निश्चित रूप से उपभोक्ताओं और उद्योग जगत के लिए राहत की राह खोलने वाला कदम है। दीपावली के अवसर पर इसे तोहफा बताना राजनीतिक रूप से भी समझदारी भरा है। लेकिन वास्तविक चुनौती यह होगी कि क्या यह सुधार उपभोक्ता राहत और राजकोषीय स्थिरता दोनों को साथ पाएगा। यदि सरकार स्मार्ट नीति और डिजिटल अनुपालन से राजस्व हानि की भरपाई कर लेती है, तो भारत अधिक गतिशील और उपभोक्ता-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ेगा। अन्यथा, यही सुधार सरकार की आर्थिक नीति के लिए सबसे कठिन परीक्षा भी बन सकता है।

सोना-चांदी की चमक और असुरक्षा का आईना

पिछले कुछ समय से सोना और चांदी की कीमतें लगातार नए कीर्तिमान बना रही हैं। यह असामान्य उछाल केवल भारत जैसे बड़े उपभोक्ता देशों की मांग का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे कई वैश्विक कारण छिपे हैं। कमजोर अमेरिकी डॉलर, केंद्रीय बैंकों की आक्रामक खरीद और अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीतिक तनाव जैसे कारकों ने मिलकर इन धातुओं को निवेशकों के लिए सबसे सुरक्षित ठिकाना बना दिया है। विशेषज्ञ मानते हैं कि जब भी अनिश्चितता बढ़ती है, लोग जोखिम वाले निवेश से दूर होकर सोने-चांदी की ओर रुख करते हैं और यही स्थिति आज फिर दिखाई दे रही है।

यूक्रेन और रूस का युद्ध, मध्य-पूर्व में लगातार बढ़ता तनाव और वैश्विक व्यापार युद्ध की आशंका ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर दिया है। ऐसे समय में निवेशक शेयर बाजार जैसे अस्थिर विकल्पों से हटकर सोने जैसी पारंपरिक सुरक्षित संपत्तियों में भरोसा दिखा रहे हैं। यही कारण है कि सोने की कीमतें रिकॉर्ड ऊँचाइयों तक पहुँच गई हैं। इस पर अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती की अटकलों ने और भी ईंधन का काम किया है। ब्याज दरें घटने से डॉलर कमजोर होता है और सोना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और आकर्षक बन जाता है। चूँकि सोना डॉलर में ही कारोबार करता है, इसलिए डॉलर की कमजोरी ने अन्य मुद्राओं के धारकों के लिए सोना सस्ता कर दिया है और इसकी मांग तेजी से बढ़ गई है। इसी के साथ चीन और भारत जैसे देशों के केंद्रीय बैंकों ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार की सुरक्षा और विविधता सुनिश्चित करने के लिए सोने की भारी खरीद शुरू कर दी है। इस संस्थागत मांग ने वैश्विक बाजार में सोने को ऐतिहासिक स्तर पर पहुँचा दिया है।

भारत में सोने की भूमिका विशेष रूप से दिलचस्प है। यहाँ सोना केवल निवेश का साधन नहीं बल्कि संस्कृति और परंपरा का हिस्सा है। शादियों से लेकर त्योहारों तक सोना खरीदना एक सामाजिक आवश्यकता की तरह देखा जाता है। किंतु मौजूदा बढ़ी हुई कीमतों ने मध्यमवर्गीय और ग्रामीण परिवारों की जेब पर दबाव डाला है। जिन परिवारों की योजना पहले बड़ी मात्रा में सोना खरीदने की होती थी, अब उन्हें अपने बजट को

घटाना पड़ रहा है। ग्रामीण भारत में, जहाँ सोना लंबे समय से बचत और सुरक्षा का प्रतीक रहा है, वहाँ बढ़ी हुई कीमतें असमंजस और चिंता पैदा कर रही हैं। शहरी क्षेत्रों में निवेशकों ने अब पारंपरिक सोने की जगह डिजिटल गोल्ड, गोल्ड बॉन्ड्स और ईटीएफ की ओर रुख करना शुरू कर दिया है, जिससे निवेश के तरीकों में बदलाव स्पष्ट दिखाई देता है।

चांदी का मामला कुछ अलग है। जहाँ सोना परंपरा और सुरक्षित निवेश का प्रतीक है, वहीं चांदी का उछाल औद्योगिक क्रांति और तकनीकी विकास से जुड़ा है। सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन और अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में चांदी का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। यह औद्योगिक मांग, निवेश की बढ़ती प्रवृत्ति के साथ मिलकर, चांदी के दाम को रिकॉर्ड स्तर पर ले जा रही है। भारत में भी सौर ऊर्जा और इलेक्ट्रिक वाहनों के बढ़ते क्षेत्र ने चांदी की खपत को तेजी से बढ़ाया है। इस कारण चांदी केवल गहनों तक सीमित नहीं रही बल्कि औद्योगिक विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है।

सोना और चांदी की चमक के बीच कुछ और धातुएँ भी चुपचाप अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। प्लैटिनम ने हाल के वर्षों में रिटर्न के मामले में सोना और चांदी को पीछे छोड़ दिया है। इसका प्रयोग आभूषण और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में बढ़ रहा है और यह सोने का एक सस्ता विकल्प बनता जा रहा है। वहीं तांबे की कीमतों में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। हरित ऊर्जा परियोजनाओं, इलेक्ट्रिक वाहनों और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए तांबा एक अनिवार्य धातु है। भारत सहित दुनिया भर में ऊर्जा संक्रमण की गति ने तांबे की मांग को और बढ़ाने का संकेत दिया है।

कुल मिलाकर सोना और चांदी की यह तेजी केवल बाजार का खेल नहीं बल्कि वैश्विक अस्थिरता और निवेशकों की मानसिकता का प्रतिबिंब है। जब दुनिया में भू-राजनीतिक तनाव और आर्थिक असुरक्षा गहराती है तो सुरक्षित पनाहगाह की तलाश बढ़ जाती है। आज यही हो रहा है। लेकिन इस चमक का दूसरा पहलू भी है—आम उपभोक्ता के लिए यह बोझ और चिंता का कारण बन रहा है। शादियों का बजट बिगड़ रहा है, छोटे निवेशक विकल्प खोजने को मजबूर हैं और आभूषण उद्योग मांग की गिरावट से जूझ रहा है। सोना और चांदी की यह चमक निवेशकों के लिए अवसर है, पर आम भारतीय परिवार के लिए परंपरा और आर्थिक मजबूरी के बीच संतुलन साधने की कठिन चुनौती बन गई है।

एच-1बी वीजा पर ट्रंप की महंगी दीवार

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच-1बी वीजा की नई आवेदक फीस को 100,000 डॉलर तक बढ़ाने का निर्णय लिया है। यह मौजूदा शुल्क से छह गुना अधिक है और इस कदम ने वैश्विक स्तर पर विशेष रूप से भारत में चिंता पैदा कर दी है। एच-1बी वीजा उच्च कौशल वाले पेशेवरों, विशेषकर आईटी क्षेत्र में काम करने वालों, के लिए प्रमुख साधन रहा है। चूँकि इन वीजा आवेदकों में 70 प्रतिशत से अधिक भारतीय होते हैं, इस फैसले का सबसे बड़ा असर भारत पर ही पड़ना तय है।

यह सिर्फ आर्थिक बोझ का सवाल नहीं है। भारत के विदेश मंत्रालय ने इसे 'मानवीय परिणामों' वाला कदम कहा है, क्योंकि हजारों भारतीय परिवारों का भविष्य इस वीजा पर टिका हुआ है। आँकड़े बताते हैं कि करीब 60% भारतीय एच-1बी वीजा धारकों की अमेरिका में सालाना आय 100,000 डॉलर से कम है। ऐसे में नई फीस उनकी सालाना आय से अधिक हो जाती है, जिससे कंपनियों के लिए भी विदेश से प्रतिभा लाना अलाभकारी सिद्ध होगा।

अमेरिका की तकनीकी कंपनियाँ भी इस फैसले से प्रभावित होंगी। सिलिकॉन वैली और अन्य तकनीकी केंद्र लंबे समय से भारतीय इंजीनियरों, डेटा वैज्ञानिकों और प्रोग्रामरों पर निर्भर हैं। यह प्रतिभा अमेरिका की नवाचार क्षमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का आधार रही है। अगर नीतिगत बाधाएँ इन्हें सीमित करती हैं तो अंततः अमेरिका ही वैज्ञानिक और आर्थिक कमी का शिकार होगा।

भारत के लिए यह स्थिति एक चेतावनी और अवसर दोनों है। चेतावनी इसलिए कि दशकों से भारतीय आईटी पेशेवर अमेरिकी बाजार पर निर्भर रहे हैं। अवसर इसलिए कि यह पल भारत को अपनी तकनीकी संरचना, स्टार्टअप इकोसिस्टम और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ने का संकेत देता है। भारत यदि अनुसंधान एवं विकास, पेटेंट, और वैश्विक तकनीकी सहयोग में निवेश बढ़ाए, तो अमेरिकी वीजा नीतियों की अनिश्चितता का असर सीमित किया जा सकता है।

इसके अलावा, भारत को एशिया, यूरोप और रूस जैसे नए बाजारों की खोज करनी होगी, जहाँ अभी तक अमेरिकी शैली की संरक्षणवादी सोच का प्रभाव नहीं पड़ा है। आईटी और डिजिटल सेवाओं का वैश्विक विस्तार भारतीय कंपनियों के लिए नई ऊँचाइयों का द्वार खोल सकता है।

ट्रंप प्रशासन का यह आदेश फिलहाल एक साल के लिए लागू है, लेकिन यह आशंका बनी हुई है कि इसे आगे बढ़ाया भी जा सकता है। इसलिए भारतीय नीति-निर्माताओं को अल्पकालिक संकट से आगे बढ़कर दीर्घकालिक रणनीति बनानी होगी। यदि भारत अपनी प्रतिभा को अपने ही देश में रोजगार, नवाचार और अवसर प्रदान कर पाता है, तो अमेरिकी नीति की यह "दीवार" अंततः भारत के लिए आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व की नई राह खोलेगी।

सऊदी—पाक रक्षा गठबंधन: एशियाई राजनीति का नया मोड़



सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हुआ 'स्ट्रैटेजिक म्यूचुअल डिफेंस एग्रीमेंट' महज औपचारिकता नहीं, बल्कि दशकों पुराने रिश्तों को कानूनी और सामरिक आधार देने वाला ऐतिहासिक कदम है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि किसी एक देश पर हमला होता है तो उसे दोनों पर हमला माना जाएगा। यह धारा नाटो के आर्टिकल-5 की याद दिलाती है और मध्य-पूर्व व दक्षिण एशिया की सुरक्षा राजनीति में नए समीकरण की ओर इशारा करती है।

पाकिस्तान के लिए यह समझौता खास महत्व रखता है। उसकी सैन्य क्षमता और परमाणु ताकत अब सऊदी की वित्तीय शक्ति के साथ मिलकर क्षेत्रीय दबदबा कायम करने की कोशिश करेगी। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार सीधे तौर पर परमाणु सहयोग की संभावना भले न हो, लेकिन यह गठजोड़ खाड़ी क्षेत्र और एशिया में शक्ति संतुलन को नया रूप दे सकता है।

भारत के लिए यह समझौता चिंता का विषय है। यदि सऊदी पाकिस्तान को हथियार, वित्तीय सहयोग या खुफिया मदद देता है तो भारत की सीमाई चुनौतियाँ बढ़ सकती हैं। यही कारण है कि भारत को अपनी सीमाई सुरक्षा, मिसाइल-रक्षा प्रणाली और त्वरित प्रतिक्रिया बलों की नियमित समीक्षा करनी होगी।

कूटनीतिक स्तर पर भारत ने संतुलित रुख दिखाया है। विदेश मंत्रालय ने समझौते के प्रभावों का अध्ययन करने की बात कही है, वहीं दूसरी ओर भारत—सऊदी रणनीतिक साझेदारी परिषद (एसपीसी) के माध्यम से ऊर्जा, व्यापार और रक्षा सहयोग को गहरा करने का प्रयास जारी है। सऊदी अरब भारत के लिए ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख स्रोत है, और रियाद भी इस आपूर्ति को स्थिर रखना चाहता है।

भारत को इस स्थिति में बहुआयामी कूटनीति अपनानी होगी। एक ओर चाबहार बंदरगाह के जरिए ईरान और मध्य एशिया तक पहुँच बनाई जा रही है, तो दूसरी ओर इजराइल, यूएई और ओमान के साथ सैन्य एवं खुफिया सहयोग मजबूत किया जा रहा है। ऊर्जा विविधीकरण और हिंद महासागर में नौसैनिक शक्ति का विस्तार भी भारत की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है।

घरेलू राजनीति में विपक्ष इस समझौते को भारत की सुरक्षा के लिए चुनौती बता रहा है और सरकार से ठोस नीति की मांग कर रहा है। यह दबाव सरकार को पश्चिम एशिया में अपने रिश्तों का विस्तार करने और संभावित जोखिमों का संतुलित समाधान खोजने के लिए प्रेरित करेगा। सऊदी अरब में रह रहे भारतीय प्रवासियों पर इसका कोई प्रतिकूल असर पड़ने की संभावना नहीं है। भारतीय श्रमिकों का योगदान सऊदी अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण है, और पाकिस्तान उसके विकल्प के रूप में यह श्रमिक बल उपलब्ध नहीं करा सकता। इस लिहाज से भारतीयों की स्थिति सुरक्षित मानी जा रही है।

चीन इस समझौते को सकारात्मक मान रहा है, क्योंकि इससे उसकी हथियार बिक्री और बेल्ट एंड रोड परियोजना को बल मिल सकता है। वहीं भारत के अन्य पड़ोसी देशों ने अब तक चुप्पी साध रखी है।

कुल मिलाकर, यह समझौता सिर्फ सऊदी—पाक रिश्तों तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य में हलचल पैदा करने वाला है। भारत को इस समय संयम, दूरदर्शिता और सामरिक तत्परता तीनों का परिचय देना होगा।

सोनम वांगचुक गिरफ्तार, जोधपुर जेल भेजे गए



लद्दाख को राज्य का दर्जा और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग का नेतृत्व कर रहे प्रसिद्ध शिक्षाविद् और पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को हाल ही में राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) के तहत गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्हें लद्दाख से दूर, राजस्थान की जोधपुर सेंट्रल जेल में कड़ी सुरक्षा के बीच स्थानांतरित किया गया है, जिसने देशव्यापी राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है।

वांगचुक की गिरफ्तारी, लेह में 24 सितंबर को हुए हिंसक प्रदर्शनों के कुछ दिनों बाद हुई, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई थी। प्रशासन और पुलिस ने उन पर दो मुख्य आरोप लगाए हैं:

1. हिंसा भड़काने का आरोप: प्रशासन का दावा है कि वांगचुक के 'भड़काऊ भाषणों' ने प्रदर्शनकारियों को उकसाया, जिसके बाद भीड़ ने सरकारी और राजनीतिक कार्यालयों पर हमला किया। लद्दाख पुलिस ने यहां तक आरोप लगाया है कि वांगचुक ने युवाओं को नेपाल और अरब स्प्रिंग जैसे हिंसक आंदोलनों से प्रेरित होने के लिए उकसाया।

2. वित्तीय अनियमितता: सरकारी सूत्रों ने यह भी दावा किया है कि वांगचुक के एनजीओ और निजी खातों में विदेशी चंदे के नियमों का उल्लंघन हुआ है और करोड़ों रुपये की संदिग्ध फंडिंग हुई है। कुछ पुलिस अधिकारियों ने तो उनकी पाकिस्तान यात्रा और संदिग्ध संपर्कों की जांच की बात भी कही है।

सोनम वांगचुक के समर्थक और विपक्षी दल इस कार्रवाई को 'राजनीतिक प्रतिशोध' बताकर इसकी कड़ी निंदा कर रहे हैं:

■ वांगचुक की पत्नी और सहयोगियों का कहना है कि उनकी मांगें संवैधानिक और वैध थीं, और उनका 15 दिन का अनशन पूरी तरह शांतिपूर्ण था। उनका आरोप है कि सरकार उनकी आवाज दबाने के लिए एनएसए जैसे सख्त कानून का दुरुपयोग कर रही है।

■ वांगचुक को उनके गृह क्षेत्र लद्दाख से इतनी दूर जोधपुर की हाई-सिक्योरिटी जेल में भेजना भी संदेह पैदा करता है। आलोचकों का मानना है कि यह कदम लद्दाख में आगे के विरोध प्रदर्शनों को रोकने और उन्हें उनके समर्थकों से अलग करने के लिए उठाया गया है।

■ समर्थकों का तर्क है कि हिंसा वांगचुक के कारण नहीं, बल्कि केंद्र सरकार द्वारा लद्दाखी लोगों की वर्षों पुरानी वैध मांगों को नज़रअंदाज़ किए जाने से उपजी युवाओं की हताशा का परिणाम थी।

यह मामला अब कानूनी और राजनीतिक लड़ाई में बदल गया है। जहां वांगचुक को देश के एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में देखा जाता है, वहीं उन पर लगे गंभीर आरोपों ने लद्दाख की संवेदनशील राजनीतिक स्थिति को और भी अधिक जटिल बना दिया है।

दिल की सुनने का समय

आज हमारे युवा दिल जिस तेजी से थम रहे हैं, वह सिर्फ एक खतरा नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत का मौका है। ये अब युवाओं व समाज के लिए चिंतन का विषय है कि कैसे हमारी जीवनशैली में छोटे-छोटे बदलाव करके हम इस चुनौती को पार कर सकते हैं। यह डरने का नहीं, बल्कि इस रोग को हराने का समय है। आइए, हम सब मिलकर इस खामोश महामारी को रोकें और अपनी युवा पीढ़ी को एक स्वस्थ और ऊर्जावान भविष्य देने में सहयोग करें।



राकेश गांधी

वरिष्ठ पत्रकार

कभी आपने सोचा है कि क्यों आज किसी शादी में नाचते हुए, जिम में पसीना बहाते हुए, या ऑफिस में काम करते हुए एक स्वस्थ और ऊर्जा से भरा युवा अचानक जमीन पर गिर पड़ता है? यह कोई फिल्मों का दृश्य नहीं, बल्कि एक भयानक हकीकत है। हर दिन, सोशल मीडिया पर ऐसे वीडियो सामने आते हैं जो हमें झकझोर कर रख देते हैं। ये वीडियो सिर्फ चौंकाने वाले नहीं हैं, बल्कि ये हमारी सामूहिक लापरवाही और खामोशी का एक आईना हैं। ये एक डराने वाली चेतावनी जरूर हैं, पर हमें याद भी दिला रही है कि हम अपनी सबसे कीमती पूंजी 'अपनी युवा पीढ़ी' को बचाने में कहीं न कहीं कोई कमी छोड़ रहे हैं।

भारत, जो अपनी युवा आबादी पर गर्व करता है, आज उसी युवा शक्ति को समय से पहले खोने के जोखिम का सामना कर रहा है। लेकिन यह तस्वीर सिर्फ खतरे की नहीं है, बल्कि एक गहरी पुकार है, एक पुकार जो हमें जगा रही है, हमें अपने जीवन को नए सिरे से सोचने पर मजबूर कर रही है।

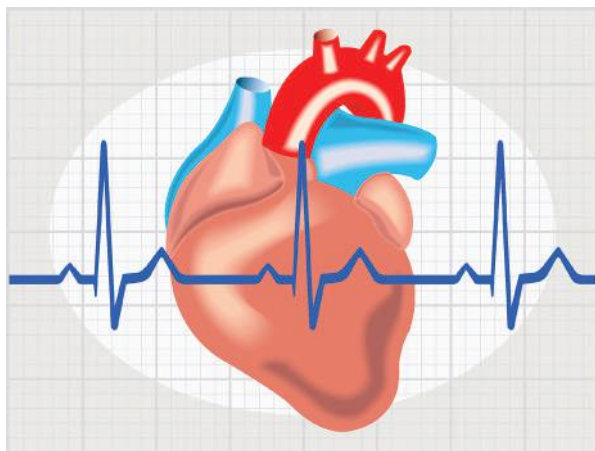


आंकड़ों में नजर आती एक चेतावनी, डरे नहीं

भारत में हृदय रोग अब महामारी की तरफ बढ़ रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) और स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़े बेहद परेशान करने वाले हैं। वर्ष 2024 में देश में लगभग 8.9 लाख मौतें सिर्फ हृदय रोगों से हुईं। यह कुल मौतों का लगभग 28 प्रतिशत हिस्सा है। लेकिन सबसे ज्यादा दिल दहला देने वाली बात यह है कि इनमें से 35 प्रतिशत लोग 40 साल से कम उम्र के थे। यह आंकड़ा हमें डराने के लिए नहीं, बल्कि हमें यह बताने के लिए है कि अब समय आ गया है कि हम जाग जाएं। पिछले तीन सालों का रुझान भी यही दिखाता है कि हर साल मौतों में 8-10 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो रही है। यह दिखाता है कि यह समस्या अब हमारे दरवाजे तक आ चुकी है। यह समय अब हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने का नहीं रहा।

राजस्थान जैसे राज्य भी इस चुनौती से अछूते नहीं हैं। 2024 में यहां हृदय रोग से 35,200 मौतें दर्ज हुईं, जिनमें जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर जैसे शहरी क्षेत्रों में सबसे ज्यादा मामले सामने आए। यह एक गंभीर चुनौती है, लेकिन इसका सामना करने के लिए हमारे पास जागरूकता और इच्छाशक्ति जैसे सबसे मजबूत हथियार हैं। यह लड़ाई किसी और की नहीं, हमारी अपनी जिंदगी और हमारे अपनों की जिंदगी की है। ये आंकड़े डराने के लिए नहीं, बल्कि हमें समय रहते जागरूक करने व संभलने के लिए हैं।

क्यों बदल गई है दिल की धड़कन?



इस गंभीर समस्या की जड़ें हमारी बदलती जीवनशैली में हैं। एक समय था जब हार्ट अटैक को 'बुढ़ापे' की बीमारी माना जाता था। पर आज यह सच बदल गया है। विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं की मानें तो इसके पीछे कई कारक एक साथ काम कर रहे हैं, जिन्हें समझना और बदलना हमारे हाथ में है।

■ गलत खान-पान का जाल

आज की युवा पीढ़ी का आहार पूरी तरह से बदल गया है। तुरत-फुरत में काम निपटाने के चक्कर में, हम जंक फूड, प्रोसेस्ड फूड और तैलीय भोजन को अपना चुके हैं। इन खाद्य पदार्थों में ट्रांस-फैट और सोडियम की मात्रा बहुत ज्यादा होती है, जो कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर को बढ़ाकर दिल पर सीधा असर डालते हैं। हम अपने हाथों से ही अपनी थाली में बीमारियों को परोस रहे हैं। लेकिन याद रखिए, हमारे पारम्परिक भारतीय व्यंजन, ताजे फल और हरी सब्जियां दिल को स्वस्थ रखने का सबसे आसान और स्वादिष्ट तरीका हैं।

■ नींद की कमी और मानसिक बोझ

देर रात तक जागना, घंटों स्क्रीन पर बिताना और सुबह देर से उठना हमारी प्राकृतिक बायोलॉजिकल क्लॉक को बिगाड़ रहा है। शरीर को पर्याप्त आराम न मिलने से तनाव के हार्मोन, जैसे कोर्टिसोल, का स्तर बढ़ जाता है, जिससे दिल पर दबाव बढ़ता है। हमारा दिमाग लगातार काम कर रहा है, पर हमारा शरीर आराम नहीं पा रहा। यह असंतुलन हमें अंदर से खोखला कर रहा है।

■ शारीरिक निष्क्रियता

वर्तमान जीवनशैली में शारीरिक मेहनत लगभग खत्म हो गई है। लोग घंटों तक बैठे रहते हैं, चाहे वह ऑफिस हो या घर। व्यायाम की कमी से शरीर की मेटाबॉलिक प्रक्रिया धीमी हो जाती है, जिससे मोटापा, ब्लड शुगर और हाई ब्लड प्रेशर जैसी समस्याएं पैदा होती हैं। हम खुद को फिट मानते हैं, पर चिंतन का विषय ये है कि क्या हम सच में फिट हैं?

■ तनाव एक अदृश्य दुश्मन

आज की तेज रफ्तार से भागती जिंदगी में तनाव हर किसी का हिस्सा बन चुका है। ऑफिस का दबाव, परिवार की जिम्मेदारियां, आर्थिक परेशानियां और भविष्य की अनिश्चितताएं... ये सभी हमारे दिल पर चुपचाप बोझ डालते रहते हैं। लोग अक्सर तनाव को बहुत ही हल्के में लेते हैं, लेकिन यह दिल की सेहत को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाता है।

आर्थिक और सामाजिक बदलाव की राह

हृदय रोग सिर्फ एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और आर्थिक चुनौती भी है। युवा आबादी के अचानक बीमार पड़ने या मृत्यु का सीधा असर उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। एक परिवार का कमाने वाला सदस्य जब चला जाता है, तो पूरा परिवार आर्थिक संकट में आ जाता है। आज जब एकाकी परिवार में लोग बसर करने लगे हैं, ऐसे हालात में पड़ोसियों से मदद की उम्मीद करना बेमानी लगती है।

इससे केवल एक परिवार या समाज ही नहीं, देश की अर्थव्यवस्था पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। युवा देश के विकास की रीढ़ होता है। यदि यह युवा वर्ग अस्वस्थ होगा या अपनी जान गंवाएगा, तो देश की उत्पादकता और कार्यक्षमता में भारी गिरावट आएगी। विशेषज्ञ कहते हैं कि यदि हृदय रोग की यह रफ्तार जारी रही, तो आने वाले पांच वर्षों में यह समस्या भारत की आर्थिक प्रगति पर प्रतिकूल असर डाल सकती है।

समाधान हमारे हाथों में



यह सच है कि सरकार और चिकित्सा व्यवस्था की अपनी भूमिका है, लेकिन सबसे बड़ा बदलाव हमारे खुद के प्रयासों से ही आएगा। हमें यह समझना होगा कि रोकथाम ही सबसे बड़ा हथियार है।

■ स्वास्थ्य जांच

30 वर्ष की उम्र के बाद हर व्यक्ति को साल में कम से कम एक बार ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर की जांच करानी ही चाहिए। यह शुरुआती चेतावनी संकेतों को पकड़ने में मदद करेगा।

■ संतुलित आहार

जंक फूड, तैलीय और प्रोसेस्ड फूड से दूरी बनाना जरूरी है। अपने आहार में फल, हरी सब्जियां, और दालों को शामिल करना चाहिए।

■ व्यायाम और शारीरिक गतिविधि

रोजाना 30-40 मिनट की तेज वॉक, जॉगिंग या योग करने की आदत डालनी ही होगी। यह न सिर्फ दिल को मजबूत करेगा, बल्कि तनाव को भी कम करेगा।

■ तनाव प्रबंधन

योग, प्राणायाम और ध्यान जैसी गतिविधियां तनाव को कम करने में निश्चित तौर पर मदद करती हैं। इसके अलावा, हॉबी अपनाना, दोस्तों से बात करना और पर्याप्त नींद लेना भी अत्यंत जरूरी है।

■ नशे से दूरी

धूम्रपान और शराब जैसी आदतों से पूरी तरह से परहेज करना होगा। जीवन को व्यवस्थित व स्वच्छ रखना होगा।



एक नई शुरुआत का आह्वान

■ भारत में बढ़ते हृदय रोग एक चेतावनी जरूर हैं, लेकिन यह एक नई शुरुआत का मौका भी है। यह हमें सिखाता है कि हमें अपनी सेहत को सबसे ऊपर रखना होगा। यह सिर्फ डॉक्टरों या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

■ यह लेख आपको डराने के लिए नहीं, बल्कि आपको जागृत करने और प्रेरित करने के लिए है। ऐसे विषम हालात में हमें सभी को मिलकर इस चुनौती का सामना करना होगा और अपनी युवा शक्ति को इस खामोश महामारी से बचाना होगा। क्योंकि दिल धड़केगा, तभी जिंदगी चलेगी।

जान है तो जहान है

■ हमारी भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि 'जान है तो जहान है'। पैसा, रुतबा और सफलता पाने की होड़ में हम अपनी सेहत को नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन यह सच है कि अगर हमारा शरीर और दिल स्वस्थ नहीं है, तो यह सारा जहान और इसकी सारी दौलत बेमानी है। यह समय है जब हमें यह समझना होगा कि सबसे बड़ा धन हमारी सेहत है।

■ युवाओं के लिए यह बात और भी जरूरी हो जाती है कि वे इस मूल मंत्र को अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएं और अपने दिल को सबसे ऊपर रखें। किसी भी समस्या या चिंता को जड़ से खत्म करने के लिए, सबसे पहले हमें जिंदा और स्वस्थ रहना होगा। अगर हम ही नहीं रहेंगे तो इन चिंताओं का क्या मोल? जो हमारे बस में नहीं है, उसे नजरअंदाज करना सीखना होगा, ताकि दिल को हल्का रख सकें। बहुत ज्यादा दिल को भारी रखने का कोई औचित्य नहीं है।

दिल की धड़कन से जुड़ने का रास्ता है योग-मेडिटेशन

■ आज की इस तेज रफ्तार दुनिया में, जहां हर तरफ शोर है, हमारा दिल अक्सर अकेला महसूस करता है। हम बाहर की दुनिया को जीतने की दौड़ में इतने मशगूल हो जाते हैं कि अपने अंदर की आवाज सुनना ही भूल जाते हैं। यहीं पर योग और मेडिटेशन हमारे सबसे सच्चे साथी बनकर सामने आते हैं। ये सिर्फ शारीरिक क्रियाएं नहीं, बल्कि अपने दिल और दिमाग से फिर से जुड़ने का एक खूबसूरत तरीका हैं।

■ जब हम आंखें बंद करके कुछ पल के लिए ध्यान लगाते हैं, तो हम दुनिया के शोर को पीछे छोड़कर अपने दिल की धड़कन को सुनते हैं। यह पल हमें याद दिलाता है कि सबसे कीमती रिश्ता हमारे खुद के साथ है। योग के आसन और प्राणायाम हमें सिखाते हैं कि कैसे एक गहरी सांस लेकर हम तनाव को बाहर निकाल सकते हैं और अपने दिल को हल्का कर सकते हैं। ये प्राचीन पद्धतियां हमें सिर्फ शारीरिक रूप से ही मजबूत नहीं बनातीं, बल्कि हमें मानसिक शांति भी देती हैं, जो हमारे दिल को हर तरह के बोझ से बचाती है। ऐसे में हमें अपनी जिन्दगी के अनमोल समय में से कुछ महत्वपूर्ण पल अपने लिए निकालकर अपने दिल को फिर से स्वस्थ तरीके से धड़कने का मौका देना होगा।

राजस्थान के प्रमुख शहरों का हृदय रोग डेटा (2024)

शहर	मौतें	शहर	मौतें	शहर	मौतें
जयपुर	7,800	जोधपुर	4,300	उदयपुर	3,900
कोटा	3,600	बीकानेर	2,800	अजमेर	2,500

नोट: ये आंकड़े स्वास्थ्य विभाग की वार्षिक रिपोर्ट पर आधारित हैं।

स्वस्थ हृदय के लिए बदलें आदतें

भारत में अचानक कार्डियक अरेस्ट और हृदय रोग से होने वाली मौतों की बढ़ती संख्या ने हर वर्ग को चिंतित कर दिया है। खासतौर पर युवाओं में 30-40 वर्ष की उम्र में हार्ट अटैक और कार्डियक अरेस्ट के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। राजस्थान में भी यह स्थिति गंभीर होती जा रही है। ऐसे में जरूरी है कि पाठकों तक सही जानकारी और बचाव के उपाय पहुंचें। इसी उद्देश्य से वरिष्ठ पत्रकार राकेश गांधी ने ज्ञायडस हॉस्पिटल अहमदाबाद के वरिष्ठ कार्डियक एवं हार्ट ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. संदीप अग्रवाल से बातचीत की। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश:

■ **सवाल:** हाल के वर्षों में युवाओं में अचानक कार्डियक अरेस्ट और हार्ट अटैक के मामले इतनी तेजी से क्यों बढ़े हैं?



डॉ. संदीप अग्रवाल

■ **डॉ. अग्रवाल:**

आजकल यह माना जाता है कि युवाओं में अचानक हृदय संबंधी समस्याएं बढ़ने लगी हैं, लेकिन हाल ही में केएम हॉस्पिटल के प्रसिद्ध पैथोलॉजिस्ट डॉ. प्रदीप ने इस विषय में बताया कि हम पिछले 10-15 सालों से युवा

मरीजों में हृदय में ब्लॉकेज की प्रक्रिया में वृद्धि देख रहे हैं, और इसके कई कारण हो सकते हैं। जैसे कि गतिहीन जीवनशैली (Sedentary Lifestyle)। कोविड के बाद इंटरनेट पर बच्चों का या युवा लोगों का निर्भरता बहुत बढ़ गई है, और इसके कारण शारीरिक श्रम और शारीरिक गतिविधियां काफी कम हो गई हैं। इसके अलावा, हमारे खाने-पीने के तौर-तरीकों में काफी बदलाव आया है। आजकल ऐसा माना जाता है कि हमारे युवा मरीजों या युवा लोगों में मधुमेह और रक्तचाप की काफी समस्याएं पाई जाती हैं, जो पहले के जमाने में बुजुर्गों में अधिक देखी जाती थीं। ये दो स्थितियां ऐसी हैं जिनके कारण हृदय से संबंधित रोगों का जोखिम बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, जागरूकता बढ़ने के कारण भी अब हृदय से संबंधित समस्याएं काफी जल्दी पता चल जाती हैं और कुछ लक्षण होने पर समय पर उपचार लेने की वजह से कई सारी समस्याएं टल भी जाती हैं। इसलिए, हार्ट अटैक युवाओं में अचानक से नहीं बढ़े हैं। ये पिछले 15-20 सालों से अपने रहने-सहने में बदलाव, अपनी दिनचर्या में बदलाव और जो हमारी मेडिकल कंडीशन्स हैं, या धूम्रपान व तम्बाकू का सेवन बढ़ने से ये दिक्कतें अधिक बढ़ी हैं।

■ **सवाल:** क्या कोरोना महामारी के बाद से हृदय रोग के मामलों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी देखी गई है?

■ **डॉ. अग्रवाल:** कोरोना महामारी के बाद निश्चित रूप से हम लोग देख रहे हैं कि हार्ट अटैक के मरीज बढ़ गए हैं, खासकर कम उम्र वाले मरीज। इसके कारण स्पष्ट नहीं हैं। शायद ये जीवनशैली में बदलाव के कारण ही बढ़े हैं, या फिर ऐसा भी देखने में आया है कि कोरोना की वजह से हमारा रक्त का गाढ़ापन बढ़ सकता है और क्लॉटिंग होने का जोखिम बढ़ जाता है। अगर ये क्लॉट हृदय की धमनियों में बनते हैं, तो ये हार्ट अटैक की स्थिति पैदा कर सकते हैं। तो यह निश्चित रूप से कहना मुश्किल है कि कोरोना का सीधे तौर पर हार्ट अटैक से संबंध है या नहीं, लेकिन निश्चित रूप से जो हम प्रैक्टिस में देखते हैं, खासकर जिन युवा मरीजों को कोरोना हुआ था, उन मरीजों में हार्ट अटैक का जोखिम निश्चित रूप से बढ़ जाता है।

■ **सवाल:** युवाओं के बीच बढ़ते हृदय समस्याओं के पीछे मुख्य कारण क्या हैं – खानपान, तनाव या कुछ और?

■ **डॉ. अग्रवाल:** युवाओं में हृदय समस्याओं के बढ़ने का मुख्य कारण हमारी जीवनशैली में बदलाव ही है। पहले के जमाने में जो शारीरिक श्रम, व्यायाम, शारीरिक खेल युवा पीढ़ी करती थी, अब वह काफी कम हो गया है। इसके अलावा, हमारा जो खानपान है वह काफी पश्चिमीकृत हो गया है, जिसमें वसायुक्त (Fatty) और तली हुई चीजों का उपयोग काफी बढ़ गया है। जंक फूड का उपयोग काफी बढ़ गया है। तो मुख्य कारणों में हमारी गतिहीन जीवनशैली के अलावा मोटापा और अनियमित तला हुआ खाना है। इसके अलावा, एक चीज हमारे देश में हम देखते हैं कि कम उम्र में मधुमेह और उच्च रक्तचाप की समस्या काफी देखी जाती है। अगर ये दोनों अनडिटेक्टेड रह जाते हैं, तो 5-10 साल में ये हृदय की धमनियों को नुकसान पहुंचाते हैं। इसलिए जरूरी है कि नियमित जांच करानी चाहिए, खासकर 40 साल की उम्र के बाद। बाकी कारण जो हैं, अगर तंबाकू का सेवन या सिगरेट धूम्रपान कोई करता है, तो उसको निश्चित रूप

से हृदय की परेशानी होने की आशंका बढ़ जाती है। तनाव हमारे जीवन का एक हिस्सा है और इसको पूरी तरह से खत्म करना लगभग असंभव है, लेकिन तनाव प्रबंधन सीखना बहुत जरूरी है। यह किसी भी प्रकार से किया जा सकता है, जैसे योग, ध्यान या खेलों के जरिए। हम कुछ समय अपनी सेहत के लिए निकाल सकते हैं। पारिवारिक इतिहास (Family History) हृदय रोग के लिए एक काफी महत्वपूर्ण कारण माना जाता है, और जिन मरीजों का पारिवारिक इतिहास बहुत मजबूत है, जिनके माता-पिता में या एक करीबी परिवार में, जैसे भाई-बहनों में हृदय की समस्या हुई हो, उनको और ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत होती है। इन मरीजों में काफी कम उम्र से ही नियमित स्वास्थ्य जांच करने से जल्दी पता लगाया जा सकता है और बचाव किया जा सकता है।

■ **सवाल:** कार्डियक अरेस्ट से पहले कौन से चेतावनी संकेत दिखाई देते हैं, जिन्हें लोग अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं?

■ **डॉ. अग्रवाल:** कई बार मरीजों को हार्ट अटैक के सामान्य लक्षण नहीं होते हैं। सामान्य लक्षणों में सीने में दर्द होना, घबराहट होना, घबराहट के साथ पसीना आना, ये सामान्य हार्ट अटैक के या हृदय के लक्षण होते हैं। कई मरीजों को, खासकर मधुमेह के मरीजों को, ये लक्षण न होकर उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो सकती है, खासकर चढ़ाई या सीढ़ियां चढ़ने से। या फिर सीने में दर्द न होकर पीठ में दोनों कंधों के बीच में दर्द हो सकता है। कई बार ये दर्द जबड़े में हो सकता है या फिर कान में हो सकता है। तो ये लक्षण कभी-कभी नजरअंदाज हो जाते हैं। काफी मरीजों को गैस्ट्रिक लक्षण ज्यादा होते हैं। अगर मैं सामान्य सलाह दूं, तो कोई भी लक्षण जिससे आपकी चिंता बढ़ती हो या आपको ऐसा लगता हो कि ये ठीक नहीं है, तो आपको डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए और एक बार बुनियादी जांच (Basic Test) हो जाए तो उससे थोड़ी स्पष्टता लाना आसान होता है कि जो भी आपके लक्षण हैं, वे हृदय से संबंधित हैं या नहीं। युवा मरीजों में अगर ऐसे कोई लक्षण हों, तो खासकर उसको भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, यह मानकर कि युवा मरीजों में हार्ट अटैक नहीं होते हैं।

- **सवाल:** बचाव के लिए कितनी उम्र से हार्ट चेकअप करवाना जरूरी है?
- **डॉ. अग्रवाल:** बचाव के लिए जीवनशैली में बदलाव करना बहुत जरूरी है। कम उम्र से ही शारीरिक श्रम और खेल नियमित रूप से करना चाहिए। इसके अलावा, अगर आपकी पारिवारिक इतिहास (Family History) है, तो कम उम्र से, सामान्यतः 30-35 की उम्र से, एक बार नियमित जांच के लिए डॉक्टर के पास जरूर जाना चाहिए। इसके अलावा, अगर आपकी कोई आदतें हैं, जैसे कि तंबाकू या सिगरेट धूम्रपान, उसको निश्चित रूप से बंद करना चाहिए। इसके अलावा, खाने-पीने पर ध्यान रखने की जरूरत है और अपनी ऊंचाई के अनुसार वजन को सही सीमा में रखना जरूरी है।
- **सवाल:** पाठकों के लिए आपका क्या संदेश होगा जिससे वे दिल की बीमारियों से सुरक्षित रह सकें?
- **डॉ. अग्रवाल:** मेरा संदेश यही होगा कि पहले के जमाने में हमारा मानना ऐसा था कि हार्ट अटैक 60-65 की उम्र के ऊपर ही होता था, लेकिन आजकल जैसा हम देख रहे हैं कि उम्र का और हार्ट अटैक का कोई संबंध नहीं बचा है। यहां तक कि युवा आयु वर्ग में भी हार्ट अटैक अचानक हो सकते हैं, जिसकी वजह से किसी की जान जा सकती है। इसलिए अगर आपको उच्च रक्तचाप है, मधुमेह है, तो उसको नियंत्रण में रखना बहुत जरूरी है। अगर आप धूम्रपान करते हैं या आप तंबाकू का इस्तेमाल करते हैं, तो उन्हें बंद करना जरूरी है। अगर आप अनियमित खाना खा रहे हैं, वजन ज्यादा है, तो आपको जीवनशैली में बदलाव करना है, आहार पर नियंत्रण करना है और नियमित व्यायाम करने की जरूरत है। अगर हम बुनियादी रोकथाम योग्य कारकों का ख्याल रखेंगे, तो मैं यह मानता हूँ कि हमारा हार्ट अटैक का जोखिम काफी नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी तरह के संकेतों को नजरअंदाज न करके उनका पूरी तरह से जांच कराएं, जिससे कोई भी ब्लॉकेज आपकी शुरुआती अवस्था में पता लगाकर उसका उचित उपचार हो सके।

सही समय पर सीपीआर से बच सकती है जान



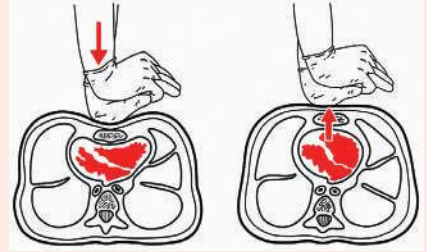
डॉ. साकेत गोयल
हृदयरोग विशेषज्ञ, कोटा

विश्व में रोज हज़ारों व्यक्ति किसी भी कारणवश आकस्मिक मृत्यु का शिकार होते हैं। ये समझा जाता है की अगर इन सबको समय पर सीपीआर मिल जाए तो इनमें से 80 प्रतिशत को जीवित अस्पताल पहुंचाया जा सकता है और इनमें से एक तिहाई सकुशल घर भी वापस जा सकते हैं। इसीलिए हमें सीपीआर अवश्य सीखना चाहिए। यह हमारे घर, कार्यस्थल या समाज में कभी भी, कहीं भी किसी का जीवन बचा सकता है।

सीपीआर - कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हमें व्यक्ति के दिल और फेंफड़ों का कार्य कर, मस्तिष्क को रक्त का संचार देना है। किसी भी आपात स्थिति में अगर कोई व्यक्ति बेहोश हो जाता है तो उसे होश में लाने की प्रक्रिया ही सीपीआर है। यह आपात स्थिति हार्ट-अटैक, रोड दुर्घटना, इलेक्ट्रिक शॉक, डूबना, दम घुटना आदि कुछ भी हो सकती है।

इसमें रोगी को उसके सीने के बीच के हड्डी पर हाथ रखकर दोनों हाथों से जोर-जोर से पुश किया जाता है, ताकि व्यक्ति का हृदय वापस चलना शुरू हो जाए यही सीपीआर होता है। ऐसे में सबसे पहले आपको यह सीख लेना भी जरूरी है कि सामने वाले व्यक्ति को किस प्रकार सीपीआर देना है और ना आप कुछ गलत कर बैठ सकते हैं।

सीपीआर देने का तरीका



तुरंत एम्ब्युलेंस बुलाएं, ताकि एमरजेंसी रूम तक पहुंचने से पहले चिकित्सीय कर्मचारी मरीज को जीवन रक्षक उपचार देना शुरू कर सकें।

- व्यक्ति को किसी कठोर सतह पर लेटाएं
- सीपीआर की विधि बेहोश व्यक्ति के दाहिनी तरफ से करें
- दोनों हाथों के उंगलियों को एक दूसरे में फंसाकर हथेलियों के तरफ छाती के मध्य भाग पर रखें
- 100-120 प्रति मिनट की गति से हाथों को छाती पर 5 सेन्टीमीटर की गहराई तक जोर से दबाएं
- इसके साथ-साथ आप उस व्यक्ति को मुंह से अपना मुंह लगाकर उसके शरीर में सांस फूँके।
- कृपया इस गति को बीच में ही न रोके, क्योंकि एक मिनट के विलंब की वजह से बचने की संभावना 10 प्रतिशत प्रति मिनट से कम हो सकती है
- जल्द से जल्द बेहोश व्यक्ति को नजदीकी अस्पताल में ले जाएं
- इस तरह तुरंत सीपीआर से मरीज के जीवित रहने की संभावना दुगुनी या तिगुनी हो जाती है।
- आजकल अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन द्वारा पारंपारिक चेस्ट कॉम्प्रेसन और माउथ-टू-माउथ ब्रीदिंग देने के बजाय केवल हाथों से सीपीआर देने की सिफारिश की जाती है। यह माना जाता है की केवल सही तरीके से चेस्ट कॉम्प्रेसन करने पर 80-90 प्रतिशत सीपीआर प्रक्रिया पूरी हो जाती है। अपने एक जीवन में किसी एक व्यक्ति को भी जीवन देना, आपके लिए एक सौभाग्य की बात है।

हल्के में न ले शुरुआती लक्षणों को



युवाओं में हृदय रोग बढ़ने का सबसे बड़ा कारण लाइफस्टाइल डिसऑर्डर है। स्क्रीन टाइम बढ़ने और शारीरिक सक्रियता घटने से उनकी धमनियां समय से पहले ही कठोर हो रही हैं। यह प्रीमेच्योर हार्ट डिजीज का सबसे बड़ा कारण है। लम्बे समय तक तनाव और खराब खानपान भी एक बड़ी वजह है, जिससे 30 की उम्र में ही धमनियों में अवरोध (ब्लॉकेज) बनने लगता है। युवा अक्सर चेतावनी संकेतों को नजरअंदाज कर देते हैं। सीने में हल्का दर्द, सांस फूलना, थकान या पसीना आना हार्ट डिजीज के शुरुआती लक्षण हो सकते हैं। इन्हें हल्के में नहीं लेना चाहिए। यदि समय रहते चेतना और अनुशासन अपनाया जाए तो इन खतरों से काफी हद तक बचा जा सकता है।

- डॉ. अनिल शर्मा, एमडी मेडिसिन, जयपुर



‘दिल’ के लिए जरूरी सही ‘ईंधन’



मधुलिका सिंह ✍
वरिष्ठ पत्रकार

आजकल युवाओं में बढ़ रहे कार्डियक अरेस्ट का कारण हमारी अस्वस्थ जीवनशैली और खानपान है। हमारे लिए ये जानना बहुत जरूरी हो गया है कि कैसे हमारी थाली में रखा हर निवाला हमारे दिल को प्रभावित करता है, और आयुर्वेद हमें एक स्वस्थ हृदय के लिए क्या सलाह देता है।



आज के दौर में हृदय रोग और कार्डियक अरेस्ट अब केवल बुजुर्गों तक सीमित नहीं रह गए हैं। यह एक चौंकाने वाली सच्चाई है कि 12-15 साल के स्कूली बच्चों से लेकर 25-30 वर्ष के युवा तक इसका शिकार हो रहे हैं। यह एक गंभीर चेतावनी है जो हमारी आधुनिक जीवनशैली और, सबसे बढ़कर, हमारे खानपान की आदतों की ओर इशारा करती है। इस आलेख में हम इसी बात पर गहराई से नज़र डालेंगे कि कैसे हमारी थाली में मौजूद भोजन और हमारी दिनचर्या अनजाने में हमारे दिल को कमजोर कर रही है, और आयुर्वेद हमें कैसे सही रास्ता दिखा सकता है।

थाली और दिल का गहरा रिश्ता

डाइटीशियन डॉ. रूही जहीर के अनुसार, हमारी थाली में रखा हर निवाला दिल की धड़कन को प्रभावित करता है। आजकल छोटे बच्चों व युवाओं में भी हार्ट अटैक, स्ट्रोक और अचानक कार्डियक अरेस्ट जैसी स्थितियां देखने को मिल रही हैं। इनका मूल कारण अस्वस्थ जीवनशैली (जैसे जंक फूड, मोबाइल/टीवी पर ज्यादा समय, व्यायाम की कमी), अनियमित दिनचर्या, अत्यधिक मानसिक तनाव, पढ़ाई का दबाव, मोटापा, मधुमेह और हाई बीपी जैसी समस्याएं हैं।

हृदय रोगों से बचाव के लिए आहार में ये बदलाव जरूरी हैं

सात्विक और पोष्टिक आहार : बच्चे व बड़े सभी सात्विक आहार लें, जिसमें दूध, घी, फल, हरी सब्जियां, दलिया और मूंग दाल शामिल हों।

हानिकारक खाद्य पदार्थों से दूरी : जंक फूड, पैकेज्ड फूड, कोल्ड-ड्रिंक्स, ज्यादा तला-भुना और मैदा से बने भोजन का सेवन बिल्कुल कम करें।

हृदय-हितकर फल : रोजाना आंवला, द्राक्ष (अंगूर), अनार और सेब जैसे फल जरूर खाएं।

भोजन का दबाव नहीं : भोजन हल्का और पचने योग्य हो, बच्चों पर ज्यादा खाने का दबाव न डालें।



आयुर्वेद के अनुसार हृदय-हितकारी जीवनशैली



विशेष आयुर्वेदिक उपाय और सुझाव अर्जुन की छाल

यह आयुर्वेद में हृदय का श्रेष्ठ रसायन है। इसका नियमित सेवन (काढ़ा या चूर्ण) हृदय के लिए बहुत उत्तम है।

अन्य उपाय

आंवला, लहसुन और द्राक्षा का नियमित प्रयोग करें। शतावरी और अश्वगंधा तनाव और हृदय की कमजोरी में उपयोगी हैं। हफ्ते में 1 दिन फलाहार/उपवास करके हृदय और पाचन को विश्राम दें।

बच्चों के लिए विशेष

आंवला, शहद और हल्का च्यवनप्राश (डॉक्टर की सलाह से) बच्चों के हृदय और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए अच्छा है। ताजा दूध में आधा चम्मच घी और 1 इलायची मिलाकर पीना मस्तिष्क और हृदय को बल देता है।

आहार नियम

समय पर भोजन करें। भोजन को शांति और प्रसन्नता से ग्रहण करें। नियमित गर्म जल या हर्बल जल (जीरा, अजवाइन, मेथीदाना युक्त) पिएं।

हमारे शरीर का दिल उसका इंजन है। जिस तरह गाड़ी के इंजन को सही ईंधन की जरूरत होती है, उसी तरह हमारे दिल को भी स्वस्थ रहने के लिए सही खानपान और जीवनशैली की आवश्यकता है। उम्र चाहे कोई भी हो, एक संतुलित थाली, पर्याप्त व्यायाम और मानसिक शांति ही वह ईंधन है जो दिल को सुचारू रूप से चलाता है। याद रखें, सिर्फ 4 मिनट में सीपीआर देकर किसी की जान बचाई जा सकती है।

आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी डॉ. इकबाल खान गौरी के अनुसार, आयुर्वेद हृदय रोगों की रोकथाम के लिए हल्का, सात्विक, ताजे फल-सब्जियों, साबुत अनाज, दालें और हृदय-हितकारी औषध द्रव्यों का सेवन करने की सलाह देता है।

1. आहार और पोषण

हितकर आहार : जौ (यव), गेहूं (गोधूम), पुराने चावल (शाली), मूंग दाल, मसूर दाल, हरी सब्जियां (परवल, लौकी, तोरी, करेला, पालक, मेथी) और ताजे फल (आंवला, अनार, सेब, अमरूद, द्राक्षा) हृदय के लिए उत्तम हैं।

* **तेल और घी :** अल्प मात्रा में गोघृत, तिल का तेल, सरसों का तेल और अलसी का तेल उपयोग करें।

* **मसाले :** लहसुन, अदरक, हल्दी, दालचीनी, अजवाइन और काली मिर्च रक्त शुद्धि और कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण में सहायक होते हैं।

* **अहितकर आहार :** अत्यधिक तैलीय, तले-भुने, मसालेदार और फास्ट-फूड से बचें। अत्यधिक नमक, चीनी, मैदा और जंक फूड भी हानिकारक हैं। मांस, ज्यादा दही और बहुत भारी भोजन का सेवन न करें।

2. दिनचर्या और विहार

ब्राह्ममुहूर्त जागरण : सुबह सूर्योदय से पहले उठने से मन प्रसन्न रहता है और रक्त संचार अच्छा होता है।

नियमित व्यायाम : रोजाना 30-45 मिनट हल्का व्यायाम (पैदल चलना, योगासन) करें। बच्चों को खुले मैदान में खेलने दें, केवल मोबाइल/टीवी पर न रखें। दिन भर बैठने की बजाय शारीरिक गतिविधियां जरूरी हैं।

योगासन और प्राणायाम : भुजंगासन, शवासन, ताड़ासन, त्रिकोणासन, सूर्य नमस्कार जैसे आसन और अनुलोम-विलोम, भ्रामरी व नाडीशोधन जैसे प्राणायाम दिल व फेफड़ों को मजबूत बनाते हैं।

अभ्यंग (तेल मालिश) : सप्ताह में 2-3 बार तिल तेल/सरसों तेल से शरीर की मालिश रक्त प्रवाह को सुधारती है।

सोने की आदतें : रात को समय पर सोएं (6-8 घंटे की नींद जरूरी है)। भारी भोजन के बाद तुरंत न लें और दिन में सोने की आदत से बचें।

3. मानसिक स्वास्थ्य... तनाव, क्रोध और चिंता हृदय रोगों के प्रमुख कारण हैं। इनसे बचने के लिए प्रतिदिन 10-15 मिनट ध्यान करें। मधुर संगीत सुनें, सकारात्मक पुस्तकों का अध्ययन करें और अच्छे संग का महत्व समझें।

दिल पर भारी घर का तनाव

‘जब तक अहंकार टूटता है, तब तक अक्सर सबकुछ बिखर चुका होता है...’

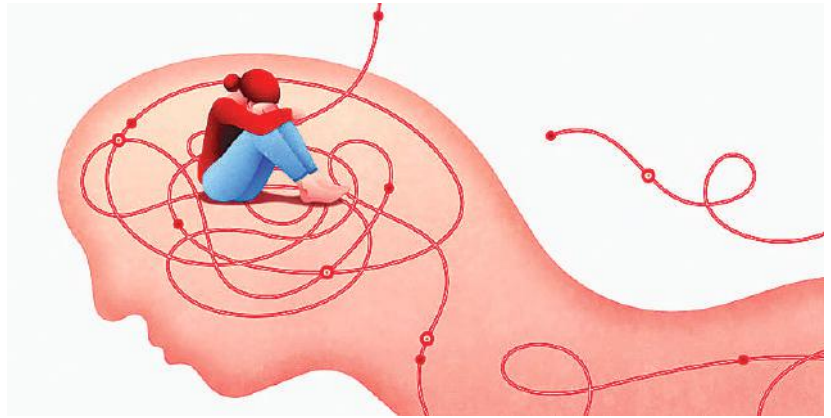


डॉ. आर.के. शर्मा, मनोचिकित्सक, उदयपुर

रा जस्थान जैसे पारम्परिक समाज में परिवार केवल एक सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि सुरक्षा और पहचान का मूल स्तंभ रहा है। लेकिन बदलते समय और आधुनिक सोच के चलते इस संरचना में बदलाव आया है। संयुक्त परिवारों की जगह छोटे, न्यूक्लियर परिवारों ने ले ली है, फिर भी पारम्परिक नियम और जिम्मेदारियाँ अब भी गहरे जड़ें जमा रही हैं। यही जड़ें अक्सर सास-बहू के बीच तनाव का कारण बनती हैं और सबसे बड़ा बोझ पति/बेटा पर आता है। कई मामलों में देखा गया है कि लगातार तनावपूर्ण वातावरण में जीने वाला व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से धीरे-धीरे टूटता है। कई बार यह इतना गंभीर हो जाता है कि सामान्य कार्यों में भी असहनीय दबाव बन जाता है, जिससे डिप्रेशन, एंग्जाइटी और हाई ब्लड प्रेशर जैसी समस्याओं के साथ अचानक हृदयाघात का खतरा भी बढ़ जाता है।

घर की जंग में फंसा आदमी

पति का दिन अक्सर दो मोर्चों पर लड़ाई लड़ते हुए गुजरता है। पहला कार्यस्थल का दबाव और दूसरा घर का तनावपूर्ण माहौल। वह मां को सम्मान देना चाहता है और पत्नी को समझाने की कोशिश करता है, लेकिन दोनों पक्ष अहंकार और जिद में डटे रहने पर उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। लंबे समय तक ऐसा होने पर डिप्रेशन, हाई ब्लड प्रेशर और एंग्जाइटी डिसऑर्डर जैसी समस्याएं जन्म लेती हैं। सास और बहू के बीच संघर्ष की जड़ अक्सर अहंकार होती है। आधुनिक और स्वतंत्र माहौल में पत्नी-बढ़ी बहू अक्सर पारम्परिक नियमों और जिम्मेदारियों में खुद को असहज महसूस करती है। वह स्वतंत्र होना चाहती है और अपनी राय रखने में जिद करती है। वहीं, परिवार की मुखिया रही सास अपने सम्मान और सत्ता को खोना नहीं चाहती।



जब ‘समानता’ बन जाए ‘अहंकार’ की वजह

- आज की बहुएं आर्थिक और सामाजिक रूप से पुरुषों के बराबर खड़ी हैं, लेकिन यही बराबरी कई बार अहंकार और शक्ति-संघर्ष में बदल जाती है। महिलाएं जहां वित्तीय और कार्यक्षेत्र में मजबूत हो रही हैं, वहीं कई बार यह ‘समानता’ अनजाने में पुरुष और सास दोनों के साथ टकराव का कारण बन जाती है। कई पति अपनी पत्नी की सफलता पर गर्व महसूस करने के बजाय अनजाने में ही हीनभावना और ईर्ष्या अनुभव करने लगते हैं। वहीं सास को भी लगता है कि उसका बेटा बहू से कमतर हो गया है, जिससे घर में तनाव और बढ़ जाता है। अधिकतर मामले में पति मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए बीच में फंस जाता है। घर में बने तनाव और अहंकार से पुरुष में डिप्रेशन और हार्ट अटैक का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। महिलाएं चाहे कितनी भी आधुनिक क्यों न हों, पारिवारिक संवाद और समझौते की क्षमता बनाए रखना जरूरी है। लंबे समय तक पारिवारिक तनाव में जीना सिर्फ मानसिक नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी खतरनाक है। हार्मोनल असंतुलन, नींद की कमी और लगातार चिंता से हृदय पर दबाव बढ़ता है, जो कभी-कभी अचानक हृदयाघात का कारण बन सकता है।

सीधे हृदय व मस्तिष्क पर असर

तनाव केवल मानसिक समस्या नहीं है। यह शरीर में हार्मोनल असंतुलन पैदा करता है, जो सीधे हृदय और मस्तिष्क पर असर डालता है। लंबे समय तक पारिवारिक तनाव झेलने वाले पुरुषों में डिप्रेशन और हार्ट अटैक का खतरा सामान्य व्यक्तियों की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक होता है।

एक मौत, जो कई जिंदगियां बिखेर देती है

- पति की असमय मौत के बाद परिवार पूरी तरह बिखर जाता है।
- बच्चे मानसिक आघात झेलते हैं और अपराधबोध में जीने लगते हैं।
- विधवा पत्नी और वृद्ध मां आर्थिक-सामाजिक संकट में फंस जाती हैं।
- परिवार की नींव हिल जाती है।

हृदय रोग और तनाव पर

चौंकाने वाले तथ्य

- 30 से 45 वर्ष के पुरुषों में हृदयाघात के मामलों में 20-25% वृद्धि (पिछले 5 सालों में)
- इंडियन हार्ट एसोसिएशन के अनुसार, भारतीय पुरुषों में 50% हृदयाघात 50 वर्ष से पहले, और 25% हृदयाघात 40 वर्ष से पहले हो रहे हैं
- जयपुर के अध्ययन में सामने आया कि 18+ आयु वर्ग के 39% युवाओं को हाई ब्लड प्रेशर है और 5% स्पष्ट रूप से हाइपरसेंसिटिव पाए गए।
- पश्चिमी देशों की तुलना में भारत में यह दर कहीं अधिक चिंताजनक। *राजस्थान व भारत

इस चक्रव्यूह से कैसे निकलें बाहर?

खुला संवाद : सास और बहू दोनों को बातचीत से समाधान निकालना चाहिए।

फेमिली काउंसलिंग : शहरों में यह सुविधा मौजूद है, ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार को बढ़ावा देना चाहिए।

पति का बोझ कम करना : उसे अकेला समाधानकर्ता मानना गलत है।

अहंकार त्याग : जब तक परिवार के सदस्य अपने अहंकार से ऊपर नहीं उठेंगे, घर का माहौल शांत नहीं हो पाएगा।

स्मार्ट सिटी का सपना, 12 करोड़ की बर्बादी

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर जमींदोज हुए अजमेर के 'सात अजूबों' की कहानी दरअसल आधुनिक विकास, प्रशासनिक अदूरदर्शिता और पर्यावरणीय अनदेखी का ऐसा उदाहरण है, जिसे पूरे देश को देख-समझ लेना चाहिए।



रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणियों के बाद अजमेर की आनासागर झील किनारे बने सेवन वंडर्स पार्क को जमींदोज कर दिया गया। स्मार्ट सिटी के नाम पर 12 करोड़ की लागत से खड़े किए गए विश्व-धरोहरों के प्रतिरूप सब बेकार और गैरकानूनी साबित हुए। इस पूरे मामले में अधिकारियों की अदूरदर्शिता और सरकारी सिस्टम की लापरवाही उजागर हुई। कोर्ट की रूलिंग से साफ है कि इस प्रोजेक्ट में नियोजन से लेकर क्रियान्वयन तक हर स्तर पर जिम्मेदार अधिकारियों ने पर्यावरणीय कानूनी प्रावधानों को न सिर्फ ताक में रखा, अपितु जनता की गाढ़ी कमाई को बर्बाद किया। अजमेर के सेवन वंडर्स पार्क का गिराया जाना देशभर के लिए एक नजीर है कि शहरी विकास परियोजनाओं में पर्यावरणीय संतुलन, सार्वजनिक हित और नियमों का पालन अनिवार्य है। मास्टर प्लान और वेट लैंड नियमों की अवहेलना को लेकर यह राजस्थान में पहली बड़ी कार्रवाई है।

यह मामला शुरू हुआ जब पूर्व भाजपा पार्षद अशोक मलिक ने मार्च 2023 में एनजीटी में याचिका दायर कर आनासागर झील के वेटलैंड क्षेत्र में हो रहे अवैध निर्माण तथा मास्टर प्लान उल्लंघन का मुद्दा उठाया। सवाल उठने के बावजूद जिम्मेदार अधिकारी निष्क्रिय रहे। आखिरकार मामला एनजीटी, फिर सुप्रीम कोर्ट तक गया। सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रशासन को जमकर फटकारते हुए कहा कि स्मार्ट सिटी बनाने में जल निकायों और वेटलैंड की सुरक्षा को नज़रअंदाज करना हैरान करने वाला है। सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की, “आपकी कार्यप्रणाली से ऐसा नहीं लगता कि आप अजमेर को स्मार्ट बनाना चाहते हैं। हमें आश्चर्य है कि जल निकायों और आर्द्रभूमि की सुरक्षा के बिना कोई शहर कैसे स्मार्ट बन सकता है, और उन पर अतिक्रमण करके शहर कैसे स्मार्ट बन सकते हैं।” यह टिप्पणी पूरे सिस्टम के यह मुंह पर गहरा तमाचा है।

आदेशों की अनदेखी

■ सुप्रीम कोर्ट की सख्ती और कड़ी टिप्पणी के पीछे अहम वजह यह है कि इसमें मास्टर प्लान, वेटलैंड नियम, पर्यावरण अधिनियम और कोर्ट के पूर्व आदेशों की अनदेखी कर सैकड़ों टन कंक्रीट, स्टील से बने ढांचे अति-संवेदनशील क्षेत्र में खड़े कर दिए गए। पार्क के निर्माण और संचालन में जब शुरुआती आपत्तियां उठीं, वह वक्त चेत जाने का था। पर शासन की चुप्पी और जिम्मेदार अफसरों की अनदेखी ने इस अवैध निर्माण को बेराकटोक चलने दिया। अंततः कार्रवाई तब हुई जब मामला हाईकोर्ट, एनजीटी और अंत में सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। प्रशासनिक सुस्ती पर कोर्ट ने फटकार लगाई। छह महीने में आदेश की पालन नहीं होने पर अंतिम चेतावनी के बाद पीला पंजा चला।

■ एनजीटी ने 11 अगस्त 2023 को इस पार्क को अवैध निर्माण करार देकर हटाने के आदेश दिए। इसके बाद भी एडीए ने जनवरी 2024 में सुप्रीम कोर्ट में अपील डाली, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने आदेश बरकरार रखा और मुख्य सचिव को तलब कर पूरे ढांचे के ध्वस्तीकरण के लिए कड़ी समय सीमा निर्धारित कर दी। मुख्य सचिव को भी 25 फरवरी, 2025 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश होना पड़ा और हलफनामा पेश करके ध्वस्तीकरण के लिए छह महीने का समय मांगा गया। बार-बार चेतावनी के बाद प्रशासन को 17 सितंबर 2025 तक पार्क पूरी तरह हटाने का आदेश मिल गया।

■ सेवन वंडर्स पार्क 12 मार्च 2025 से ही बंद कर दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार प्रशासन के पास अंतिम विकल्प केवल 'पीला पंजा' चलाने का रह गया। अदालत ने स्पष्ट कर दिया कि महज निर्माण हटाने से समस्या हल नहीं होगी, आगे वेटलैंड की बहाली, जलधारा और जैव विविधता की पुनर्स्थापना भी जरूरी है।



किसकी जवाबदेही, कैसी कार्रवाई?

ढांचा अब ढहाया जा चुका है। सवाल अब भी कई खड़े हैं कि क्या मात्र निर्माण का हट जाना समाधान है? करोड़ों की लागत, पूरा सरकारी सिस्टम, लेकिन जिम्मेदारी किसकी? स्मार्ट सिटी परियोजना का काम सीईओ, जिला कलक्टर, नगर निगम आयुक्त और एडीए आयुक्त जैसे जिम्मेदार आईएएस अधिकारियों की देखरेख में हुआ, इसी के तहत इतना बड़ा निर्माण हुआ। हालांकि, सेवन वंडर्स के निर्माण की जवाबदेही किसी पर निर्धारित नहीं की गई। सवाल यह उठता है कि इतने बड़े पैमाने पर निर्माण की अनुमति देने की जिम्मेदारी किसकी है। परियोजना के लिए किसे जवाबदेह ठहराया जाएगा, जिसमें नियमों की अनदेखी करके करोड़ों रुपए खर्च किए गए।

आनासागर का भविष्य



आनासागर झील सिर्फ अजमेर का नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र की जैव विविधता, प्रवासी पक्षियों और पारिस्थितिकी का अहम केंद्र है। यूरोप और एशिया के दो दर्जन से अधिक देशों के प्रवासी पक्षी आनासागर झील के किनारे आकर डेरा डालते हैं। झील का निर्माण 12वीं सदी में हुआ। सैकड़ों सालों से यह जीवन, पर्यावरण और पर्यटन जुड़ा है। वेटलैंड बहाली, मिट्टी एवं जलधारा सुधार और स्थानीय जैवविविधता की पुनर्स्थापना, प्रशासन की अगली सबसे बड़ी चुनौती है।

दुनिया के ये 7 अजूबे किए थे स्थापित

- स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी, अमेरिका
- एफिल टॉवर, फ्रांस
- लीनिंग टॉवर ऑफ पीसा, इटली
- ताजमहल, आगरा
- पिरामिड ऑफ गीजा, मिस्र
- क्राइस्ट द रिडीमर, ब्राजील
- कोलोसियम, रोम

इस तरह आया फैसला

- **11 मार्च 2023:** पूर्व भाजपा पार्षद अशोक मलिक ने एनजीटी में याचिका दायर की।
- **अगस्त 2023:** एनजीटी ने इसे अवैध ठहराया।
- **जनवरी 2024:** एडीए ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की।
- **25 फरवरी 2025:** मुख्य सचिव को कोर्ट में पेश होना पड़ा।
- **17 मार्च 2025:** सुप्रीम कोर्ट ने ध्वस्तीकरण का अंतिम आदेश दिया।
- **12 मार्च 2025:** पार्क बंद कर दिया गया।

अहम की लड़ाई में जनता के मुद्दे बलि चढ़े

विधानसभा का विषैला होता वातावरण

राजस्थान विधानसभा का इतिहास स्वस्थ संसदीय परम्पराओं का गवाह रहा है, लेकिन मौजूदा सत्र ने इस गौरवशाली परम्परा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। पक्ष और विपक्ष की तल्लखियों, हंगामों और आरोप-प्रत्यारोप के बीच जनता के मुद्दे गौण हो गए। सदन में जिस तरह कैमरा विवाद से लेकर व्यक्तिगत आरोपों तक हालात बिगड़े, उससे यह संकेत मिल रहा है कि अगले बजट सत्र में भी यही कड़वाहट बनी रह सकती है।



मनीष गोधा
वरिष्ठ पत्रकार



राजस्थान विधानसभा में आमतौर पर एक सत्र की छाया दूसरे सत्र पर पड़ने का इतिहास नहीं रहा है। अब तक होता यही दिखा है कि कोई सत्र यदि किसी अवांछनीय या कड़वे अध्याय के साथ समाप्त होता भी है तो अगले सत्र की शुरुआत में ही उस पर भूल-चूक माफ कर कदम आगे बढ़ा लिए जाते हैं। लेकिन इस बार ऐसा लगा कि पिछले सत्र की कड़वाहट खत्म होने के बजाए कई गुना बढ़ गई। इस सत्र का वातावरण ना सिर्फ पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा विषैला रहा, बल्कि बहुत ही कसैले अनुभव के साथ खत्म भी हुआ, जिसकी कड़वाहट अगले वर्ष फरवरी-मार्च में होने वाले बजट सत्र में भी बनी रहने की संभावना है।

राजस्थान विधानसभा का इतिहास बहुत ही स्वस्थ संसदीय परम्पराओं वाला रहा है, जहां पक्ष और विपक्ष के बीच वाद-विवाद और हंगामा तो होता रहा है, लेकिन माहौल इतना खराब कभी नहीं हुआ कि विधानसभा अध्यक्ष और विपक्ष के विधायकों के बीच विवाद स्तरहीन आरोपों तक पहुंच जाएं। इस विधानसभा में परसमराम मदेरणा जैसे खुराट विधानसभा अध्यक्ष और भैरोंसिंह

शेखावत जैसे दिग्गज नेता प्रतिपक्ष रहे, जिनके बीच मतभेद कितना भी था, लेकिन मनभेद नहीं था। इसी सदन में पिछली सरकार के दौरान सीपी जोशी स्पीकर और गुलाबचंद कटारिया नेता प्रतिपक्ष रहे और दोनों के बीच एक-दूसरे के प्रति आदर की वो मिसाल भी दिखी कि जब कटारिया राज्यपाल बनाए गए तो सीपी जोशी ने उनका अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया और समारोहपूर्ण विदाई दी।

पक्ष और विपक्ष के बीच विवाद और इसके शांतिपूर्ण समाधान के तो सैंकड़ों किस्से हैं। ऐसा कई बार होता देखा गया है कि विपक्ष ने विभिन्न मुद्दों को लेकर सदन में ही रात-रात भर धरना दिया और अगले दिन बातचीत से ही समाधान निकाल कर दोनों पक्ष आगे बढ़ गए। लेकिन इस बार ऐसा लग रहा है कि पक्ष और विपक्ष दोनों ही विधानसभा की स्वस्थ परम्पराएं और इतिहास भूल गए हैं। कोई भी झुकने को तैयार नहीं है और इनके अपने अहम के आगे जनता के मुद्दे गौण हो गए हैं। मौजूद विधानसभा में पहला और दूसरा सत्र तो फिर भी ठीक-ठाक निकला, लेकिन पिछले बजट सत्र से सदन के वातावरण में जिस तरह की विषाक्तता घुलनी शुरू हुई उसका असर चौथे सत्र में भी पूरे समय बना रहा।

बजट सत्र में यह हुआ था विवाद

विधानसभा के इस वर्ष के बजट सत्र के दौरान किसी हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा ने स्पीकर वासुदेव देवनानी के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया। मीडिया आमतौर पर सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद विधायकों के बीच होने वाली अनौपचारिक चर्चा को रिपोर्ट नहीं करता है, लेकिन ये टिप्पणी मीडिया में रिपोर्ट हुई और इसके बाद मामला डोटासरा सहित कांग्रेस के छह विधायकों के निलम्बन तक जा पहुंचा। ये निलम्बन वापस तो हुआ, लेकिन डोटासरा की टिप्पणी से स्पीकर वासुदेव देवनानी आहत हो कर सदन में भावुक होते दिखे और उनकी ओर से भी डोटासरा के लिए एक अवांछनीय टिप्पणी हो गई। इसका नतीजा यह निकला कि विवाद के बाद से पूरे बजट सत्र और हाल में हुए मानसून सत्र में भी डोटासरा विधानसभा नहीं आए।



इस बार शुरुआत से ही तल्लख माहौल

इस बार सत्र की शुरुआत से ही दोनों पक्षों के बीच तल्लखी नजर आई। मौजूदा स्पीकर वासुदेव देवनानी ने सत्र से पहले सर्वदलीय बैठक बुलाने की एक स्वस्थ परम्परा शुरू की है। अब तक हर बार नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस विधायक दल के सचेतक, उप सचेतक इस बैठक में आते रहे हैं, लेकिन इस बार सर्वदलीय बैठक का बहिष्कार किया गया। सदन के नेता मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बैठक के लिए विधानसभा पहुंच गए और इंतजार भी किया, लेकिन नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जुली बैठक में नहीं आए और बाद में उनका बयान आया कि वहां एकतरफा फैसले होते हैं, इसलिए हमने बहिष्कार किया है। विपक्ष की इस तल्लखी से ही अंदाजा हो गया था कि इस बार सत्र हंगामेदार रहने वाला है, लेकिन मामला सिर्फ हंगामे तक सीमित नहीं रहा, बल्कि काफी आगे बढ़ा और पहली सदन के नेता यानी मुख्यमंत्री के वक्तव्य के दौरान हंगामा और बहिष्कार जैसी घटना भी होती दिखी।



कैमरा विवाद बना समापन का केंद्रबिंदु... विधानसभा सत्र का समापन विपक्ष की सीटों की ओर कथित तौर पर लगाए गए दो अतिरिक्त कैमरों के विवाद के साथ हुआ। विपक्ष ने यह मुद्दा नौ सितम्बर को उठा कर हंगामा किया और दस सितम्बर यानी अंतिम दिन तो पूरा ही इस मुद्दे पर हंगामे में निकाल दिया। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली का आरोप था कि विपक्ष की ओर दो अतिरिक्त कैमरे विपक्ष की जासूसी के लिए लगाए गए हैं और यह सदस्यों की निजता हनन है। स्पीकर यह स्पष्ट करें कि कैमरे क्यों लगाए गए हैं और इनका एक्सेस किसके पास है? उधर स्पीकर ने आरोपों को पूरी तरह आधारहीन बताया और कहा कि कैमरे अपग्रेड किए गए हैं, ताकि सुरक्षा को और पुख्ता किया जा सके और पारदर्शिता रहे। सदन के नेता यानी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी सदन में अपनी बात रख मुद्दे को खत्म करने का प्रयास किया, लेकिन विपक्ष उनके भाषण का बहिष्कार कर चला गया। बहरहाल इसी मुद्दे पर सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के स्थगित हो गई।

हर रोज नए मुद्दे पर प्रदर्शन

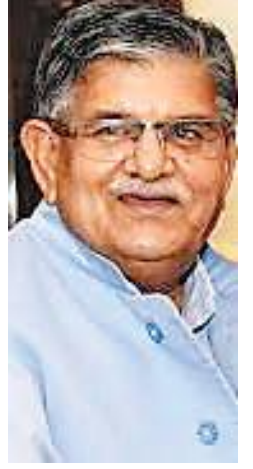
कांग्रेस ने इस बार विपक्ष के रूप में अपना दम दिखाने के लिए हर रोज एक नए मुद्दे पर सदन के बाहर और अंदर प्रदर्शन की रणनीति तय की थी। कांग्रेस के विधायक पोस्टर बैनर लेकर आते और सदन के बाहर प्रदर्शन करने के बाद अंदर जाते। प्रश्नकाल में तो हिस्सा लेते, लेकिन शून्यकाल शुरू होने के साथ ही अपने मुद्दे पर हंगामा करते और बाद में इसी हंगामे के बीच विधानसभा की कार्यवाही पूरी हो जाती। इसका नतीजा यह हुआ कि एक भी दिन शून्यकाल में ढंग से चर्चा नहीं हो पाई। जनता के मुद्दे सदन में उल्लेखित तो होते रहे, लेकिन इन पर चर्चा नहीं हो पाई। कांग्रेस की यह रणनीति बहुत हद तक संसद में कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन जैसी रही। जिस तरह वहां कांग्रेस किसी ना किसी मुद्दे पर हंगामा करती नजर आती है, कुछ वैसा ही यहां भी होता दिखा।

हंगामे के बीच पास हुए अहम विधेयक

इस सत्र के दौरान प्रदेश में धर्मांतरण पर रोक, कोचिंग संस्थाओं के नियमन, भूजल संरक्षण के लिए ट्यूबवैल की खुदाई पर सरकार के नियंत्रण और राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज यानी रिम्स की स्थापना जैसे अहम विधेयक पारित किए गए हैं, लेकिन ये सभी हंगामे के बीच पारित हुए। धर्मांतरण पर रोक और कोचिंग संस्थाओं के नियमन जैसे अहम विधेयकों पर भी जैसी लम्बी और सार्थक चर्चा की उम्मीद थी, वह नहीं हो पाई।



निम्नस्तरीय आरोपों से और बिगड़ा माहौल... कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा और स्पीकर देवनानी के बीच हुए विवाद का असर इस मुद्दे पर भी दिखा और डोटासरा ने देवनानी पर कांग्रेस महिला विधायकों को कैमरे के जरिए देखने जैसा निम्नस्तरीय आरोप लगा दिया। इसी आरोप को बाद में कांग्रेस की महिला विधायकों ने भी दोहराया। इस बेहूदा आरोप का जवाब स्पीकर ने 'जाकी रही भावना..' जैसी पंक्ति के साथ संयमित ढंग से दिया।



खल रही है अनुभवी नेताओं की कमी

विधानसभा के मौजूदा वातावरण को देखते हुए यहां अनुभवी नेताओं की कमी बहुत खल रही है। कहने को तो दोनों पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे और अशोक गहलोत भी सदन के सदस्य हैं, लेकिन दोनों ही सदन में नहीं आते हैं और आते भी हैं तो सदन की कार्यवाही में हिस्सा नहीं लेते। सदन सुचारू ढंग से चलाने की जिम्मेदारी सत्ता पक्ष की होती है और इस दृष्टि से देखें तो गुलाबचंद कटारिया, घनश्याम तिवाड़ी, राजेन्द्र राठौड़ जैसे अनुभवी नेताओं के सदन में नहीं होने का असर भाजपा के फ्लोर मैनेजमेंट और पक्ष-विपक्ष के बीच विवादों को सुलझाने की रणनीति में साफ दिख रहा है। इन नेताओं का अनुभव सदन का माहौल स्वस्थ बनाए रखता था और विवाद की स्थिति में बातचीत से रास्ता निकालने में भी इनका संसदीय अनुभव पूरे प्रदेश ने देखा है।

कांग्रेस के भीतर खींचतान और वर्चस्व की लड़ाई



- कांग्रेस की बात करें तो इनके पास सचिन पायलट, शांति धारीवाल, हरिमोहन शर्मा, राजेन्द्र पारीक जैसे अनुभवी चेहरे तो हैं, लेकिन पार्टी के विधायक दल में खींचतान बहुत है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डोटासरा की धारीवाल और राजेन्द्र पारीक से नहीं बनती। वहीं डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के बीच भी वर्चस्व की लड़ाई है। वहीं सचिन पायलट सदन की कार्यवाही में बहुत कम हिस्सा लेते हैं। ऐसे में कांग्रेस हंगामा खड़ा तो कर देती है, लेकिन हंगामा शांत करवा पाना आसान नहीं रह जाता।
- कुल मिला कर इस बार जिस तरह से विधानसभा की कार्यवाही चली, उसने यह तो साफ कर दिया कि इस विधानसभा की स्वस्थ संसदीय परम्पराएं अब वास्तव में इतिहास की बात ही रह गई है। नेताओं के अहम जनता के मुद्दों के मुकाबले ज्यादा अहमियत रखने लगे हैं, इसीलिए प्रश्नकाल तक में हंगामा और सदन की कार्यवाही स्थगित होती नजर आती है। वाद-विवाद की इस सबसे बड़ी पंचायत में अब विवाद ही महत्व पाता दिख रहा है।

आंकड़ों में देखें सत्र की गतिविधियां

आंकड़ों की बात की जाए तो छह दिन चले इस सत्र में बहुत कुछ हुआ है जैसे-

- 6 बैठकें हुई और 18 घंटे 40 मिनट कार्यवाही चली।
- कुल 3008 प्रश्न प्राप्त हुए, जिनमें से तारांकित प्रश्न 1237, अतारांकित प्र. 1770 एवं अल्प सूचना प्रश्न 1 था।
- कुल 120 तारांकित प्रश्न सूचीबद्ध हुए, जिनमें से 53 प्रश्न मौखिक रूप से पूछे गए और उनके उत्तर भी दिए गए। इसी तरह 119 अतारांकित प्रश्न भी सूचीबद्ध हुए।
- प्रक्रिया के नियम-131 के अंतर्गत 437 प्रस्तावों की सूचनाएं प्राप्त हुईं।
- मंत्रीगण का ध्यान आकर्षित करने के लिए दो प्रस्ताव कार्य-सूची में सूचीबद्ध किए गए।
- प्रक्रिया के नियम 50 के अंतर्गत कुल 134 स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं प्राप्त हुईं। इनमें से 21 स्थगन प्रस्तावों पर सदन में बोलने का अवसर दिया गया तथा 17 विधायकों ने अपने विचार रखे।
- प्रक्रिया के नियम-295 के अंतर्गत 95 विशेष उल्लेख के प्रस्ताव प्राप्त हुए। इनमें से 78 विशेष उल्लेख की सूचनाएं सदन में पढ़ी गई या पढ़ी हुई मानी गई।
- सत्र में कुल 7 विधेयक रखे तथा प्रवर समिति ने पेश 3 विधेयकों सहित कुल 10 सदन द्वारा पारित किए और एक विधेयक वापस लिया गया।

एकदमै बुड़बक हो का



हरीश मलिक वरिष्ठ व्यंग्यकार

बिहार में चुनावी सियासत का पारा चढ़ने लगा है। इधर लालू के लाल एक-दूसरे पर लाल हो रहे हैं। और किडनी वाली बहना भी भाई को आंखें दिखा रही है। उधर सुशासन बाबू घोषणा पर घोषणा किए जा रहे हैं, लेकिन कितनी सीटों पर लड़ेंगे, इसका संपट नहीं बैठ रहा है। राहुल गांधी भी बिहार जाकर पीएम फेस बन आए हैं, लेकिन मजाल है कि एक बार भी तेजस्वी को सीएम फेस बताया हो। ऐसे हालात में लालू प्रसाद यादव जी के महल के पीछे उनकी भैंस-शाला में एक साक्षात्कार तो बनता है...

❓ सवाल - विपक्ष तो तेजस्वी यादव की पढ़ाई पर सवाल उठा रहा है कि वे नवीं फेल हैं!

लालू यादव: पढ़ाई से ज्यादा गुणी होना चाहिए। का होता है पढ़ाई से। लैरी एलिसन का नाम सुने हो ना। ऊ दुनिया का दूसरा सबसे पैसे वाला आदमी है। उसने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री नहीं लीया। और तुम्हारे राजस्थान में ही देख लो। चपरासी बनने के लिए एमबीए, एमएड, इंजीनियर्स यहां तक की आरएस-प्री पास किए हुए भी लाइन में लगे पेपर दे रहे हैं। कुछ फायदा हुआ पढ़ाई से! हरियाणा ओमप्रकाश चौटाला तो पहले सीएम बने, फिर जेल गए और वहीं से दसवीं पास की। देश के एक उप प्रधानमंत्री तो आठवीं पास थे। (हंसते हुए) अपना तेजस्वी तो उनसे आगे है।



❓ सवाल - आपकी चारा घोटाला वाली इमेज के चलते तेजस्वी को नुकसान नहीं होगा?

लालू यादव: बिहार की जनता ने हमें माफ कर दिया। पर ई सप्ता मीडिया अभी तक ऊ चारा घोटाला के पीछे पड़ा है। अरे भइया, तनिक ये तो विचार करो कि ई घोटाला के बाद भी बिहार की हमारी जनता-जनार्दन ने हमें कितनी बार जितया है कि नहीं। ई का मतबल जनता को घोटाले से कोई फर्क नहीं पड़ता है। फर्क पड़ता होता तो का बाद में हम सेंट्रल में रेल मिनिस्टर बन पाते? याद है ना, पूरे देश के रेल को हमने घाटे से उबार दिया था। पर मीडिया तो अब भी घाटे से ज्यादा घोटाला को याद करता है।

❓ लेकिन मीडिया ही नहीं, नई पीढ़ी भी भ्रष्टाचार के खिलाफ है। ताजा उदाहरण तो नेपाल का ही है।

लालू यादव: एकदमै बुड़बक हो का। रील और नेट में फंसी नई पीढ़ी को ई याद नहीं रहता कि एक महीने पहले का हुआ था? तीस बरस में तो करीब-करीब दूसरी पीढ़ी भी जवानी की दहलीज पर है। उसे का लेना-देना कि तीन दशक पहले का हुआ था? और उस नेपाल के विद्रोह की जड़ में भी यही रील और सोशल मीडिया है। जब इसे बंद करेंगे तो युवा पीढ़ी तो नाराज होगी ही। हमने बिहार में ऐसा नहीं है।

❓ आपके तो अपने कुनवे में घमासान मचा है। तेजप्रताप छोटे भाई तेजस्वी के खिलाफ धमाल मचाए हुए हैं।

लालू यादव: आप ऊ कहावत तो सुने ही होंगे- पूत कपूत तो का धन संचय। पूत सपूत तो का धन संचय। धन को अपने पास बहुत है। सो हमने कहावत में धन

की जगह सत्ता कर दिया है। यानी पूत यदि सपूत होगा तो उसके लिए सत्ता बनाने से कोई लाभ नहीं। वो खुद ही तेजस्वी की तरह यदुवंशी राजा बन जाएगा। और पूत यदि कपूत होगा तो वह सत्ता को लात मारकर खुद का विनाश कर लेगा। इसलिए हम इस ओर से निर्लिप्त हैं। और एक राज की बात बताएं। तेज प्रताप में खून तो अपना ही है ना। गलती से दो-चार सीट ले मिल भी गया तो हमरे ही चरणों में आएगा ना।

❓ तेजप्रताप ही नहीं आपको किडनी देने वाली बेटी रोहिणी आचार्य भी तेजस्वी से नाराज हैं।

लालू यादव: सुनो भइया, किस घर में लड़ाई-झगड़ा नहीं होगा। घर में चार बर्तन होंगे को आवाज आएगी की नहीं। जो बिटिया अपनी जिंदगी दांव पर लगाकर हमका अपनी किडनी दे सकती है। वो हमरी इत्ती सी बात भी ना मानेगी कि एक बार तेजस्वी को सीएमवा बनवा दो। फिर वो हम सबकी मदद करेगा। उसकी भी हर बात मानेगा।

❓ राहुल गांधी 'वोट चोर, गद्दी छोड़' का नारा दे रहे हैं। आपकी तरह एनडीए ने भी इसमें 'वोट' की जगह 'चारा' कर दिया है। 'चारा चोर, गद्दी छोड़' आप क्या कहेंगे?

लालू यादव: देखिए, हमें तो लगता है कि राहुल गांधी का ई नारा एकदमै गलत है। आप जरा हमारा जमाना याद कीजिएगा। पूरा का पूरा बूथ ही कैप्चरिंग हो जाता था। हजारों मतपेटिकाओं की लूट हो जाती थी। ऊ थी वोट चोरी। आजकल का है, करोड़ों मतदाताओं

के प्रदेश में दो-चार हजार वोट इधर-उधर हो गया, ये कौनो बड़ी बात नहीं है। इससे घंटा फरक नहीं पड़ेगा। नारा होना चाहिए-माई जोड़, गद्दी छोड़। यानी हमारा माई (मुस्लिम+यादव) फेक्टर जुड़कर धड़ल्ले से सरकार बनाएगा। ऊ सुशासन बाबू को गद्दी छोड़कर जाना पड़ेगा। ई हमरी भी गारंटी है।

❓ सवाल - तेजस्वी को सीएम फेस राहुल क्यों नहीं बना रहे हैं? जबकि तेजस्वी ने उनको पीएम फेस बता दिया है।

लालू यादव: अरे बुड़बक! ऊ कौउन होता है सीएम फेस बनाने वाला, जो खुद इतने बड़े राजनीतिक जीवन में कभी सीएम ना बन पाया है। सीएम फेस तो हम बनाएंगे। हमारी राबड़ी जी बनाएंगी। बिहार की जनता-जनार्दन बनाएंगी।

❓ सवाल - तेजस्वी की जीत-हार के बीच आपके जमाने के जंगलराज का भी खूब जिक्र हो रहा है। जनता फिर जंगलराज लाएगी?

लालू यादव: पहले तो तुम ई समझो कि जंगलराज का होता है? जंगल माने जंगल और राज माने राजा। मतबल जिस जंगल में राजा होता है, यानी कि शेर। उसको जंगलराज कहा जाता है। और बिहार के शेर हम हैं और तेजस्वी शेर का बच्चा। तो जंगल का राजा तो वही बनेगा ना। अब तुम कहोगे कि ऊ विरोधी लोग तो जंगलराज का मतबल अपहरण, हत्या, फिरौती बताते फिरते हैं। इस परिभाषा से भी तुमका हम समझा देते हैं। मानो कि तुम्हारी महरारू का कोई अपहरण करके ले गया। वो उससे मारपीट, हत्या, दुष्करम कुछ भी कर सकता है ना। तुम का चाहोगे। कइसन भी महरारू सही-सलामत घर में वापस आ जाए। चाहे उसकी कोई भी 'कीमत' देनी पड़े। यही ना! अब यदि तुम्हारे चाहे मुताबिक कुछ 'कीमत' लैके कोई तुम्हारी महरारू को बचा लाता है तो तुम खुश होंगे कि दुखी। बिल्कुल सही, बहुत ज्यादा खुश होंगे। ऐसे ही बिहार की जनता भी खुश रही और बार-बार हमारे 'राज' को चुनती रही। बिहार की जनता को पुलिस से ज्यादा हमरी सरकार पर भरोसा था।

चलते-चलते: अच्छा लालू जी, आपने बहुत समय दिया। अब चलते हैं...नमस्ते जी।

लालू: जय श्रीकृष्णा...सलाम वालुकम। हम धर्मनिरपेक्ष हैं, इसलिए चुनाव तक यही अभिवादन चलेगा।

काम आधा, इरादे अधूरे और धैर्य परीक्षा पर

अब तमाशा ही इतिहास बन गया है। कहीं एक टांग पर कूदकर रिकॉर्ड बने, कहीं बादल हेलिकॉप्टर को धकेल दें, कहीं इंटरव्यू में फेल को टॉपर बना दिया जाए, और कहीं सरकारी दफ्तरों में कुर्सियां ही सबसे ईमानदार कर्मचारी निकलें। चारों किस्से हंसी भी दिलाते हैं और हालात पर झकझोर भी देते हैं। काम आधा, इरादे अधूरे और जनता का धैर्य परीक्षा पर।

एक टांग का इतिहास

लंगड़ी एक्सप्रेस अब जोधपुर से छूट चुकी है। ट्रेनें भले ही घंटों लेट हों, पर यह एक्सप्रेस एक पैर पर ही रिकॉर्ड तोड़ आई। इंडिया बुक हो या एशिया बुक— सबने मानो लिख दिया हो कि “कूदना ही कुशलता है।” उपमुख्यमंत्री जी भी बचपन की यादों में कूद पड़ीं, और जनता ने ताली बजा-बजाकर माहौल और भी लंगड़ाया। खेल विभाग सोच रहा है कि अगर क्रिकेट में एक पैर पर रन बनाए जाएं तो कैसा रहेगा। बजट भी बचेगा, पैड भी आधे खरीदने पड़ेंगे। आयोजक दावा कर रहे हैं कि यह खेल भारतीय संस्कृति का आईना है। सही कहा, क्योंकि हम हर काम आधे मन और आधे कदम से ही तो करते हैं। अब देखना है कि अगली बार सुई में धागा डालने की दौड़ या ताश की गड्डी उठाकर मैराथन कब बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज होती है। फिलहाल, लंगड़ी एक्सप्रेस ने यह साबित कर दिया है कि दुनिया चाहे रिकेट से चांद पर जाए, हम एक टांग से भी इतिहास लिख सकते हैं।



बादलों की बगावत और मंत्री'जी की लैंडिंग

राजस्थान की राजनीति में जन्मदिन अब आसमानी तमाशे बन गए हैं। राज्य के एक बड़े महकमे के मंत्री'जी ने सोचा था कि मोमबत्ती से पहले हेलिकॉप्टर की गड़गड़ाहट से जनता को रोशन कर देंगे। पर अलवर के आसमान ने मानो कहा, “पांव जमीन पर रखिए महाराज!” बादल ऐसे जमा हुए जैसे विरोधी दल का मोर्चा और हेलिकॉप्टर की एंट्री सीधी कट हो गई। नतीजा मंत्री'जी को फिर उसी सड़क पर लौटना पड़ा, जिस पर आम जनता रोज धक्के खाती है। फर्क बस इतना कि जनता जाम से लड़ती है और मंत्री'जी का काफिला उससे। मौसम ने साबित कर दिया कि राजनीति में चाहे कितनी भी ऊंचाई मिल जाए, जमीन पर लौटना अनिवार्य है। जनता अब सोच रही होगी, काश हर रोज बादल ऐसे ही घेर लें, ताकि नेता'जी हेलिकॉप्टर छोड़ पैदल हमारे बीच दिखें।



इंटरव्यू में टॉपर, ईमानदारी में फेल

भ्रष्टाचार का खेल अब इतना सुसंस्कृत हो गया है कि इंटरव्यू में भी “गुरु मंत्र” काम करता है। आरपीएससी के मंच पर हिंदी का ‘ह’ लिखना न जानने वाले अभ्यर्थी भी 42 में से 30 अंक पा गए। सामान्य ज्ञान शून्य, पर ज्ञान का पिटारा साक्षात्कार कक्ष में खुल गया। लगता है योग्यता अब प्रमाण-पत्र से नहीं, “प्रमोटर” से तय होती है। एसओजी ने जब तगड़ी पूछताछ शुरू की, तो राजकुमार जैसे महामानव ने अभ्यर्थियों को नया पाठ पढ़ाया, “सच मत बोलना, बस भाग जाना।” लेकिन जब खुद पकड़े गए तो घर में बैठकर चुपचाप दर्शन देते मिले। दो घंटे तक गेट बंद रहा, मानो ईमानदारी वहीं अंदर बंधक हो। यह घटना साबित करती है कि हमारी परीक्षाओं में परिश्रम नहीं, पैरवी ही पास होती है। और राजकुमार जैसे पात्र हमें याद दिलाते हैं कि असली “एसआई” वही है, जो सिस्टम इन्फ्लुएंस से भर्ती हो। बाकी सब मेहनतकश तो बस दर्शक बने रह जाते हैं।



हाजिरी रजिस्टर भरे, मगर कुर्सियां खाली

सरकारी दफ्तरों का हाल तो अब ‘हाजिरी कम, हाजिरी की कहानियां ज्यादा’ हो गया है। किशनगढ़ में जब प्रशासनिक सुधार विभाग की टीम पहुंची तो दफ्तरों की कुर्सियां भी हैरान रह गईं। “साहब लोग तो आते ही नहीं, रोज हम ही ड्यूटी पर बैठे रहते हैं।” 43 रजिस्टर देखे गए, मगर उनमें ज्यादा नाम तो सिर्फ कागज पर ही थे। हाजिरी लगाने का हुनर ऐसा कि कर्मचारी गायब, पर कलम मौजूद! गजेटेड अफसरों की आधी फौज नदारद और नॉन-गजेटेड तो जैसे “लापता मोर्चा” निकालकर चले गए। अस्पताल से लेकर पीडब्ल्यूडी तक सब जगह खालीपन ही खंखारता मिला। अब रिपोर्ट बनेगी, नोटिस जारी होंगे और कर्मचारी सोचेंगे, “चलो, अगली बार निरीक्षण से पहले टाइम पर आ जाना।” सरकार कह रही है “पारदर्शिता और जवाबदेही।” लेकिन जनता कह रही है “साहब, हमें तो सिर्फ इतना चाहिए कि दफ्तर खुला मिले और कोई काम करने वाला भी।”



• बलवंत राज मेहता, वरिष्ठ व्यंग्यकार

ब्ल्यू सिटी डांडिया महोत्सव-2025

सूर्यनगरी झूमी गरबे की ताल पर

सूर्यनगरी की रूहानी शामें जब गरबे की धुनों पर थिरकीं तो हर कोई मंत्रमुग्ध हो उठा। दो दिन तक पूरे शहर में सिर्फ एक ही रंग बिखरा—गरबा का रंग। मौका था ब्ल्यू सिटी डांडिया महोत्सव-2025 का, जिसे जोधपुर ने अपनी जिंदगी की सबसे यादगार रातों में शुमार कर लिया। होटल बद्री पैलेस का विशाल मैदान जनसैलाब से खचाखच भरा हुआ था। कहीं रंगीन परिधानों में सजी महिलाएं चक्रवात-सी घूमतीं, कहीं राजस्थानी साफा पहने पुरुष गरबे की ताल पर कदमताल करते दिखे। बच्चे और बुजुर्ग भी इस उत्सव की धुन में खोए नजर आए।

चैनल 24 प्लस न्यूज और राजस्थान टुडे की ओर से आयोजित इस महोत्सव में जोधपुरवासियों का उत्साह देखते ही बन रहा था। मंच से लेकर मैदान तक सिर्फ एक ही रंग था—गरबा का रंग।



इस मौके पर जिला कलक्टर गौरव अग्रवाल, राज्यस गहलोत, शहर विधायक अतुल भंसाली, नगर निगम उत्तर म पूर्व विधायक मनीषा पंवार, राज्य बाल संरक्षण आयोग की बेनिवाल, भाजपा शहर जिलाध्यक्ष राजेन्द्र पालीवाल, आ नाथूसिंह राठौड़, भाजपा ओबीसी मोर्चा प्रदेश मंत्री शशिप्रका बद्री पैलेस के एमडी प्रदीप सांखला, एनडब्ल्यूआरईयू के ज कुमार परिहार, सतगुरु क्लासेज के डायरेक्टर डॉ. टी सी चौ के हरदीपसिंह सलूजा, नव शिक्षा समाज के अध्यक्ष गिरीश म

ब्ल्यू सिटी डांडिया म





भा सांसद राजेन्द्र हापौर कुंती परिहार, पूर्व अध्यक्ष संगीता तिरिकत महाधिवक्ता शाश प्रजापत, होटल गनल अध्यक्ष मनोज हान, रॉयल प्रॉपर्टीज आथुर, ग्राइम प्रोपर्टीज के एमडी नितिन अरोड़ा, भावना अरोड़ा, जैन रेस्टोरेन्ट के ऑनर कुलदीप-दिव्या बंसल, समाजसेवी आदर्श शर्मा, समाजसेविका निरुपा पटवा, जेडीए एक्सईएन दिलीपसिंह, अभिषेक परिहार, भागीरथ गोयल, संजय अस्थाना सहित अनेक गणमान्य लोग बतौर अतिथि मौजूद रहे। पंडित राजेश दवे ने विधिवत पूजा-अर्चना करवाकर महोत्सव की शुरूआत करवाई।

मारवाड़ मीडिया प्लस डायरेक्टर पूनम अस्थाना, ग्रुप हेड अजय अस्थाना, राजस्थान टुडे के प्रधान संपादक दिनेश रामावत, प्रबंध संपादक राकेश गांधी और मार्केटिंग हेड प्रवीण गिरी ने सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया।

मंच संचालन का जिम्मा लोकप्रिय आरजे शैलेष भुरानी ने संभाला और अपने खास अंदाज से महोत्सव की शामों को और भी जीवंत बना दिया।

गरबे की इन धड़कनों ने सिर्फ कदमों को नहीं, बल्कि दिलों को भी एक लय में बांध दिया। दो रातों तक रंग और राग में डूबी सूर्यनगरी ने यह साबित कर दिया कि परंपरा और आधुनिकता जब साथ आते हैं, तो उत्सव केवल आयोजन नहीं, बल्कि एक यादगार अनुभव बन जाता है। ब्ल्यू सिटी डांडिया महोत्सव-2025 ने हर चेहरे पर मुस्कान और हर दिल में रौनक छोड़ दी— ऐसी रौनक, जिसे आने वाले बरसों तक जोधपुर याद करेगा।

महोत्सव के सहयोगी



खैरात बांटो, चुनाव जीतो



राधा रमण
वरिष्ठ पत्रकार

आमतौर पर ईमानदार राजनेता की छवि वाले नीतीश इस बार कठिन राजनीतिक चुनौती में घिरे दिखाई पड़ रहे हैं। राज्य में कानून व्यवस्था का बुरा हाल है। एक तरफ विपक्ष के नेता नीतीश के प्रति हमलावर हैं तो दूसरी तरफ एनडीए के सहयोगी भी लंगड़ी मारने को तैयार बैठे हैं। सहयोगी दलों के नेता यह तो कहते हैं कि इस बार चुनाव नीतीश के चेहरे पर लड़ा जाएगा, लेकिन चुनाव के बाद सरकार किसकी अगुवाई में बनेगी, यह बताने को कोई तैयार नहीं है।

बिहार विधानसभा का चुनाव नवंबर में प्रस्तावित है। वर्तमान सरकार का कार्यकाल 22 नवंबर तक है। जाहिर है इससे पहले विधानसभा का चुनाव संपन्न हो जाएगा। चर्चा है कि चुनाव आयोग की टीम अक्टूबर के पहले सप्ताह में पटना आने वाली है। चुनाव की घोषणा उसी समय की जाएगी। इससे पहले प्रधानमंत्री का इस साल का आठवीं बार बिहार दौरा 30 सितंबर को प्रस्तावित है। वह पटना में मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे।

दूसरी ओर, कर्ज के मकड़जाल में गले-गले तक उलझे बिहार में इस बार खैरातों की बारिश हो रही है। पिछले 20 वर्षों से सत्ता की कमान संभालने वाले और हाथ बांधकर खर्च करने वाले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस बार जनता के लिए सरकार का खजाना खोल दिया है। आमतौर पर ईमानदार राजनेता की छवि वाले नीतीश इस बार कठिन राजनीतिक चुनौती में घिरे दिखाई पड़ रहे हैं। राज्य में कानून व्यवस्था का बुरा हाल है। एक तरफ विपक्ष के नेता नीतीश के प्रति हमलावर हैं तो दूसरी तरफ एनडीए के सहयोगी भी लंगड़ी मारने को तैयार बैठे हैं। सहयोगी दलों के नेता यह तो कहते हैं कि इस बार चुनाव नीतीश के चेहरे पर लड़ा जाएगा, लेकिन चुनाव के बाद सरकार किसकी अगुवाई में बनेगी, यह बताने को कोई तैयार नहीं है। शायद, इसीलिए नीतीश ने इस बार सरकार का खजाना खोल दिया है। उन्होंने वृद्धावस्था और विधवा पेंशन की राशि 400 रुपये से बढ़ाकर 1100 रुपये प्रतिमाह कर दिया है। इसके अलावा करीब एक करोड़ महिलाओं के खाते में रोजगार के लिए 10 हजार रुपये की शुरुआती रकम भेज दी है। इसके तहत कुल दो लाख रुपये प्रति महिला दिये जाने हैं। तीन माह बाद इसका परीक्षण किया जाएगा कि कितनी महिलाओं ने रोजगार प्रारंभ किया है। प्रगति संतोषजनक पाये जाने पर आगे की रकम दी जाएगी। इसके अलावा 16 लाख 4 हजार 929 श्रमिकों को प्रति श्रमिक 5 हजार की दर से वस्त्र भत्ता



मद में 802 करोड़ 46 लाख 45 हजार रुपये पिछले 17 सितंबर को ट्रांसफर कर दिये गए हैं। इन पैसे की वसूली नहीं की जाएगी। मुख्यमंत्री ने किसानों को 120 यूनिट बिजली मुफ्त देने, पत्रकारों की मासिक पेंशन 15 हजार करने, बिहार के हर पंचायत में विवाह मंडप बनाने के लिए 50 लाख प्रति पंचायत देने के लिए यानी कुल 8 हजार 53 पंचायतों में 4 हजार 260 करोड़ रुपये कैबिनेट से मंजूर करा दिया है। आंगनवाड़ी सेविकाओं का वेतन 7 हजार से बढ़ाकर 9 हजार करने और आशा कार्यकर्ताओं का मानदेय 1000 से बढ़ाकर 3000 रुपये प्रति माह कर दिया है। बिहार कैबिनेट ने राज्य के स्कूलों में मिड-डे मील के

रसोइयों का मानदेय 1650 रुपये से बढ़ाकर 3300 रुपये कर दिया है। इसके अलावा राज्य के लगभग साढ़े 21 लाख बेरोजगारों को एक हजार रुपये प्रतिमाह बेरोजगारी भत्ता देने की भी घोषणा की गई है। बेरोजगारों को यह भत्ता फिलहाल तीन साल तक दिया जाएगा। विकास मित्रों को टैबलेट खरीदने के लिए 25 हजार रुपये दिये जाएंगे। साथ ही उनका परिवहन भत्ता 1900 से बढ़ाकर 2500 रुपये और स्टेशनरी भत्ता 900 रुपये से बढ़ाकर 1500 रुपये कर दिया गया है। इसके अलावा शिक्षा सेवकों को स्मार्ट फोन खरीदने के लिए 10 हजार रुपये दिये जाएंगे। यह सभी घोषणाएं तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गई हैं।

इससे पहले भी राज्य सरकार तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को एकमुश्त 25 हजार रुपये, कन्या उत्थान योजना के तहत लड़की के जन्म होने पर 5 हजार रुपये, लड़की के 9वीं पास करने पर साइकिल खरीदने के लिए 3 हजार रुपये, इंटरमीडिएट पास करने पर 10 हजार रुपये और ग्रेजुएट करने पर 50 हजार रुपये देती रही है। साथ ही पहली से 12वीं तक यूनिफार्म खरीदने के लिए हर साल 600 से 1200 रुपये का अनुदान अलग से देती रही है। यही नहीं गरीब कन्याओं को विवाह के लिए भी 50 हजार रुपये सरकार देती रही है।



बिहार की माली हालत भी जान लो

अब बिहार सरकार की माली हालत भी जान लेना समीचीन होगा। आंकड़े बताते हैं कि राज्य सरकार पर वर्ष 2024-25 में कुल 3 लाख 62 हजार 036 करोड़ का कर्ज था। अगले साल इसके 4 लाख करोड़ से अधिक हो जाने का अनुमान है। जानकर आश्चर्य होगा कि राज्य सरकार पर प्रतिदिन 63 करोड़ व्याज की देनदारी रहती है। नीतीश की नई घोषणाओं से राज्य पर करीब 34 हजार करोड़ का अतिरिक्त भार पड़ेगा। इसकी भरपाई की सरकार के पास फिलहाल कोई योजना नहीं है। फिर भी धड़ल्ले

से खैरात बांटे जा रहे हैं।

राज्य के ग्राम कचहरी सचिवों को पिछले नौ माह से वेतन नहीं मिला है। सचिवों के संघ के प्रदेश अध्यक्ष गोरख लाल यादव कहते हैं कि हमारे मानदेय पर ही हमारा परिवार टिका है। हमारे बच्चे दशहरा, दीपावली और छठ महापर्व कैसे मनाएंगे? यही हाल सरकारी अनुदान से चलने वाले कॉलेज के प्राध्यापकों और कर्मचारियों का है। नियमितीकरण की मांग को लेकर वे वर्षों से गुहार लगाते रहे हैं। ऐसे ही एक अनुदान प्राप्त कॉलेज के प्राध्यापक डॉ रामनाथ

चौधरी कहते हैं कि 'जवानी में कॉलेज में ज्वाइन किया था, बुढ़ापा आ गया। पूरा वेतन अभाव में बीता। कभी समय से वेतन नहीं मिला। 'बिहार के बेरोजगार अपनी मांगों को लेकर पटना आते हैं तो पुलिस डंडे से उनका सिर फोड़ देती है। लोगबाग निराश और हताश हैं। बिहार देश का गरीब राज्य है। रोजगार का साधन नहीं होने से राज्य के लोग पलायन को मजबूर हैं। राज्य की अधिकांश आबादी 5 किलो अनाज के भरोसे है। फिर भी नेता हकीकत से इतर लोगों को सब्जबाग दिखाने से बाज नहीं आते।

हमाम में सभी नंगे

ऐसा भी नहीं है कि बिहारवासियों को अकेले नीतीश कुमार ही सब्जबाग दिखा रहे हैं। मुझे कहने दीजिए कि इस मामले में हमाम में सभी नंगे हैं। प्रधानमंत्री इस साल अब तक सात बार बिहार आ चुके हैं। वह जब भी आते हैं हजारों करोड़ की घोषणाएं कर जाते हैं। वर्ष 2015 के विधानसभा चुनाव के दौरान आरा की एक चुनावी सभा में उन्होंने केंद्र से 125 लाख करोड़ का पैकेज बिहार को देने की घोषणा की थी। 2022 में भाजपा से अलग होने के बाद नीतीश कुमार ने ही कई मौकों पर कहा था कि प्रधानमंत्री की घोषणाएं ढपोरशंखी थीं। यानी प्रधानमंत्री ने जितना बोला था उतनी रकम नहीं मिली। अब मिल जाएगी, इसकी गारंटी कौन लेगा? शायद इसीलिए प्रधानमंत्री के बिहार आगमन पर राजद सुप्रीमो लालू यादव गाढ़े-ब-गाढ़े सोशल मीडिया पर कहते रहते हैं कि 'साहेब, अगली बार जुमला सुनाने कब आइएगा।'

जनता को सब्जबाग दिखाने में महागठबंधन के नेता भी कम नहीं हैं। हालांकि बिहार में अभी तक किसी पार्टी ने चुनावी घोषणा-पत्र जारी नहीं किया है। फिर भी समय-समय पर विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव सरकार बनने पर माई-बहन मान योजना के तहत राज्य की हर महिला को 2500 रुपये प्रतिमाह देने, वृद्धावस्था और विधवा पेंशन की राशि 1500 रुपये करने, लाखों बेरोजगारों को नौकरी और रोजगार देने, मेडिकल, इंजीनियरिंग और तकनीकी की पढ़ाई कर रही छात्राओं की फीस माफ करने अथवा 75 प्रतिशत अनुदान देने, राज्य की लड़कियों को पढ़ाई के दौरान बस-ट्रेन में मुफ्त यात्रा की सुविधा देने की बात करते रहे हैं। कांग्रेस और वामदल भी तेजस्वी के सुर में सुर मिलाते रहते हैं।



सब्जबाग दिखाने में पीके भी पीछे नहीं

बिहार की सियासत में तीसरा कोण बनने को आतुर प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी को भी मुफ्त की योजनाओं से परहेज नहीं हैं। प्रशांत किशोर पुराने चुनावी रणनीतिकार रहे हैं। वह जानते-समझते हैं कि जनता को बिना सब्जबाग दिखाये बात नहीं बनेगी। इसीलिए वह 'परिवार लाभ कार्ड' बनाने की बात करते हैं। इसके तहत प्रत्येक परिवार को प्रति माह 20,000 हजार रुपये की सहायता देने की बात करते हैं। इसमें बिहार में ही रोजगार के जरिये प्रत्येक बेरोजगार को 12 हजार रुपये वेतन देने, घर के बुजुर्ग, दिव्यांग अथवा विधवा को हर महीने 2 हजार रुपये, नकदी फसलों के लिए किसानों को 2500 रुपये प्रति महीना देने, महिलाओं को 4 फीसदी व्याज पर पांच लाख का कर्ज देने (इससे हर माह 2500 रुपये की व्याज बचत होगी) और गरीब परिवार के स्कूली बच्चों को शिक्षा के लिए प्रति माह एक हजार रुपये देने की बात करते हैं। दरअसल, प्रशांत का पूरा जोर राज्य से पलायन रोकने पर है। उनका कहना है कि यदि बिहार के मेधावी पलायन नहीं करेंगे, तभी बिहार की बदहाली दूर होगी। इसके लिए बिहार में ही बुनियादी सुविधाएं बढ़ाने की जरूरत है।

गौरतलब है कि महाराष्ट्र, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और हरियाणा में खैरात की योजनाएं सरकार बनाने में काफी कारगर रही हैं। देखना दिलचस्प होगा कि बिहार के लोग किसके झांसे में फंसे हैं या बचते हैं।



बहरहाल, बिहार में राजनीतिक सरगर्मी चरम पर है। गांव-गली से लेकर चौक-चौराहों पर सियासी चर्चा आम है। पिछले दिनों राजद ने बिहार अधिकार यात्रा निकाली थी जो दस जिलों जहानाबाद, नालंदा, मुंगेर, बेगुसराय, मधेपुरा, खगड़िया, सुपौल, समस्तीपुर, वैशाली होते हुए पटना में समाप्त हुई। फिलहाल भाजपा की 'चलो जीते हैं' रथयात्रा निकाली जा रही है। इसमें लोगों को प्रधानमंत्री के जीवन पर आधारित फिल्म दिखाई जा रही है। पिछले दिनों बाढ़ में इस रथयात्रा पर लोगों ने गुस्से में पथराव कर दिया था। दरभंगा और वैशाली में प्रधानमंत्री की मां को गाली देने का मामला भी बिहार में तूल पकड़ रहा है। और तो और, 15 सितंबर को पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन करने गए प्रधानमंत्री ने खुद इस मुद्दे को धार दी। कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार कहते हैं कि सभ्य समाज में गाली-गलौज ठीक बात नहीं है। लेकिन मैं पूछते-पूछते थक गया, भाजपा का कोई नेता अथवा मोडिया का कोई मित्र यह बताने को तैयार नहीं है कि सिरफिरे ने प्रधानमंत्री की माता जी को कौन सी गाली दी है।

एक कविता



डॉ. शोभा भंडारी

लक्ष्य को पाना है

नव युवाशक्ति और नवजागरण का जमाना है,
हौंसला और हिम्मत लिए, लक्ष्य को पाना है।
जुनून और जज्बे को साथ रखकर,
उद्देश्य को अवश्य ही पाना है,
लक्ष्य की ओर निरंतर कदम बढ़ाना है,
चुनौतियों को जिंदादिली के साथ हराना है॥

मददगार बने पुरानी पीढ़ी इस अनुष्ठान में,
क्योंकि एक महायज्ञ है इनकी संघर्ष यात्रा,
मिलकर सभी को सहायता और
मार्गदर्शन का हाथ बढ़ाना है।
जोश और उत्साह का शंखनाद कर,
उनके बढ़ते हुए कदमों को सराहना है,
ये समय नीचे गिराने और नीचा दिखाने का
नहीं है,
ये तो ऊंचा उठाने का और इतिहास बनाने का
फ़साना है॥

कितने ही सुनहरे ख्वाब सजाने हैं,
उम्मीदों को परवान चढ़ाने के,
अफसाने बनाने हैं।
ऊंची उड़ान भरने दो हर युवक और युवती को,
हमारे अनुभवों की रंगोली से,
उनको जीवन के कैनवास में रंग भरने दो,
आगे ही आगे बढ़ने की ऊर्जा
और सामर्थ्य दो।
क्योंकि लक्ष्य को पाना तो अवश्यभावी है,
नवजागरण की अलख को जगाना,
संभावनी है ॥॥

सब्र की परीक्षा लेना अनुचित

नेपाल में हालिया हिंसक विद्रोह ने पूरे विश्व का ध्यान खींचा है। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और भाई-भतीजावाद से उपजे असंतोष ने तब ज्वालामुखी का रूप ले लिया जब ओली सरकार ने सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाया। युवाओं के सब्र का बांध टूटा और देखते ही देखते सत्ता की नींव हिल गई। यह आंदोलन साबित करता है कि जनता की आवाज दबाने से राजनीतिक अस्थिरता ही बढ़ती है। नेपाल का संकट केवल उसकी सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत सहित पड़ोसी देशों के लिए भी चेतावनी है कि लोकतंत्र में लोगों के अधिकारों की अनदेखी कभी भी विस्फोटक स्थिति पैदा कर सकती है।



राजेश कसेरा
वरिष्ठ पत्रकार एवं
राजनीतिक विश्लेषक

भारत के भरोसेमंद पड़ोसी देश नेपाल में जेन-जी के हिंसक आंदोलन के बाद जब सरकार का तख्तापलट हुआ तो लोकतांत्रिक देशों में अलर्ट का सायरन बज उठा। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, राजनीति में भाई-भतीजावाद (नेपोटिज्म) जैसे मुद्दों के साथ सरकार के खिलाफ असंतोष की भावना का भड़कना बड़े कारण रहे। पहले से गुस्से को दबाकर बैठे वहां के युवाओं के सब्र का बांध केपी ओली शर्मा सरकार ने सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाकर तोड़ दिया। युवाओं के आंदोलन के कुछ ही दिनों के भीतर ओली सरकार की ताकत को ढहाकर उनको सत्ता से बाहर कर दिया। नेपाल में सरकार के खिलाफ विद्रोह इतनी तेजी से असर दिखाएगा, इसकी कल्पना तक नहीं की होगी। सरकार और उसका इंटरनेट जैस नेटवर्क ये भांप तक नहीं पाया कि देश के युवाओं के दिलों में कितना

आक्रोश दबा है, जबकि ओली सरकार के ऊपर लंबे समय से नेपोटिज्म के आरोप लग रहे थे। कई नेताओं और उनके परिवारों की शान-ओ-शौकत लगातार वहां के सोशल मीडिया पर उजागर हो रही थी। बकायदा नेपो बेबी नामक सोशल कैम्पेन भी नेपाल में ट्रेंड हुआ, इसके बावजूद सरकार युवाओं की नब्ज को पकड़ नहीं पाई। जनरेशन-जी के इस अभियान की तुलना भले बांग्लादेश, श्रीलंका, हांगकांग, थाइलैण्ड या सीरिया के आंदोलनों से की गई, लेकिन यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह आंदोलन बाहरी प्रभाव से कम प्रेरित और आंतरिक नेपाली नेताओं की ओर से छेड़ा गया आंदोलन ज्यादा था। सरकार का गिरना जनता की भारी हताशा की क्रांति था, जो अवसरों की कमी और पक्षपात वाली राजनीति से उपजा था।

सोशल मीडिया ने इस विद्रोह को

भड़काने का काम किया। प्रतिबंध लगने से काफी पहले युवा सरकार के खिलाफ अपना गुस्सा सोशल प्लेटफॉर्म पर निकाल रहे थे। देखा जाए तो उन्होंने युवाओं को गंभीरता से ही नहीं लिया। उनको लगा कि इनकी अभिव्यक्ति की आजादी के कोई मायने नहीं हैं। लाखों युवाओं के मन में दबी इस चिंगारी को आखिर सोशल मीडिया पर लगाए गए बैन ने इतनी तेज हवा दी की सरकार का सिंहासन डोल गया। केवल दो दिन में प्रधानमंत्री और उनके बड़े मंत्रियों को इस्तीफा देकर जान बचाने के लिए सुरक्षित ठिकानों को तलाशना पड़ा। युवाओं के क्रोध का भाजक पूर्व राष्ट्रध्यक्षों और उनके परिवार को बनना पड़ा। नेपाल के इस विद्रोह ने दुनिया को भी चौंका दिया और बता दिया कि हवा का रुख बदलने में देर नहीं लगी।

लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय असंतुलन से जूझ रहा नेपाल



भारत और चीन के बीच बसा करीब तीन करोड़ की आबादी वाला नेपाल कई सालों से राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा है। साल 2015 में नया संविधान लागू होने के बाद से वहां आठ सरकारें बन चुकी हैं। सरकारें ज्यादातर सीपीएन-यूएमएल के ओली, नेपाली कांग्रेस के शेर बहादुर देउबा और सीपीएन (माओवादी केंद्र) के पुष्प कमल दहल के इर्द-गिर्द ही घूमती रहीं। नेपाल की राजनीति का बड़ा हिस्सा वामपंथी और राजतंत्र का समर्थन करने वाले दावा करते रहे हैं कि भारत, अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसी विदेशी ताकतों ने नेपाल के राजनीतिक बदलावों के पीछे हैं। हाल में चीन भी विदेशी ताकतों की इस सूची में शामिल हो गया और उसकी पारंपरिक शांत कूटनीति की छवि कमजोर पड़ गई। हालांकि नेपाल हमेशा से गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को अपनाता आया है। यह सिद्धांत राजा पृथ्वीनारायण शाह ने 1768 में आधुनिक नेपाल को एकजुट करने के लिए अपनाया था। इस नीति का सीधा-सा सिद्धांत है कि सबसे दोस्ती और दुश्मनी किसी से नहीं। देश के विकास कार्यों में सभी का कूटनीतिक सहयोग, खासतौर पर भारत और चीन का सहयोग सुनिश्चित करना इसकी मंशा है। अमेरिका के व्यापक वैश्विक प्रभाव के कारण नेपाल उसको अपना तीसरा पड़ोसी मानता आया है। भारत, चीन और अमेरिका तीनों की नेपाल में गहरी दिलचस्पी रहती है और वे देश की राजनीति में अचानक आने वाले बदलावों को लेकर चिंतित रहते हैं। राजनीतिक रूप से भी नेपाल की स्थिति जटिल है। जुलाई 2024 में केपी ओली सरकार बनने के बाद देश का झुकाव चीन की ओर बढ़ा, जबकि भारत के साथ सीमा विवाद की वजह से आर्थिक दबाव बढ़ा। इस रुख को लेकर जनता में गहरी नाराजगी बढ़ी। भ्रष्टाचार और राजनीतिक अस्थिरता के चलते नेपाल में लोकतंत्र खत्म कर राजशाही वापस लाने की मांग भी तेज हुई। पिछले पांच साल में तीन बार सरकार बदली जा चुकी है और हालिया हिंसा के बाद राजनीतिक संकट और बढ़ गया था।

भ्रष्टाचार-बेरोजगारी से फूटा युवाओं का गुस्सा



भ्रष्टाचार के ढेर सारे मामले युवाओं के गुस्से का बड़ा कारण बने। पिछले चार सालों में नेपाल में कई बड़े घोटाले सामने आए। इनमें गिरि बंधु भूमि स्वैप घोटाला (54,600 करोड़), ओरिएंटल कॉरपोरेटिव घोटाला (13,600 करोड़) और 2024 का कॉरपोरेटिव घोटाला (69,600 करोड़) जैसे संगीन मामले शामिल हैं। इन बड़े घोटालों ने आम जनता खासकर युवाओं का विश्वास सरकार से पूरी तरह तोड़ दिया। इसके साथ ही नेपाल में बेरोजगारी की समस्या भी विकराल बनी हुई है। वर्तमान में 10.71 प्रतिशत युवा बेरोजगार हैं, जबकि महंगाई दर 5.2 प्रतिशत तक पहुंच गई। कुल संपत्ति का 56 प्रतिशत हिस्सा केवल 20 प्रतिशत लोगों के पास है, जिनमें कई राजनेता शामिल हैं। 2022 में भारत के एक और पड़ोसी मुल्क श्रीलंका को इस उथल-पुथल का सामना करना पड़ा था। वहां खाने, ईंधन और बिजली की कमी हो गई थी। महंगाई बहुत बढ़ गई थी। लोगों का सब्र टूट गया और वे सड़कों पर उतर आए। राजपक्षे परिवार को सत्ता छोड़नी पड़ी, वहां भी भ्रष्टाचार और अवसरों की कमी मुख्य मुद्दे थे। इसके बाद साल 2024 में बांग्लादेश में भी कुछ ऐसा ही हुआ। सरकार ने 1971 की लड़ाई में मदद करने वाले लोगों के बच्चों के लिए 30 प्रतिशत कोटा फिर से शुरू कर दिया। लोगों को लगा कि यह गलत है, क्योंकि इन परिवारों के लोग पहले से अमीर थे। इससे आम लोगों के लिए नौकरी के अवसर कम हो गए। विरोध प्रदर्शन हुए और शेख हसीना की सरकार गिर गई, उन्हें देश भारत में शरण लेनी पड़ी।

भारत और चीन के बीच फंसा नेपाल

नेपाल और भारत के बीच गहरे सांस्कृतिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंध रहे हैं। भारत का नेपाल के साथ 1751 किलोमीटर लंबा खुला बॉर्डर भी है। देश के पांच राज्यों उत्तराप्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल और सिक्किम की सीमाएं नेपाल से मिलती हैं। इन राज्यों में नेपाल के साथ कई छोटे-बड़े बॉर्डर प्वाइंट्स हैं, जिनसे लोग रोज आना-जाना करते हैं। भौगोलिक और सांस्कृतिक नजदीकी की वजह से नेपाल में अस्थिरता का असर सबसे पहले भारत पर पड़ता है। इधर, नेपाल का उत्तरी बॉर्डर चीन के स्थायित्व क्षेत्र तिब्बत से लगता है और चीन लगातार इस बात पर जोर देता आया कि नेपाल वन चाइना पॉलिसी का पालन करे और अपने यहां किसी तरह की चीन-विरोधी गतिविधियों को रोकें। नेपाल भी हमेशा से इस सिद्धांत की पुष्टि करता आया और तिब्बत, हांगकांग, मकाओ और ताइवान को चीन का अभिन्न हिस्सा मानता रहा।



पश्चिमी देशों की नेपाल में बढ़ती रुचि

नेपाल साल 2017 में चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) से जुड़ा। इसका उद्देश्य रेल, सड़क, डिजिटल और ऊर्जा नेटवर्क के जरिए दोनों देशों के बीच हिमालय पार करने वाले बहुआयामी संपर्क बनाना था। इसके पीछे नेपाल की विदेश नीति का मकसद यही रहा कि वह तीनों क्षेत्रीय और वैश्विक ताकतों के साथ संतुलन बनाए रख सके। चीन के लिए स्थिर और शांत नेपाल के दो फायदे हैं। पहला तिब्बत की सुरक्षा सुनिश्चित करना और दूसरा छोटे देशों को चीन की वैश्विक नीतियों के साथ खड़ा करना। इधर, नेपाल अपने नीतिगत सिद्धांत के तहत अमेरिका और उसके सहयोगी देशों, यूरोपीय संघ, जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया के साथ भी रिश्ते मजबूत रखना चाहता है। ये देश नेपाल की नीतियों को सरकारी कार्यक्रमों और सिविल सोसायटी फंडिंग के जरिए समर्थन देते हैं। हाल में अमेरिका ने नेपाल को 530 मिलियन डॉलर की मिलेनियम चैलेंज कॉरपोरेशन ग्रांट दी ताकि देश की ऊर्जा व्यवस्था और सड़क ढांचे को बेहतर बनाया जा सके।



भारत को भी सावधान रहने की जरूरत

नेपाल के आंदोलन से भारत समेत बाकी देशों को सीखने के लिए यह है कि देश की जनता की उम्मीदों को मत कुचलो। उनके मौलिक अधिकारों का हनन मत करो। वरना नेपाल जैसा आंदोलन कभी भी भड़क सकता है। हालांकि आंदोलनकारियों पर जिस तरह की हिंसा हुई और बाद में प्रदर्शनकारियों ने जिस तरह की हिंसा की, उसका कोई समर्थन नहीं कर सकता, लेकिन यह आंदोलन सबके लिए बड़ा सबक है। हालांकि भारत में सत्ताधारी और उनके समर्थकों को लग रहा है कि नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देश उनकी तुलना में अपेक्षाकृत छोटे देश हैं। वहां आंदोलन खड़ा कर सरकारें बदली जा सकती हैं, लेकिन भारत में नहीं। लेकिन ऐसा सोचने वाले बड़ी भूल कर रहे हैं। इसी देश ने अंग्रेजों जैसी ताकतवर शक्ति को इस देश से भगाया। ताकतवर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को इमरजेंसी हटाने पर विवश किया। आज भी देश के विभिन्न हिस्सों में अपने-अपने हकों के लिए आंदोलन हो रहे हैं। लेह-लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने को लेकर हाल ही बड़ा बवाल हुआ है। इसमें चार युवाओं की मौत हो गई तो कई गंभीर घायल हो गए। इस हिंसक आंदोलन की अगुवाई भी युवाओं ने की। ये अलग बात है कि इसके पीछे कोई राजनीतिक षड्यंत्र था या देश को अस्थिर करने की साजिश। पर ये बात साफ है कि युवाओं को आगे करकर आग भड़काने का काम तो किया ही जा रहा है। इसके अलावा बिहार में चुनावी सर्वे को लेकर, महाराष्ट्र में मराठा आंदोलन को लेकर, असम

में आंदोलन चल रहा है। मणिपुर के हालात छुपे नहीं हैं। दक्षिण के राज्यों में जनगणना को लेकर अलग तरह की बेचैनी है। इसलिए भारतीय सत्ता पक्ष को नेपाल के आंदोलन से सबक लेने की जरूरत है। लोगों के अधिकारों का सम्मान करने की जरूरत है। अभी हालात यह है कि आप अपनी मांगों सरकार के सामने रखते हैं तो आपकी उपेक्षा कर दी जाती है। सवाल पूछते हैं तो देशद्रोही घोषित कर दिया जाता है। शांतिपूर्ण ढंग से धरना प्रदर्शन करना चाहते हैं तो इजाजत नहीं दी जाती। दी जाती है तो ऐसी जगह जहां लोगों का पहुंचना ही मुश्किल होता है। प्रधानमंत्री का कहीं दौरा होता है तो पूरे शहर को बंधक बना लिया जाता है और विपक्षी नेताओं को हाउस अरेस्ट कर लिया जाता है। हाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब अपने चुनावी क्षेत्र वाराणसी में पहुंचे तो कांग्रेस के सारे नेताओं को हाउस अरेस्ट कर लिया गया, ताकि वे उनका विरोध न कर सकें। आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह कश्मीर में प्रेस कॉन्फ्रेंस करना चाहते थे, उन्हें इसकी इजाजत नहीं दी गई। उन्हें हाउस अरेस्ट कर दिया गया। सरकार के खिलाफ अगर कोई पत्रकार या आम आदमी सोशल मीडिया पर कुछ भी लिखता है तो उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे जेल के सीखचों के भीतर कर दिया जाता है। भारत सरकार को विपक्ष और आम लोगों को भी उनकी बात कहने का अवसर देना चाहिए, ताकि उनके मन का गुबार निकलता रहे। कुछ ऐसा न हो कि सब का बांध टूट जाए और लद्दाख के बाद कोई और आंदोलन खड़ा हो जाए।

पड़ोसियों के बुरे हालात से सीख लेनी होगी

भारत के तीन मजबूत साथी और पड़ोसी देशों श्रीलंका, बांग्लादेश या नेपाल में हुए हिंसक आंदोलन में एक बात समान दिखी। यानी तीनों पड़ोसियों के यहां बवाल तभी चरम पर आया, जब वहां के दैनिक जीवन को छूने या बिगाड़ने का दुस्साहस सरकारों की ओर से किया गया। लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी के प्रभावित होते ही विरोध की आग भड़क गई। भारत की बड़ी अर्थव्यवस्था है और लोगों की जीवनशैली पड़ोसी और दूसरे देशों से बेहतर है। हमारे पास अपनी बात कहने के कई तरीके हैं, जैसे चुनाव, सोशल मीडिया और अदालतें। खाने-पीने की चीजों की कमी होने की आशंकाएं भी कम हैं। लेकिन स्थानीय स्तर पर दिक्कतें हो सकती हैं। अगर नॉर्थ-ईस्ट के लोगों को लगेगा कि उनकी कोई परवाह नहीं कर रहा है तो वहां भी विरोध हो सकता है। जैसा लद्दाख में अचानक घटा। अहिंसक आंदोलन हिंसक हो गया। ऐसे में सरकार को सबसे ज्यादा देश को आर्थिक मोर्चे पर सशक्त रखना होगा। भारत की जीडीपी ग्रोथ 6 प्रतिशत से ऊपर रहनी चाहिए, ताकि लोगों को ज्यादा मौके मिलें। इसके साथ ही विकास के साथ ये भी समझना आवश्यक है कि आम लोगों की आय भी बढ़ रही है या नहीं। समानता के अवसर आम आदमी को मजबूत करने का करेंगे। इसके अलावा खाने-पीने की चीजें और इंटरनेट हमेशा उपलब्ध रहने चाहिए। अस्थिर पड़ोसी भारत के लिए अच्छे नहीं हैं। क्षेत्र की सबसे बड़ी शक्ति होने के नाते भारत को पड़ोसी मुल्कों में स्थिर रहने का प्रयास करना चाहिए। हमें अपने पड़ोसियों की मदद करनी चाहिए और उनसे सीखना चाहिए, ताकि भारत में कभी ऐसी स्थिति न आए।

भारतीय संविधान: निर्माण की यशस्वी गाथा

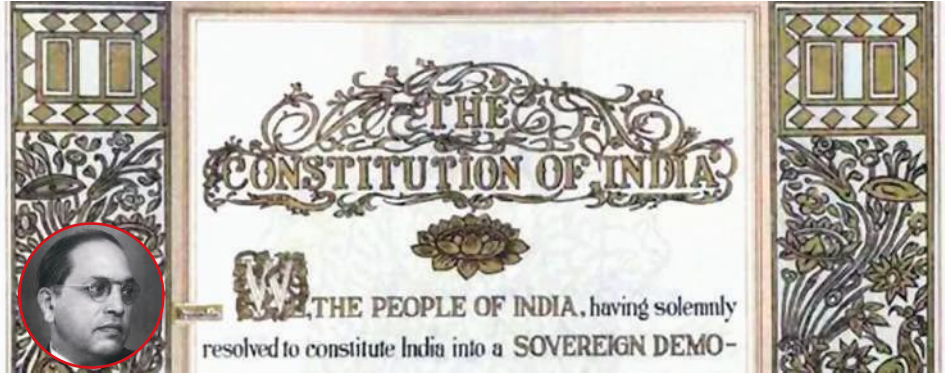
यह आलेख भारतीय संविधान के निर्माण की ऐतिहासिक और प्रेरणादायक यात्रा का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करता है। यह बताता है कि कैसे भारत की आजादी के बाद एक स्वतंत्र, लोकतांत्रिक और समावेशी राष्ट्र की नींव रखी गई, जो आज 140 करोड़ भारतीयों की आशाओं और सपनों का दर्पण है।



प्रोफेसर (डॉ.) एम.के. भंडारी

वरिष्ठ आचार्य, विधि तथा तकनीकी शोध एवं शिक्षा विशेषज्ञ

लेख की शुरुआत पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रसिद्ध "ट्रिस्ट विद डेस्टिनी" (भाग्य के साथ गठबंधन) संबोधन से होती है, जो उन्होंने 14-15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को संविधान सभा में दिया था। इस संबोधन में उन्होंने भारत को पुराने युग से नए युग में कदम रखने वाला बताया और सभी से देश, उसके लोगों और मानवता की सेवा का संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि भारत का भविष्य संघर्ष का है, जिसमें गरीबी, अज्ञानता और असमानता को खत्म करना है।



प्रारूप समिति और डॉ. बी.आर. अंबेडकर की भूमिका

- संविधान निर्माण में प्रारूप समिति (Drafting Committee) की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण थी, जिसके अध्यक्ष डॉ. बी.आर. अम्बेडकर थे। उन्हें भारतीय संविधान का प्रमुख शिल्पी माना जाता है। समिति ने विभिन्न उप-समितियों की सिफारिशों और जनता के सुझावों को ध्यान में रखते हुए संविधान का अंतिम प्रारूप तैयार किया।
- इस प्रक्रिया के दौरान कई चुनौतियां थीं, जिनमें भारत की विशाल विविधता, विभाजन और सांप्रदायिक हिंसा शामिल थी। इन चुनौतियों के बावजूद, संविधान सभा ने एक ऐसा ढांचा तैयार किया जो सभी वर्गों के हितों को प्रतिनिधित्व दे सके।

संविधान सभा का गठन और कार्यप्रणाली

- संविधान निर्माण की प्रक्रिया की शुरुआत कैबिनेट मिशन योजना (1946) के तहत हुई, जिसके द्वारा संविधान सभा का गठन किया गया। इस सभा में 389 सदस्य थे, जिनमें से 292 ब्रिटिश प्रान्तों से, 93 रियासतों से और 4 केंद्र शासित प्रदेशों से थे। भारत के विभाजन के बाद सदस्यों की संख्या 299 रह गई।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर, 1946 को हुई, जिसमें डॉ. सचिदानंद सिन्हा को अस्थायी अध्यक्ष चुना गया। इसके दो दिन बाद, 11 दिसंबर, 1946 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद को स्थायी अध्यक्ष बनाया गया। सभा ने विश्व के कई प्रमुख संविधानों का गहन अध्ययन किया और 2 वर्ष, 11 माह और 18 दिन में संविधान का निर्माण पूरा किया। इस दौरान कुल 11 सत्र और 165 बैठकें हुईं।

रोचक तथ्य और संविधान की विशिष्टताएं

- आलेख में संविधान निर्माण से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों का भी उल्लेख है:
- **हिंदी राजभाषा पर बहस (1949)** : संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने पर तीखी बहस हुई, जिसके बाद हिंदी को राजभाषा और अंग्रेजी को सहायक भाषा के रूप में जारी रखा गया।
- **संशोधन और बहस** : मूल प्रारूप पर 2,473 संशोधनों पर गहन बहस हुई, जो यह दर्शाता है कि यह एक अत्यंत लोकतांत्रिक प्रक्रिया थी।
- **हस्तलिखित संविधान** : प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की इच्छा पर यह संविधान हस्तलिखित बनाया गया। इसका लेखन प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने किया था। उन्होंने 251 पृष्ठों को इटैलिक शैली में लिखा, जिसमें 432 पेन-निब्स का इस्तेमाल हुआ।
- **कलात्मक सजावट** : संविधान के हर पृष्ठ की सीमाओं को शांति निकेतन के प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस और उनके शिष्यों ने सजाया। इसमें मोहनजो-दड़ो, महाभारत, रामायण और अजंता-एलोरा जैसी भारतीय संस्कृति की छवियां शामिल हैं।
- **संरक्षण** : मूल कॉपी का वजन 3.75 किलोग्राम है और इसे हीलियम से भरे विशेष संदूक में संसद पुस्तकालय में सुरक्षित रखा गया है।
- **अनुच्छेद और अनुसूचियां** : मूल संविधान (26 नवंबर 1949) में 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियां थीं। वर्तमान में, सितंबर 2025 तक, इसमें 448 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियां हैं, और 106 संशोधन हो चुके हैं।

उद्देश्य प्रस्ताव

- लेख में पंडित नेहरू द्वारा 13 दिसंबर 1946 को प्रस्तुत किए गए उद्देश्य प्रस्ताव का भी हिंदी अनुवाद दिया गया है। यह प्रस्ताव संविधान की मूल भावना को दर्शाता है, जिसमें भारत को एक स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य बनाना, सभी नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता की गारंटी देना, अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा करना, और भारत को विश्व में एक सम्मानित स्थान दिलाना शामिल था।
- आलेख का सार यह है कि भारतीय संविधान का निर्माण केवल एक कानूनी प्रक्रिया नहीं, बल्कि भारत की एकता, विविधता और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। यह एक ऐसा दस्तावेज है जो समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित एक ऐसे भारत के सपने को साकार करता है जो आज विश्व भर में लोकतंत्र का एक आदर्श मॉडल है। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि एकता और सहयोग से बड़ी से बड़ी चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।

माउंट आबू से इंग्लैंड तक : कर्नल टॉड की राजस्थान प्रेम कहानी



बलवंत राज मेहरा
वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार

कर्नल जेम्स टॉड, यह नाम राजस्थान के इतिहास और संस्कृति में किसी किंवदंती की तरह गूंजता है। 1782 में जन्मे और 1835 में इस संसार से विदा हुए टॉड केवल पचपन वर्षों तक जिए, लेकिन इस छोटे से जीवन में उन्होंने राजस्थान को जिस रोमांटिक और गौरवशाली रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया, वह आज भी अमिट है। अंग्रेज होते हुए भी उनका दिल बार-बार राजस्थान की धड़कनों के साथ धड़कता था। वे सैनिक थे, राजनयिक थे, लेकिन सबसे बढ़कर राजस्थान के पहले “प्रेमी” थे, जिन्होंने यहां की वीरगाथाओं, लोककथाओं और संस्कृति को वैश्विक मंच तक पहुंचाया।

1799 में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में आए टॉड 1818 में मेवाड़ के राजनीतिक एजेंट बने। यही से उनका राजस्थान-प्रेम आकार लेने लगा। वे केवल राजनीतिक समझौतों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि गांव-गांव घूमकर, पुरानी वंशावलियों को सुनकर और लोकगीतों को संकलित कर, राजस्थान की आत्मा तक पहुंचे। वे न सिर्फ देख रहे थे, बल्कि महसूस कर रहे थे। यही संवेदना उनकी लेखनी में उतरकर बाद में *Annals and Antiquities of Rajasthan* और *Travels in Western India* जैसी कालजयी कृतियों में बदल गई।

टॉड को सबसे पहले मोह लिया माउंट आबू ने। राजस्थान का यह पर्वतीय तीर्थ उनके लिए सिर्फ एक भूगोल नहीं था, बल्कि अपने देश इंग्लैंड की याद का सजीव रूप था। वहां की हरियाली, झरनों की मधुर ध्वनि, बादलों का आलिंगन और शांति। सब कुछ उन्हें अपने ब्रिटेन की पहाड़ियों की याद दिलाता। वे लिखते हैं कि आबू की वादियों में उतरते ही “मनुष्य को घर की याद नहीं सताती, क्योंकि यह तो स्वयं घर जैसा है।” यह कथन केवल तुलना नहीं थी, बल्कि उनके हृदय का वह गहरा भाव था जिसने राजस्थान को हमेशा के लिए उनकी स्मृतियों में बसाया।

टॉड का लेखन महज यात्रा-वृत्तांत नहीं, बल्कि आत्मीय अनुभवों का साहित्य है। *Travels in Western India* इसी संवेदनशील दृष्टि का नतीजा है। इस पुस्तक में उन्होंने अपनी



यात्राओं का वर्णन किया, जिनमें माउंट आबू विशेष रूप से केंद्र में रहा। रोचक बात यह है कि इस कृति को उन्होंने मिसेज कर्नल विलियम ब्लेअर को समर्पित किया। ब्लेअर स्कॉटलैंड की एक नामी चित्रकार थीं, जिन्होंने माउंट आबू और अन्य स्थलों के सुंदर चित्र बनाए। टॉड इन चित्रों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने लिखा, “मिसेज ब्लेअर ने आबू को इंग्लैंड ले आई।” इसका अर्थ यह था कि ब्लेअर के चित्रों ने आबू की प्राकृतिक और सांस्कृतिक सुंदरता को इंग्लैंड तक पहुंचाया। यह समर्पण न केवल व्यक्तिगत सम्मान का प्रतीक था, बल्कि यह भी दर्शाता है कि टॉड के लिए राजस्थान केवल भूमि नहीं, बल्कि कला, सौंदर्य और संवेदनाओं का स्रोत था।

राजस्थान में टॉड का योगदान अमूल्य है। उन्होंने मेवाड़ और मारवाड़ की राजवंशीय वंशावलियों को एकत्रित किया, लोककथाओं और गीतों को लिखित रूप दिया और वीरता की उन गाथाओं को संरक्षित किया जो केवल मौखिक परंपरा में जीवित थीं। यदि टॉड न होते तो संभव है कि कई किंवदंतियां और ऐतिहासिक तथ्य आने वाली पीढ़ियों तक न पहुंच पाते। उनकी *Annals and Antiquities of Rajasthan* ने पूरे यूरोप को यह विश्वास दिलाया कि राजस्थान सिर्फ रेगिस्तान नहीं, बल्कि साहस, संस्कृति और कला का जीवित भंडार है।

■ माउंट आबू की खूबसूरती को देखकर टॉड ने इंग्लैंड को याद किया, लेकिन राजस्थान की वीरता को देखकर वे भारत की आत्मा से जुड़ गए। उनके लिए चित्तौड़ का किला केवल एक पत्थरों का ढेर नहीं था, बल्कि वह एक जीवित प्रतीक था स्त्रियों के जौहर, पुरुषों की शौर्यगाथाओं और राष्ट्र की अस्मिता का। वे मानते थे कि भारत का गौरव राजस्थान के शौर्य में सजीव है। इसीलिए उनके लेखन में बार-बार मेवाड़ की स्वतंत्रता, राणा की प्रतिष्ठा और वीरों की कथाएं प्रमुखता से आती हैं।

■ बेशक, उनके लेखन में औपनिवेशिक दृष्टि और कहीं-कहीं अतिशयोक्ति भी झलकती है। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि टॉड ने स्थानीय गाथाओं को रोमांटिक रंग दे दिया, जिससे इतिहास और कल्पना का मिश्रण हो गया। लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि यदि टॉड न होते, तो राजस्थान का सांस्कृतिक परिचय विश्व मंच तक इतनी जीवंतता से न पहुंच पाता। यही कारण है कि पद्मश्री आचार्य मुनि जिनविजय जैसे गंभीर विद्वान भी स्वीकार करते हैं कि टॉड का लेखन राजस्थान इतिहास के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।

■ टॉड ने राजस्थान की संस्कृति को न केवल शब्दों में उकेरा, बल्कि उसे अपने जीवन का हिस्सा बना लिया। उनके दिल में यह भूमि इतनी गहरी उतर चुकी थी कि उन्होंने अपने साहित्यिक योगदान के जरिए भारत और इंग्लैंड के बीच एक पुल खड़ा कर दिया। वह पुल, जो दो देशों के बीच केवल राजनीति या व्यापार का नहीं था, बल्कि संवेदनाओं और संस्कृति का था।

■ आज जब हम राजस्थान पर्यटन की बात करते हैं, या उसकी संस्कृति और इतिहास को वैश्विक पहचान दिलाने की कोशिश करते हैं, तो यह मानना ही होगा कि इस यात्रा की शुरुआत टॉड जैसे लोगों ने ही की थी। वे भले ही औपनिवेशिक सत्ता का हिस्सा थे, लेकिन उनकी कलम ने राजस्थान को विजेता और विजित के समीकरण से अलग करके, गौरव और वैभव के रूप में चित्रित किया।

■ कर्नल जेम्स टॉड का जीवन और उनका लेखन एक सेतु है पश्चिम और पूर्व के बीच, औपनिवेशिक नजरिए और सांस्कृतिक सहानुभूति के बीच। माउंट आबू में बैठा वह अंग्रेज अफसर जब इंग्लैंड की यादों में खोकर राजस्थान की महिमा लिख रहा था, तब शायद उसे अंदाजा भी नहीं था कि उसकी कलम एक दिन राजस्थान के गौरव की अमर धरोहर बन जाएगी। यह धरोहर आज भी हमें याद दिलाती है कि इतिहास केवल तलवारों से नहीं लिखा जाता। कभी-कभी एक संवेदनशील कलम भी उसे अमर बना देती है।

भारत नौवीं बार एशिया का बादशाह

दुबई का दंगल भारत के नाम। यह सिर्फ एक खिताब नहीं, बल्कि चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान पर लगातार तीसरी फतह थी। जहां कुलदीप यादव की फिरकी ने पाक बल्लेबाजों को घुटने टेकने पर मजबूर किया, वहीं युवा तिलक वर्मा और शिवम दुबे ने कप्तान की खामोशी के बावजूद टीम को जीत की राह दिखाई। एशिया के ताज के जश्न में भी दिखी भारत की कूटनीतिक जीत, जब भारतीय टीम ने पाकिस्तानी अधिकारी के हाथों ट्रॉफी लेने से साफ इनकार कर दिया।



अजय अस्थाना
वरिष्ठ पत्रकार

दु बई इंटरनेशनल स्टेडियम में जैसे ही रिकू सिंह के बल्ले से विनिंग चौका निकला, पूरे भारत में जश्न का सैलाब उमड़ पड़ा। यह सिर्फ एक जीत नहीं थी, यह एशिया कप 2025 के फाइनल में चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान पर लगातार तीसरी फतह थी, जिसने यह साबित कर दिया कि क्रिकेट की इस सबसे बड़ी जंग में भारतीय टीम का दबदबा अटूट है।

यह मुकाबला सिर्फ क्रिकेट का नहीं, बल्कि भावनाओं का एक ऐसा तूफान था, जिसमें हर भारतीय दिल की धड़कन तेज थी। दबाव का शिखर, सामने पाकिस्तान, और दांव पर एशिया का ताज। इस रोमांचक मुकाबले को किसी भी खेल पत्रकार के लिए शब्दों में बयां करना एक चुनौती है।

जब कुलदीप की फिरकी ने नचाया

- टॉस जीतकर कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पहले गेंदबाजी का फैसला लिया। पाकिस्तान ने एक मजबूत शुरुआत की। सलामी बल्लेबाजों साहिबजादा फरहान (57 रन) और फखर जमान (46 रन), ने 84 रनों की टोस साझेदारी कर भारत के माथे पर एकबारगी चिंता की लकीरें खींच दी थीं। ऐसा लग रहा था कि पाकिस्तान आसानी से 180-190 का स्कोर पार कर लेगा।
- लेकिन फिर शुरू हुआ भारतीय स्पिन के जादूगर, कुलदीप यादव का 'ऑपरेशन क्लीनअप'। जिस तरह एक-एक करके कुलदीप ने पाकिस्तान के मध्यक्रम को अपनी फिरकी में फंसाया, वह देखने लायक था। उन्होंने सैम अयूब, सलमान अली आगा, शाहीन शाह अफरीदी और फहीम अशरफ जैसे बड़े शिकार किए। एक समय 114 रन पर 2 विकेट गंवाने वाली पाकिस्तान की टीम, कुलदीप (4/30) और तेज गेंदबाजों जसप्रीत बुमराह, वरुण चक्रवर्ती, और अक्षर पटेल (सभी 2-2 विकेट) के सामूहिक प्रहार के सामने 19.1 ओवर में सिर्फ 146 रन पर ढेर हो गई। आखिरी 8 विकेट सिर्फ 35 रन पर गिरना, यह बताता है कि भारतीय गेंदबाजी आक्रमण किस कदर घातक रहा।



‘तिलक’ और ‘दुबे’ ने लिखी जीत की स्क्रिप्ट

147 रनों का लक्ष्य टी-20 फाइनल में बड़ा नहीं था, लेकिन भारत की शुरुआत लड़खड़ा गई। पावरप्ले में ही भारत ने अपने 3 विकेट (अभिषेक, सूर्यकुमार और श्रेयस अय्यर) 36 रनों पर गंवा दिए। यहीं से शुरू हुई दो युवा योद्धाओं तिलक वर्मा और शिवम दुबे की कहानी। पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाले तिलक वर्मा ने एक छोर संभाला और दबाव को पूरी तरह खुद पर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने पहले संजू सैमसन (24 रन) के साथ 57 रनों की अहम साझेदारी की, और फिर शिवम दुबे (33 रन) के साथ मिलकर 60 रनों की मैच जिताऊ साझेदारी की। तिलक ने 53 गेंदों पर नाबाद 69 रन की हीरोइक पारी खेली। उनकी यह पारी उस संयम और साहस का प्रमाण थी जो एक बड़े खिलाड़ी में होना चाहिए। तिलक के छक्के और फिर, महज एक गेंद खेलकर टूर्नामेंट का अंतिम हीरो बने रिकू सिंह का विनिंग चौका भारत को 5 विकेट से यह ऐतिहासिक जीत दिला गया।

कप्तान की खामोशी और युवा कंधों का बोझ

■ यह जीत बेशक ऐतिहासिक है, लेकिन एक सच्चा खेल पत्रकार केवल जश्न नहीं मनाता, बल्कि बारीक विश्लेषण भी करता है। इस टूर्नामेंट में भारतीय बल्लेबाजी की सबसे बड़ी चिंता कप्तान सूर्यकुमार यादव का अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन न करना रही। ‘स्काई’ को उनकी काबिलियत के आधार पर ही चुना गया था, लेकिन फाइनल में 36 रन पर 3 विकेट गिरने के दौरान उनका जल्दी आउट होना (शून्य पर) और पूरे टूर्नामेंट में उनका बल्ले से खामोश रहना गहरी चिंता का विषय है।

■ कप्तान का बल्ला जब शांत होता है, तो पूरी टीम पर दबाव कई गुना बढ़ जाता है। यह तो युवा सितारों, खासकर अभिषेक शर्मा की तेज शुरुआत, और फाइनल में पेवेलियन में मैदान को एकटक निहारते कोच गौतम गंभीर की अपलक आंखों की आगोश में रहते हुए तिलक वर्मा तथा शिवम दुबे के संयम और पराक्रम का कमाल रहा कि टीम इंडिया इस दबाव से बाहर निकल सकी। यदि इन युवा खिलाड़ियों ने इस तरह खुद को साबित न किया होता, तो पाकिस्तान के खिलाफ खिताबी मुकाबले में टीम इंडिया की स्थिति बहुत नाजुक हो सकती थी। यह जीत युवा खिलाड़ियों के दम पर मिली है, न कि अकेले कप्तान के भरोसे। टीम मैनेजमेंट को विश्व कप से पहले इस पहलू पर गंभीरता से विचार करना होगा।



व्यक्तिगत अवॉर्ड्स: जब युवा सितारों को मिला ‘तिलक’

इस ऐतिहासिक जीत के बाद, व्यक्तिगत पुरस्कारों पर भी युवा प्रतिभाओं का ही दबदबा रहा, जिसने भारतीय क्रिकेट के नए युग की शुरुआत का संकेत दिया-

■ फाइनल में अपनी जुझारू नाबाद पारी और दबाव को झेलने की क्षमता के लिए तिलक वर्मा को ‘प्लेयर ऑफ द फाइनल’ चुना गया। उन्हें टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का अवॉर्ड भी मिला।

■ सिर्फ 21 गेंदों में 33 रनों की तूफानी पारी खेलकर मैच का रुख मोड़ने वाले शिवम दुबे को ‘गेम चेंजर’

का पुरस्कार मिला।

■ अपनी शानदार और निर्णायक गेंदबाजी से पाकिस्तान के मध्यक्रम को ध्वस्त करने वाले कुलदीप यादव को ‘मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर’ का खिताब मिला।

■ लेकिन टूर्नामेंट का सबसे बड़ा सम्मान, ‘प्लेयर ऑफ द सीरीज’, विस्फोटक सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को दिया गया, जिन्होंने 314 रन बनाकर पूरे एशिया कप में टीम को मजबूत शुरुआत दी और अपनी काबिलियत साबित की।

ट्रॉफी को लेकर 'हाई-वोल्टेज ड्रामा'



- यह मुकाबला केवल दुबई के मैदान तक ही सीमित नहीं रहा। जीत के बाद पुरस्कार वितरण समारोह में एक अप्रत्याशित हाई-वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला। भारतीय टीम ने कड़ा रुख अपनाते हुए स्पष्ट कर दिया कि वे पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी के हाथों से ट्रॉफी स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि नकवी पीसीबी अध्यक्ष होने के साथ-साथ पाकिस्तान के आंतरिक मामलों के मंत्री भी थे।
- भारतीय टीम की मांग थी कि ट्रॉफी अमीरात क्रिकेट बोर्ड के अधिकारियों द्वारा दी जाए। हालांकि, नकवी के अड़े रहने के कारण, एसीसी और पीसीबी अधिकारियों के बीच लगभग एक घंटे तक गतिरोध बना रहा। अंततः, जब गतिरोध नहीं टूटा, तो विजेता की ट्रॉफी को ही मंच से हटा लिया गया। भारतीय टीम ने विरोध स्वरूप बिना ट्रॉफी के ही मंच पर खड़े होकर एशिया कप चैम्पियनशिप का जश्न मनाया।



देश ने मनाया जश्न, पीएम मोदी ने दी शाबाशी

- भारत की इस ऐतिहासिक जीत के बाद, सिर्फ क्रिकेट प्रेमी ही नहीं, बल्कि पूरा देश जश्न में डूब गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी भारतीय टीम को तुरंत बधाई दी। उन्होंने अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में टीम के प्रदर्शन को 'अविश्वसनीय' बताते हुए युवा खिलाड़ियों की जमकर तारीफ की।



- पीएम मोदी ने लिखा, 'एशिया कप जीतने पर टीम इंडिया को बधाई! यह जीत असाधारण है। युवा खिलाड़ियों ने दबाव में असाधारण प्रदर्शन किया है। यह टीम इंडिया के सुनहरे भविष्य की झलक है। उनके जुझारूपन और प्रतिभा ने पूरे देश को गौरवान्वित किया है।'
- प्रधानमंत्री की यह प्रतिक्रिया दिखाती है कि यह जीत सिर्फ एक खेल का मुकाबला नहीं थी, बल्कि राष्ट्रीय गौरव से जुड़ी एक बड़ी उपलब्धि थी, जिसकी गूंज देश की सर्वोच्च राजनीतिक गलियारों तक भी पहुंची।

परम्परा और आधुनिकता का संगम, शादी के बाद भी सपनों की उड़ान

नई दुल्हन, नया भारत

शादी के बाद घर की चारदीवारी तक सिमट जाने वाली महिलाओं की कहानी अब पुरानी हो गई है। आज की नई दुल्हनें न केवल घर और परिवार को बखूबी संभाल रही हैं, बल्कि अपने करियर और सपनों को भी नई पहचान दे रही हैं। यह सिर्फ व्यक्तिगत बदलाव नहीं, बल्कि पूरे समाज में आ रही एक नई क्रांति की आहट है।



डॉ. मधु बैनर्जी
पत्रकार व लेखिका

‘पहले मेरी जिंदगी घर की चारदीवारी तक सीमित थी, अब मैं खुद अपनी राह चुनती हूँ।’ यह जोधपुर की 28 वर्षीय साक्षी की कहानी है, जो आज हजारों महिलाओं की आवाज बन गई है। राजस्थान की परम्पराओं में शादी को जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जाता रहा है, जहां दुल्हन की भूमिका घर और परिवार तक ही सीमित होती थी। लेकिन आज की नई दुल्हनें सिर्फ पत्नी या बहू की पहचान तक सीमित नहीं रहना चाहतीं। साक्षी ने शादी के दो साल बाद ही डिजिटल मार्केटिंग में नौकरी शुरू की और यह साबित कर दिया कि शादी किसी महिला के सपनों का अंत नहीं है। वह कहती हैं, ‘शादी मेरी पहचान नहीं, मेरा करियर मेरी पहचान है। अब मैं अपनी राय खुद बना सकती हूँ और परिवार में भी समान रूप से सम्मान पा रही हूँ।’

आज की महिलाएं यह संदेश दे रही हैं कि शादी किसी महिला के सपनों और महत्वाकांक्षाओं का अंत नहीं है, बल्कि यह एक नई शुरुआत है।



एक नई पहचान की तलाश

- नए भारत की महिलाएं अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने पर जोर दे रही हैं। राजस्थान के शहरों में महिलाएं अब सिर्फ गृहणी नहीं, बल्कि बैंकर, टीचर, इंजीनियर और उद्यमी भी बन रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाएं सिलाई, हस्तशिल्प और ऑनलाइन व्यवसाय के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रही हैं।
- गुड्डू देवी, एक महिला उद्यमी, बताती हैं, ‘हमारी हस्तशिल्प की कारीगरी अब सिर्फ घर तक सीमित नहीं है। अब हम इसे ऑनलाइन बेचकर अपने परिवार को भी आर्थिक रूप से मजबूत कर रही हैं। यह स्वतंत्रता हमारी सबसे बड़ी ताकत है।’
- सामाजिक दृष्टि से यह बदलाव पारम्परिक सोच के लिए एक चुनौती भी है। कई परिवार अभी भी ‘घर संभालो और नौकरी छोड़ दो’ जैसी मानसिकता रखते हैं। लेकिन शिक्षा और मीडिया के प्रभाव से यह सोच धीरे-धीरे बदल रही है।

सामाजिक बदलाव और सक्रिय भागीदारी

- शादी और करियर के अलावा, महिलाएं अब सामाजिक मुद्दों पर भी सक्रिय हो रही हैं। शिक्षा और कानूनी जागरूकता के कारण वे घरेलू हिंसा, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर खुलकर आवाज उठा रही हैं।
- ममता देवी, जो तीन बच्चों की मां हैं, कहती हैं, ‘मैं अब सिर्फ मां या बहू नहीं हूँ, बल्कि अपने गांव की पंचायत में निर्णय करने वाली भी हूँ। यह पहचान मेरे लिए सबसे बड़ी जीत है।’
- राजस्थान की महिलाएं न केवल परिवार के भीतर बल्कि समाज में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और महिला संगठनों की मदद से वे अपने अधिकारों और सपनों के लिए मुखर हो रही हैं।

सपनों की उड़ान में बाधाएं कम नहीं... बदलाव के बावजूद, चुनौतियां कम नहीं हैं। पारिवारिक दबाव, सामाजिक रूढ़िवाद और लैंगिक भेदभाव अभी भी महिलाओं की राह में रोड़े हैं। कई महिलाओं को करियर और पारम्परिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना मुश्किल लगता है। साक्षी बताती हैं, 'कभी-कभी लगता है कि समाज मुझे सिर्फ दुल्हन या पत्नी के रूप में ही देखता है। लेकिन मैं चाहती हूँ कि मेरी पहचान मेरे करियर और मेरे फ़ैसलों से भी हो।'



परम्परा के सम्मान के साथ स्वतंत्र पहचान

- नई दुल्हन से नए भारत की महिला तक का सफ़र केवल व्यक्तिगत बदलाव नहीं, बल्कि एक सामाजिक परिवर्तन की कहानी है। राजस्थान की महिलाएं परम्परा का सम्मान करते हुए भी अपनी स्वतंत्र पहचान बना रही हैं। वे शादी को जीवन की समाप्ति नहीं, बल्कि अपने सपनों और करियर की शुरुआत के रूप में देख रही हैं।
- आज की महिला सिर्फ घर की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि करियर में सक्षम, समाज में मुखर और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है। राजस्थान में शादी के बाद महिलाएं न केवल पारम्परिक घरेलू भूमिकाओं में संलग्न हैं, बल्कि वे रोजगार और व्यवसाय के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

एक बदलाव की तस्वीर

राजस्थान में शादी के बाद महिलाओं के रोजगार और व्यवसाय में भागीदारी के आंकड़े दर्शाते हैं कि महिलाएं परम्परागत घरेलू भूमिकाओं से बाहर निकलकर आर्थिक रूप से सक्रिय हो रही हैं।

■ **स्वतंत्र रोजगार** : राजस्थान में 2022-23 में महिलाओं द्वारा चलाए गए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) इकाइयों की संख्या 29,500 से बढ़कर 75,900 हो गई, जो एक वर्ष में लगभग 157 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

■ **नौकरी में भागीदारी** : राजस्थान में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर) 37 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय औसत 23 प्रतिशत से अधिक है। हालांकि, इनमें से केवल 6.6 प्रतिशत महिलाएं नियमित वेतनभोगी नौकरियों में कार्यरत हैं।

■ **स्व-रोजगार** : महिलाओं की अधिकांश भागीदारी स्व-रोजगार के रूप में है, जिसमें वे खुद का व्यवसाय चला रही हैं।

यह यात्रा बताती है कि नई दुल्हन से नए भारत की महिला तक का सफ़र स्त्री सशक्तिकरण और सामाजिक बदलाव की एक मिसाल है।



जलाओ दीप मन में भी

दिवाली केवल रोशनी और परम्परा का पर्व नहीं, बल्कि मन और रिश्तों को उजाला देने का अवसर है। सफाई हमें भीतर हल्का करती है, दीपक उम्मीद जगाते हैं, प्रकृति से जुड़ाव जीवन की सच्ची समृद्धि है और संवेदना का दीप ही सच्चा उत्सव है। जब हम करुणा और अपनापन बाँटते हैं, तभी दिवाली का असली अर्थ पूरा होता है।



आशा रामावत
वरिष्ठ शिक्षिका एवं
लेखिका

दिवाली आते ही मन अपने आप उजाले की तलाश में हो जाता है। घर-आंगन में सफाई और सजावट शुरू होते ही लगता है कि धूल केवल दीवारों से नहीं, बल्कि मन के भीतर जमा बोझ भी साफ हो रहा है। बचपन में माँ की हिदायत कानों में गूँजती थी, “हर कोना चमकना चाहिए, तभी लक्ष्मी आएंगी।” उस समय यह केवल मेहनत लगती थी, पर अब समझ आता है कि सफाई केवल बाहरी नहीं, भीतरी भी होती है। जब मकड़ी के जाले और धूल हटती है, तो तनाव और चिंता के जाले भी टूट जाते हैं। यही शायद त्योहारों की असली ताकत है, हमें भीतर तक हल्का और उजला बनाने की।

दीपक जलाने की परम्परा मेरे लिए हमेशा आत्मीय रही है। अंधेरे कमरे में एक छोटा-सा दीपक टिमटिमाता है और लगता है कि अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, उम्मीद की लौ कभी हारती नहीं। यही दीपावली का सबसे बड़ा संदेश है, एक किरण ही काफ़ी है अंधकार से लड़ने को। हर दीपक मुझे कहता है कि हम अपने भीतर भी एक दीप जला सकते हैं, करुणा का, विश्वास का और संवेदना का।

“दीपक की लौ कहती है—

**हार मत मानो,
छोटा सा उजाला भी
अंधेरे को मात दे सकता है।”**



जब हम दिवाली की परम्पराओं पर ध्यान देते हैं, तो पता चलता है कि हर रिवाज केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है। दीयों की रोशनी, घर की सफाई, गोवर्धन पूजा और उपहार देने जैसी क्रियाएँ विज्ञान और जीवन के गहरे संदेशों से जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए, दीपक की लौ केवल घर की चौखट सजाने के लिए नहीं, बल्कि वॉर्म लाइट के रूप में तनाव कम करने, नींद सुधारने और मानसिक शांति बढ़ाने का माध्यम है। घर की सफाई रोगाणुओं और कीटाणुओं को दूर करती है, जिससे बीमारियों का खतरा घटता है। गोवर्धन पूजा के पीछे पर्यावरण और पशुधन संरक्षण की सीख है। अन्नकूट से हमें सामूहिकता और फूड वेस्टेज कम करने का संदेश मिलता है। यही कारण है कि हमारे पूर्वज धार्मिक कर्मकांड के माध्यम से जीवन विज्ञान को भी समाहित करते थे। दिवाली महज पर्व नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, समाज और मनोविज्ञान का

एक जागरूकता का त्योहार है।

बचपन में अन्नकूट और गोवर्धन पूजा का आनंद कुछ और ही था। गांव की चौपाल पर सब मिलकर प्रसाद बांटते थे। तब हमें पकवानों का स्वाद भाता था, पर आज लगता है कि यह परम्परा हमें धरती और अन्न से जोड़ती है। असली समृद्धि सोने-चांदी में नहीं, मिट्टी, पानी और अनाज में है। गाय, खेत और प्रकृति के बिना इंसान अधूरा है। दिवाली के इन उत्सवों का यही उद्देश्य रहा है, प्रकृति का सम्मान और सामूहिकता का भाव।

त्योहार जब पटाखों और शोरगुल से घिर जाते हैं तो मन उदास हो उठता है। मैंने कई बार देखा है, तेज धमाकों से बुजुर्ग कांप जाते हैं, छोटे बच्चे डर से रो पड़ते हैं और पालतू जानवर सहम जाते हैं। तब लगता है कि हमारी खुशी किसी और की पीड़ा का कारण न बने। दिवाली तभी सुंदर है जब उसमें बच्चों की खिलखिलाहट गूँजे, न कि धुएँ और धमाकों का डर।

**“रोशनी हो दीपों की,
धुआं न हो पटाखों का,
खुशबू हो रिश्तों की,
शोर न हो धमाकों का।”**

तोहफ़ों की बात आती है तो मेरा मन आज भी दादी की बनाई मिठाई पर ठहर जाता है। उसमें पैकिंग नहीं थी, लेकिन उसमें अपनापन भरा था। आज जब दिखावे से भरे गिफ्ट-हैम्पर देखते हैं तो लगता है कि असली उपहार वही है, जिसमें दिल की गर्माहट हो। दिवाली सिर्फ वस्तुएं बांटने का पर्व नहीं है, यह स्नेह और संवेदना बांटने का अवसर है।

अक्सर लगता है कि हमने त्योहारों का असली अर्थ खो दिया है। पूजा-पाठ और दिखावे की भागदौड़ में हम भूल जाते हैं कि दिवाली हमें भीतर की अंधकारमयी प्रवृत्तियों से लड़ना सिखाती है। यह त्योहार हमें कहता है कि घर की दीवारें ही नहीं, रिश्ते भी रोशनी से सजाओ। गलतफ़हमियाँ मिटाओ, मन का अंधेरा उजाले में बदलो, यही असली पूजा है।

आज समाज और परिवार को बदलते देख मेरा मन कहता है कि दिवाली केवल बिजली की लड़ियाँ सजाने का नाम नहीं। यह दिलों को जोड़ने का अवसर है, टूटे रिश्तों को संभालने का अवसर है और आत्मा को स्वच्छ करने का अवसर है। हर दीपक हमें याद दिलाता है कि अंधकार चाहे कितना भी गहरा हो, एक छोटी-सी लौ भी उम्मीद जगा सकती है। तो क्यों न इस बार हम अपने भीतर भी वह लौ जलाएं— करुणा की, संवेदना की और जिम्मेदारी की। यही दिवाली का सच्चा अर्थ है।

**“जलाओ दीप मन में भी,
सिर्फ घर-आंगन में नहीं,
फैलाओ उजाला रिश्तों में,
सिर्फ गलियों-चौराहों में नहीं।”**

चिंताजनक: आज दो भाई एक छत के नीचे रहने को तैयार नहीं..

परिवार है जीवन निर्माण की पाठशाला

सभी को स्वातंत्र्य व स्वयं निर्णय करने की ताकत चाहिए। धैर्य और सहनशीलता की कमी से एकाकी परिवार पनप रहे हैं। घरों में राम- लक्ष्मण के स्थान पर बाली- सुग्रीव पनप रहे हैं। अत्यंत ही दुख का विषय है कि रिश्ता खोजते समय एक महिला ही अपनी पुत्री को संयुक्त परिवार में ब्याहना नहीं चाहती। वह चाहती है कि परिवार तो बड़ा हो, लेकिन उसकी बेटी परिवार से अलग रहे। अलगाव का यह प्रेम, संकट का कारण बन रहा है। ये चिंताजनक हैं और इसके निवारण के लिए चिंतन ज़रूरी है।



डॉ. गौरव बिस्सा,
मोटिवेशनल स्पीकर

भा रतीय समाज में परिवार जनों को महाभारत नहीं अपितु रामायण पढ़ने की सलाह दी जाती है। रामायण भाइयों के बीच प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है, जबकि महाभारत में संपत्ति के लिए भाइयों को लड़ता हुआ दिखाया गया है। भारतीय समाज सदैव जोड़ने की बात कहता है। घर टूटने में भारतीय समाज विश्वास नहीं करता। रामायण में बालक लक्ष्मण सदा इस बात के लिए रोते थे कि उन्हें श्रीराम के पास ही खड़ा किया जाए। जब श्रीराम, लक्ष्मण और सीता सहित वन में पहुंचे तो रात को निद्रादेवी का आगमन हुआ। लक्ष्मण ने निद्रादेवी से अनुरोध किया कि वह उनकी आंखों में न आकर कहीं और जाएं, ताकि लक्ष्मण अपने भाई और भाभी की सेवा कर सके। निद्रादेवी ने लक्ष्मण की ऐवज में सोने वाले का नाम पूछा, तो उन्होंने वह निद्रा अपनी पत्नी उर्मिला को स्थानांतरित कर दी। उर्मिला ने समर्पण और प्रेम के कारण लक्ष्मण के हिस्से की नौद अपनी आंखों में भर ली और चौदह वर्ष तक सोए रहने का संकल्प लिया, ताकि उनके पति अपने भाई और भाभी के प्रति धर्म निभा सके। यह धर्म और दाम्पत्य प्रेम की पराकाष्ठा है।



कमजोर पड़ते परिवार

यह तो हुई प्राचीन बात, लेकिन क्या वर्तमान जगत के परिवारों में ऐसा समन्वय देखने को मिल रहा है? क्या महान गौरवशाली परम्परा को धारण करने वाला देश, अपने पारिवारिक जीवन मूल्यों को जी रहा है? क्या बढ़ते वृद्धाश्रम समाज के युवा वर्ग पर एक कलंक या प्रश्नचिह्न नहीं हैं? आखिर ऐसा क्या है कि पति अपनी पत्नी के साथ, भाई अपने भाई से और रिश्तेदार एक दूसरे के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पा रहे? एक घर में, एक छत के नीचे दो भाई साथ रहने को तैयार नहीं। सभी को स्वातंत्र्य व स्वयं निर्णय करने की ताकत चाहिए। धैर्य और सहनशीलता की कमी से एकाकी परिवार पनप रहे हैं। घरों में राम- लक्ष्मण के स्थान पर बाली- सुग्रीव पनप रहे हैं। अत्यंत ही दुख का विषय है कि रिश्ता खोजते समय एक महिला ही अपनी पुत्री को संयुक्त परिवार में ब्याहना नहीं चाहती। वह चाहती है कि परिवार तो बड़ा हो, लेकिन उसकी बेटी परिवार से अलग रहे। अलगाव का यह प्रेम, संकट का कारण बन रहा है। ये चिंताजनक हैं और इसके निवारण के लिए चिंतन ज़रूरी है।

क्या है परिवार?

- क्या एक कुल में जन्म लेना या एक साथ एक घर में रहना परिवार है? यदि यह सही है तो कई जानवर भी इस श्रेणी में शामिल हो जाएंगे, जो एक ही कुल के हैं और साथ भी रहते हैं। तो क्या आप इसे परिवार कहेंगे? शायद नहीं। आखिर क्यों नहीं?
- एक साथ कई भाई और उनकी संतानों एक ही स्थान पर रहते हैं। उनमें विषाद, ईर्ष्या, जलन, क्लेश और लड़ने का भाव प्रबल है। क्या इसे परिवार कह सकते हैं?



आप सही सोच रहे हैं। ये परिवार नहीं हो सकता। जहां परिवार रहता है, वहां क्लेश, संघर्ष और ईर्ष्या के लिए स्थान नहीं रह जाता। परिवार तो शुद्ध सात्विक प्रेम, त्याग, आत्मीयता, सहयोग, और समानुभूति के गुणों से चलता है। परिवार का अर्थ है- परी का वार अर्थात् माधुर्य का वार जिसके अनुसार प्रत्येक दिन मधुर हो। क्या आपका प्रत्येक दिन मधुरता के साथ बीतता है? यदि नहीं तो आप शायद परिवार में नहीं रह रहे।

संयुक्त परिवार और बुजुर्ग

परिवारों के कमजोर पड़ने के पीछे सबसे बड़ा कारण है संयुक्त परिवारों का टूटना और दादा-दादी या नाना- नानी के स्नेह से बच्चों का महारूम होना। आज की पीढ़ी डिग्रियों की परीक्षा में जबर्दस्त परिणाम देने के बावजूद जिन्दगी की जंग में कमजोर है। आंख की शर्म, व्यावहारिक ज्ञान और बुजुर्ग सम्मान में कमी आई है।

■ रिसर्च रिव्यू जर्नल की शोध रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त परिवार में रहने वाले बच्चों में सामाजिक कौशल जैसे- साझा करना, दूसरों की भावनाओं को समझना, सहयोग करना आदि गुण अधिक विकसित होते हैं।

■ बुजुर्गों के साथ रहने से बच्चों के व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों पर जर्मनी के प्रो. जेफ्री स्टॉक्स कहते हैं कि जो बच्चे अपने दादा-दादी या नाना-नानी के साथ समय बिताते हैं और रहते हैं; वे मानसिक रूप से अधिक समृद्ध, समाधान केन्द्रित, धैर्यवान तथा अच्छी शारीरिक सेहत से संपन्न होता है।

■ इलिनोइस विश्वविद्यालय के शोध अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार, ग्रैंड पैरेंट्स के साथ रहने से बच्चे भावनात्मक संतुलन, समानुभूति, स्वाध्याय, हाथ के हुनर और वित्तीय विषयों में दूसरों से बेहतर होते हैं।

रहना, सहना और कहना

सहनशीलता के कारण ही परिवार का पारिवारिक तनाव की मूल वजह सहनशीलता होगा कि अमुक परिवार का रहन- सहन में निवास। सहन का अर्थ है विरोधी बातों ताकत। यहां यह स्थापित होता है कि जो सह परिवार में रहने में भी समर्थ होगा। परिवार विचार को सहना, अपने हितों का बलिदान सहन करना और पलट कर जवाब नहीं देना है। कहने से अभिप्राय है किस समय, किस सीखना। कई बार परिवार के प्रेम को बनाए भी बोली नहीं जाती। कई बार बुरे सत्य को



अस्तित्व होता है। वर्तमान समय में में कमी ही है। आपने कई बार सुना अच्छा है। यहां रहने का अर्थ है साथ और विचारों को भी सहन करने की पाने अर्थात् सहन करने में समर्थ है वो सहन करने का ही स्कूल है। विपरीत देना, बड़े- बुजुर्ग कुछ कह दें तो उसे ही परिवार को श्रेष्ठ परिवार बनाता बात को कहना और कहने की कला रखने के लिए कुछ बातें सच होते हुए न कहना भी परिवार को बचाता है।

ताकत परिवार की : महाभारत कथा

वनवास के दौरान युधिष्ठिर को पता चला कि कुछ शत्रुओं ने कुरु राजकुमार दुर्योधन को बंदी बना लिया है। युधिष्ठिर ने तुरंत ही अर्जुन को आदेश दिया कि दुर्योधन को मुक्त करवाए। जब भीम ने प्रश्न किया कि दुर्योधन पांडवों के कष्टों का कारण है तो उसे मुक्त क्यों करवाए? इसका जवाब देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि यह वक्त आपसी लड़ाई का नहीं है। दुर्योधन को बंदी बनाना कुरु परिवार का अपमान है। यह हस्तिनापुर राष्ट्र का अपमान है। दुर्योधन की वजह से हस्तिनापुर और उसके ज्येष्ठ पिता धृतराष्ट्र की कीर्ति धूमिल नहीं होनी चाहिए। उसने कहा कि आज भी कुरु परिवार एक है। यह कथा परिवार के महत्त्व को समझाती है।

■ आंतरिक रूप से परिवार में चाहे जितनी मतभेदता हो, लेकिन अन्य जनों के सामने परिवार को नीचा दिखाना भारतीय संस्कृति नहीं है।

■ परिवार वह इकाई है जो मुश्किल परिस्थितियों में आपका संबल बनाए रखती है।

■ लहू सदा पानी से गाढ़ा होता है। इस उक्ति को सदा हृदय में रखना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमारे अन्यजनों से चाहे जितने ही मधुर सम्बन्ध हों, लेकिन कुछ ऐसे कार्य होते हैं जो सिर्फ परिवारजन ही संपन्न करवा सकते हैं अतः उनकी महत्ता को समझें।

■ घर के बुजुर्गों (जैसे काका, मामा आदि) से आपके अच्छे सम्बन्ध हैं तो इसका यह अर्थ नहीं कि उन बुजुर्गों की संतानों और

उनकी संतानों से भी आपके मधुर सम्बन्ध हों ही। ऐसे में उन बुजुर्गों की संतानों की गलतियों का दंड उन बुजुर्गों को न दें। उनसे अपने प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखें, क्योंकि आपकी और उन बुजुर्गजनों के रिश्तों की गहराई को उन बुजुर्गों के पोते-दोहिते नहीं समझ सकते। इस कथा में भी युधिष्ठिर ने अपने ज्येष्ठ पिता धृतराष्ट्र के साथ के संबंधों को वरीयता दी। उसने दुर्योधन की गलतियों को अपने ज्येष्ठ पिता से नहीं जोड़ा।

■ परिवारों में आपसी समस्या, छोटी बातों पर अहं पर चोट लगने जैसी घटनाएं होती रहती हैं। कभी कभार बुजुर्ग जन भी कुछ कह देते हैं। उन्हें दिल पर नहीं लेना चाहिये।

भूलिए और माफ़ कीजिए

आपसी संपर्क और कम्युनिकेशन की कमी भी परिवारों के बीच दरार पैदा करती है। पुरानी बेकार की बातों को दोहराने, नकारात्मक घटनाओं को याद रखने, और परिवार के सदस्यों की बुराई ढूंढने से वैमनस्य ही पनपता है। इन्हें जाने दीजिये। जीवन बहुत छोटा है। प्रेम ही याद रहता है। भावनाएं ही याद रहती हैं। छोटी बातों को भूलना और सदा बड़ा सोचना ही परिवार के एकाकार रहने का प्राण सत्त्व है। बच्चों से जुड़िये। वे परिवारों के बीच की खाई को पाटकर नए संबंधों का निर्माण कर देते हैं। परिवार हमारा सबसे बड़ा शॉक एब्सोर्बर है अर्थात् कष्टों और दुखों को दूर करने वाला संस्थान है। यदि परिवार ही न रहा तो समस्त संसाधनों के भंडारण, धन, दौलत, यश आदि का कोई मोल नहीं रह जाता।

अपने छोटे भाई और उसकी पत्नी को माफ़ कर दें कि उसने आपको फोन नहीं किया। अपनी मौसी, बुआ, काकी, ताई, सालेजी या भतीजे को भी क्षमा कर दें कि वे आपको याद नहीं करते। वे न करें तो कोई बात नहीं, आप उन्हें याद कर लीजिए। कुछ दिन करके देखिए। अप्रत्याशित सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। ऐसे ही किसी मित्र से मिलने पहुंच जाइए। उसे खुशी होगी कि आप आए। मिलिए, अहंकार त्यागिए। ऐसा नहीं कर पाए तो अत्यधिक कष्ट होगा। अपने मन की बात कहने का स्थान ही नहीं बचेगा। मस्तिष्क में समस्या होने लगेगी। अतः वेंटिलेशन के लिए ही सही, लोगों से मिलिए।

कई बार जीवन में हमें ऐसा लगता है कि हमें किसी की भी आवश्यकता नहीं है। उस समय हमारे पास अत्यधिक साधन और सम्पन्नता होती है। लेकिन कई बार ऐसा भी होता है कि हमारे पास कोई भी नहीं होता जब हमें अत्यधिक आवश्यकता होती है। अतः अपने परिवार के साथ समन्वय रखकर हृदय को विशाल बनाइए। यही परिवार प्रबंध का गूढ़ सूत्र है।

मुक्त छंद कविता या कविता की कला से मुक्ति



दिनेश सिंदल
कवि, लेखक

कविता सिर्फ शब्दों का खेल नहीं, बल्कि भावनाओं का गहरा समंदर है। पर क्या आज की मुक्त छंद कविता अपने मूल उद्देश्य से भटक गई है? क्या यह सिर्फ विचारों का सूखा संप्रेषण बन कर रह गई है? इस लेख में, दिनेश सिंदल इस सवाल पर विचार करते हैं कि क्यों हिंदी की मुक्त छंद कविता अपनी लय, ताल और संगीत खोकर गद्य का रूप ले रही है। वह हमें कविता की आत्मा—लय और भाव—के महत्व को समझाते हैं और यह भी बताते हैं कि कला कैसे हमारे भीतर के मनुष्य को जगाती है।

सा हित्य एक कला है। कला का गुण यह है कि वह हमारी चेतना और मस्तिष्क को इस प्रकार जागरूक कर देती है कि संसार की हर वस्तु, हर दृश्य, हर घटना हमें सुंदर दिखाई देने लगती है और हमें उससे प्रेम हो जाता है।

कविता भी एक कला है जो हमें संवेदनशील बनाती है। हमारे मन- मस्तिष्क पर अपने प्रभाव से हमारे भीतर उच्च मानवीय गुणों का संचार करती है। कविता शब्दों की कलात्मक रचना है जो गद्य से अलग है। जिसमें लय है, ताल है। वह एक विशेष पैटर्न, जिसे नरेश सक्सेना डिजाइन कहते हैं, का पालन करती है और पाठक की कल्पना और भावनाओं को आकर्षित करने का प्रयास करती है। कवि, कविता के माध्यम से पाठक व श्रोता तक अपनी भावनाओं का संप्रेषण करता है, वह उसे जगाता है और दुनिया को अलग तरह से देखने की चुनौती देता है।

कविता का उद्देश्य भावनाओं का संप्रेषण है, न कि विचारों का। आज मुक्त छंद कविता के नाम पर लिखी जा रही हिंदी की अधिकांश रचनाएं मात्र विचार संप्रेषण पर आकर अपने उद्देश्य की इतिश्री कर रही है। विचार भी मेरा विचार। मुक्त छंद कविता के कवियों ने विचार को भी कुछ विषयों में सीमित कर रखा है। वो विषय है तो ही विचार है। उससे इतर है, तो वह विचार नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हिंदी में मुक्त छंद कविता के नाम से अधिकांश कविता नहीं लिखी जा रही, गद्य लिखा जा रहा है, विचार लिखा जा रहा है। हिंदी में मुक्त छंद कविता की शुरुआत निरालाजी से मान सकते हैं। इनकी कविता 'जूही की कली' को हिंदी की पहली मुक्त छंद कविता कह सकते हैं।

पश्चिम से आया और हिंदी में भटका हुआ रूप

हिंदी से पहले 1855 में पहली बार वाल्ट व्हाइटमैन ने छंद मुक्त का प्रयोग किया। उनकी पुस्तक 'लीक्स ऑफ ग्रास' की अधिकांश कविताओं में तुकांत योजना और छंद का अभाव था। उसके बाद छंद मुक्त कविता अंग्रेजी भाषा में फलने-फूलने लगी। यह कविता के कलात्मक मानडंडों से अलग अभिव्यक्ति की ओर एक बड़ा कदम था। पश्चिम से आई छंद मुक्त कविता के अनुसरण में हिंदी ने भी अपनी पारम्परिक कविता से अलग छंद मुक्त को अपनाया। फलस्वरूप कविता ऐसी भटक गई कि आज वह गद्य बनकर रह गई। पश्चिम में छंद मुक्त ठीक रहा होगा, किंतु हिंदी व उर्दू या कहीं कि भारतीय भाषाओं की एक अलग तासीर है, एक अलग मिजाज है। हिंदी व उर्दू के शब्दों में एक संगीत है। उनकी ध्वनयात्मकता है, जो उनके भाव संप्रेषण को सहज बनाती है।

मुक्त छंद में खो रही कविता की आत्मा

शब्द में एक विशिष्ट ध्वनि होती है और जब इन ध्वनियों को एक साथ लय व भाव के साथ प्रस्तुत किया जाता है तो संगीत पैदा होता है। हर शब्द में कुछ स्वर होते हैं और जब ये स्वर एक निश्चित लय और ताल में एक साथ आते हैं तो संगीत का रूप ले लेते हैं। लयात्मकता की वजह से कविता के पाठक का रिश्ता शब्द के अर्थ संसार के साथ- साथ शब्द में छुपे संगीत से भी बनता है। जब शब्द और उसका संगीत एक साथ पाठक तक पहुंचते हैं तो भाव संप्रेषण में ज्यादा असर कारक होते हैं। यह लय और ताल यति और गति से बनती है। जिसका अभाव आज की छंद मुक्त कविता में हमें दिखाई देता है।

संगीत को एक ऐसी सार्वभौमिक भाषा माना गया है जो शब्दों के पार जाकर भावनाओं को अभिव्यक्त करती है। यह हमारे कलेक्टिव कॉन्शसनेस से आती है। इसीलिए हमें संगीत सुनने के लिए किसी विशेष भाषा को सीखने की आवश्यकता नहीं होती।

वर्ड्सवर्थ कहते हैं कि— Poetry is spontaneous overflow of powerful feeling.

क्या वह 'ओवरफ्लो' आज की कविता में दिखाई देता है? या हमने सिर्फ छंद की अज्ञानता के कारण ही मुक्त छंद की ओर अपना रुख किया है?

कला का उद्देश्य: भाव संप्रेषण या बाजार की मांग?

यह सच है कि जब चेतना नृत्य करती है तो वस्तु भी नृत्य करने लग जाती है। इस नृत्य में कोई अनुशासन नहीं होता। इस नृत्य का कोई तकनीकी, कलात्मक और औपचारिक रूप नहीं होता। मीरा की चेतना जब कृष्ण के प्रेम में नाचती है तो साथ- साथ जड़ यानि शरीर भी नाचने लगता है। यह नाच एक सामान्य, अनौपचारिक, आनंदमय गतिविधि है। इसका कोई व्याकरण नहीं, कोई सिद्धांत नहीं। जिस तरह मंथर गति से बहने वाली कोई नदी जब अपनी पूरी चेतना के साथ बहने लगती है, पूरे आवेग के साथ बहने लगती है, तब वह किनारों के बंधन को स्वीकार नहीं करती। उन्हें तोड़ देती है। ठीक यही बात कविता के साथ भी है। जब कविता लिखते वक्त कवि अपनी चेतना के उच्चतर स्तर पर होता है, तब वह छंद के बंधन को, उसके अनुशासन को स्वीकार नहीं करता, उसे तोड़ देता है।

लेकिन हिंदी के कवि के पास अपनी बात कहने का आग्रह है। वह अपना विचार कविता के माध्यम से बाहर लाना चाहता है। ताकि उसकी कविता की जरूरत और उसकी उपयोगिता तय हो सके। उसकी चिंता भाव के स्तर पर पाठक का रूपांतरण करने की नहीं है।

भाव में आपकी नीयत, आपका पक्ष स्पष्ट दिखाई नहीं देते। विचार में आपकी नीयत स्पष्ट दिखाई देती है। जिससे बाजार आपकी उपयोगिता और जरूरत तय कर सकता है। बाजार सदैव कला का विरोधी रहा है। क्योंकि कला क्रेता- विक्रेता, दलित- स्वर्ण, छोटा- बड़ा, काला- गोरा, हिंदू- मुस्लिम के सभी भेदों को खत्म करके मनुष्य को मनुष्य की तरह देखने का आग्रह करती है। जो बाजार के किए सुविधाजनक नहीं है।

एक बच्चा पेड़ से नाराज यूँ हर बार था,
फल लगा जब पेड़ पर तो बीच में बाजार था...!
यूँ लगा मुझको, मैं जैसे घूम आया कल्लगाह
सामने उसने रखा जब आज का अखबार था...!!

आज इतना ही। फिर कभी किसी नए विषय के साथ।

एक विरल विश्वविक्रमी मंदिर निर्माता महंत



डॉ. ज्ञानानंददास स्वामी
सहायक निदेशक, बीएपीएस
स्वामीनारायण अनुसंधान संस्थान,
अक्षरधाम, नई दिल्ली

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज, वर्तमान में BAPS स्वामिनारायण संस्था के प्रमुख और आध्यात्मिक गुरु हैं, जिन्हें हाल ही में जोधपुर में एक नए स्वामिनारायण मंदिर की स्थापना के लिए पहचाना गया। उनका जीवन सेवा, सादगी और भक्ति का एक अनुपम उदाहरण है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

महंत स्वामी महाराज का जन्म 13 सितंबर, 1933 को मध्यप्रदेश के जबलपुर में हुआ था। जन्म के समय उनका नाम केशव रखा गया था, पर परिवार उन्हें प्यार से वीनू बुलाता था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा जबलपुर के क्राइस्ट चर्च बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पूरी की, जहां वे एक मेधावी छात्र थे। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने आणंद में कृषि महाविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उनकी शिक्षा में तीक्ष्ण बुद्धि और तार्किकता का अनूठा संगम था।

आध्यात्मिक यात्रा व गुरु की प्रेरणा

- युवा वीनू, BAPS के चौथे आध्यात्मिक अनुगामी, योगीजी महाराज के निस्वार्थ प्रेम और आध्यात्मिक प्रभाव से बहुत प्रभावित थे। वे अपनी गर्मी की छुट्टियों में उनके साथ सत्संग में शामिल होते थे। इसी जुड़ाव ने उन्हें संन्यास की ओर प्रेरित किया। 1957 में, उन्होंने योगीजी महाराज से पार्षदी दीक्षा ली और वीनू भगत के नाम से जाने गए। बाद में, भागवती दीक्षा के बाद उनका नाम केशवजीवनदास स्वामी रखा गया। 1961 में, योगीजी महाराज ने उन्हें मुंबई स्वामिनारायण मंदिर का महंत नियुक्त किया, जिसके बाद वे महंत स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- योगीजी महाराज के परलोक गमन के बाद, महंत स्वामी ने स्वयं को उनके उत्तराधिकारी प्रमुख स्वामी महाराज के प्रति पूरी निष्ठा और भक्ति के साथ समर्पित कर दिया। प्रमुख स्वामी महाराज के निर्देशानुसार, उन्होंने भारत और विदेशों में लगातार यात्राएं कीं, भक्तों को प्रेरित किया और संस्था के विभिन्न सामाजिक-आध्यात्मिक कार्यों में योगदान दिया।



आध्यात्मिक उत्तराधिकार और नेतृत्व

20 जुलाई, 2012 को प्रमुख स्वामी महाराज ने महंत स्वामी को अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी घोषित किया। 13 अगस्त, 2016 को प्रमुख स्वामी महाराज के देहावसान के बाद, महंत स्वामी भगवान स्वामिनारायण की गुणातीत परम्परा के छठे गुरु बने। तब से, वे लाखों भक्तों के गुरु और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में BAPS की विश्वव्यापी गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं।

विश्वस्तरीय मंदिर निर्माण और सांस्कृतिक विरासत

महंत स्वामी महाराज के नेतृत्व में, BAPS ने पिछले नौ वर्षों में 500 से अधिक मंदिरों का निर्माण किया है, जो एक विश्व रिकॉर्ड है। इन मंदिरों में से कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

- अबू धाबी का हिंदू मंदिर: यह मध्य-पूर्व का पहला पारंपरिक पत्थर से बना हिंदू मंदिर है। इसकी वास्तुकला प्राचीन भारतीय वास्तुशिल्प को दर्शाती है और यह सह-अस्तित्व और सद्भाव का संदेश देता है।
- न्यू जर्सी का रॉबिन्सविल अक्षरधाम मंदिर: अमेरिका में स्थित यह मंदिर विश्व के सबसे विशाल हिंदू मंदिरों में से एक है। यह भारतीय कला, संस्कृति और आध्यात्मिकता का एक भव्य प्रतीक है।

महंत स्वामी महाराज का जीवन त्याग, सेवा और प्रेम का एक आदर्श है। उनके मार्गदर्शन में निर्मित ये मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं हैं, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति के अद्भुत प्रतीक भी हैं। उनका जीवन और कार्य हमें यह संदेश देते हैं कि एक संत का संकल्प और आशीर्वाद मानवता को शांति, सद्भाव और प्रभु भक्ति के मार्ग पर ले जा सकता है।

ग्रहों की चाल



विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374



मेष

इस राशि के जातकों के लिए यह महीना आर्थिक जोखिम से भरा हुआ रहेगा। शेयर मार्केट इत्यादि पर बड़े इन्वेस्टमेंट करने से बचें। कई पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होते दिखाई दे रहे हैं। वैवाहिक जीवन में कुछ मनमुटाव संभव है। संतान को लेकर कुछ सुखद समाचार प्राप्त हो सकते हैं। भूमि, भवन, वाहन की खरीद के लिए यह समय अनुकूल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखने की आवश्यकता रहेगी। ससुराल पक्ष की ओर से सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। हनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा।



वृषभ

इस राशि के लिए यह महीना भूमि भवन और वाहन का सुख देता दिखाई दे रहा है। विदेश का प्लान अगर आप बना रहे हैं तो वह भी सफल होता दिख रहा है। भाई बहनों के साथ बहुत ही सौहार्दपूर्ण रिश्ते रहेंगे और पुरानी खटास भी दूर होगी। रवतचाप असंतुलित हो सकता है। कार्यस्थल पर वर्कलोड बढ़ेगा। किंतु आय उस अनुपात में कम ही रहेगी। संतान के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। भगवान शिव की उपासना और शनि शिला पर तेल अभिषेक आपके लिए शुभ रहेगा।



मिथुन

इस राशि के जातकों के लिए यह समय व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन के लिए सुखद एवं उन्नति कारक रहेगा। मान सम्मान में वृद्धि होगी। किसी भी विवाद से दूर रहना अच्छा रहेगा। भाग्य साथ देता दिख रहा है किंतु फिर भी कार्यस्थल पर गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। हृदय या सीने से संबंधित समस्या आ सकती है। सरकारी नौकरी में कार्यरत व्यक्तियों के लिए भी यह समय शुभ फलदाई है। भगवान गणेश की उपासना आपके लिए इस माह शुभ रहेगी।



कर्क

इस राशि के जातकों के लिए प्रेम के अध्याय प्रारंभ हो सकते हैं। नए वस्त्र, इत्र इत्यादि पर धन व्यय करेंगे। घूमने फिरने के कार्यक्रम बनेंगे। भाइयों से विवाद की स्थिति बनी रहेगी। भाग्य का प्रतिशत थोड़ा कम ही रहेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखते हुए चलें। सूर्य को जल अर्पित करना आपके लिए शुभ रहेगा।



सिंह

इस राशि के जातकों के लिए यह समय सफलता की सीढ़ियां चढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। सरकारी और अर्ध सरकारी तंत्र से जुड़े लोगों को लाभ होगा। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। किंतु विवाहित जोड़ों के बीच में मनमुटाव की स्थिति बनेगी। राजनीति के अखाड़े में भी आपकी विजय सुनिश्चित है। सुखद समाचारों की प्राप्ति होगी। किसी नई भूमि या भवन की खरीद हो सकती है। पत्नी को स्वास्थ्य कष्ट रहेगा। सुबह उठकर खाली पेट रहते हुए कबूतरों को भोजन करना आपके लिए शुभ रहेगा।



कन्या

इस राशि के जातकों को कंधाधियव रहेगा नेत्र दोष होगा। सर दर्द से संबंधित समस्या रहेगी। वैवाहिक जीवन में तनाव दिखाई दे रहा है। पेट और कमर से संबंधित रोग रह सकते हैं। भाई बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आय के साधन बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। कार्यस्थल पर की गई कोई गलती आप पर आरोप प्रत्यारोप के रास्ते प्रशस्त कर सकती है। अपने गुरु या माता-पिता के चरण स्पर्श करके दिन की शुरुआत करना आपके लिए शुभ रहेगा।



तुला

इस राशि के जातकों के लिए यह महीना शुभ समाचारों से भरा होगा। स्वास्थ्य पर थोड़ा व्यय होता दिख रहा है। सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले जातकों के लिए यह समय सफलता लाता दिखाई दे रहा है। लपजरी और ऐशो आराम पर खर्च होगा। भाग्य का प्रतिशत कम है इसलिए कर्म पर विश्वास करके आगे बढ़ें तो सफलता मिलेगी। भगवान शिव की उपासना आपके लिए शुभ फलदाई होगी।



वृश्चिक

इस राशि के जातकों का मन अस्थिर रहेगा। छाती से संबंधित रोग संभव है। संतान की ओर से कुछ तनाव दिखाई दे रहा है। भूमि, भवन, और वाहन की खरीद के लिए यह समय शुभ नहीं है। कोर्ट कचहरी मुकदमे बाजी से बचाव रखें, अन्यथा मानहानि की संभावना है। बालाजी की उपासना आपको शुभ फल प्रदान करेगी।



धनु

इस राशि के जातक इस महीने अपने अहम को सफलता के बीच में बाधक न बनने दें। आपके पास लाभ के कई अवसर आएंगे, किंतु आप लापरवाही के कारण उन्हें छोड़ सकते हैं। थोड़ा पूर्ति और अनुशासन रखेंगे तो ईश्वर की काफी बड़ी कृपा बन सकती है। आवश्यकता से अधिक रिस्क जोखिम में डाल सकता है। प्रॉपर्टी से संबंधित कोई भी विवाद या खरीद फरोख्त नुकसान दे सकती है। पत्नी को स्वास्थ्य कष्ट रहेगा। शनि देव की उपासना इस महीने आपके शुभ फल प्रदान करेगी।



मकर

इस राशि के जातकों के लिए यह समय बहुत ही अनुकूल और भाग्य वृद्धि कारक है। जिस क्षेत्र में भी आप हाथ डालेंगे, आपको लाभ मिलता दिखाई दे रहा है। प्रेम के मामले में यह माह आपके लिए लाभकारी दिखाई दे रहा है। खानपान पर नियंत्रण रखें, अन्यथा पेट संबंधी रोग हो सकते हैं। धन लाभ होता दिखाई दे रहा है। शनि देव की उपासना आपको शुभ फल प्रदान करने वाली है।



कुंभ

इस राशि के जातकों को इस महीने भाग दौड़ का सामना करना होगा। किंतु इस भागदौड़ का शुभ फल अंततः आपको प्राप्त होता दिखाई दे रहा है। पांव में थकान, सूजन, चोट जैसी संभावनाएं बन रही हैं। सूझबूझ के साथ लिए गए सभी निर्णय आपके लिए अत्यधिक लाभकारी होंगे। संतान की ओर से कुछ निराशा हाथ लग सकती है। पत्नी के साथ मनमुटाव रहेगा। प्रेम संबंधों में भी खटास आ सकती है। शनि देव और हनुमान जी की उपासना आपके लिए शुभ रहेगी।



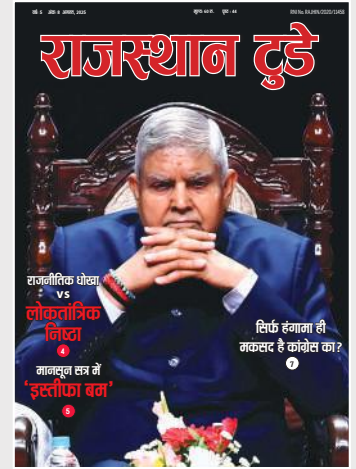
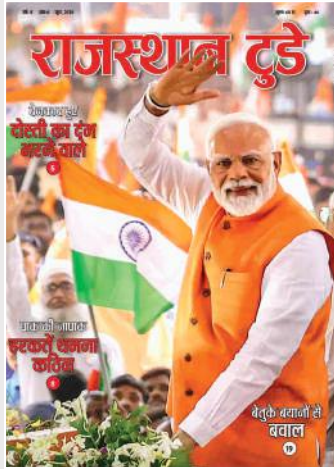
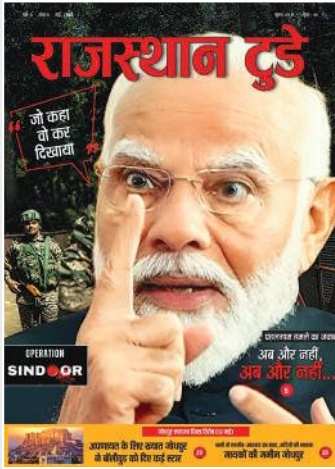
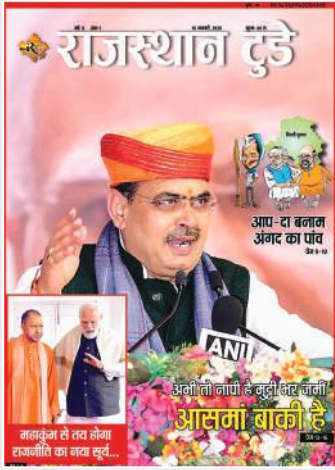
मीन

इस राशि के जातक अगर इस महीने मन को शांत रखकर प्रौढ़ मस्तिष्क से निर्णय लेंगे तो सफलता अर्जित होगी। कोर्ट कचहरी से घिरे हुए लोगों के लिए यह महीना शुभ फलदाई नहीं है। भाइयों के साथ विवाद की संभावना है। वाहन बहुत सतर्कता के साथ चलाएं, अन्यथा दुर्घटना घट सकती है। पत्नी के साथ संबंधों में तनाव रह सकता है। इस सबके बावजूद भी भाग्य साथ देता दिखाई दे रहा है। संयम इस महीने आपके भाग्य की कुंजी होगा। गुरु या पिता तुल्य व्यक्ति के चरण स्पर्श कर दिन की शुरुआत करें।



राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात



मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता प्रपत्र

नमस्कार,

हम आपको हमारी मासिक समाचार पत्रिका के साथ जोड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारी पत्रिका में आपको देश और दुनिया की नवीनतम खबरें, विशेषज्ञों के लेख और विश्लेषण, और विशेष सामग्री मिलेगी।

सदस्यता विवरण

- सदस्यता शुल्क: 1000 पोस्टल चार्ज सहित प्रति वर्ष (12 अंक)
- सदस्यता अवधि: 1 वर्ष (12 अंक)
- भुगतान विकल्प: ऑनलाइन UPI भुगतान

सदस्यता प्रपत्र

नाम : _____

पता : _____

शहर : _____

राज्य : _____

पिन कोड : _____

मोबाइल नंबर : _____

ईमेल आईडी : _____

भुगतान विवरण

ऑनलाइन भुगतान

UPI QR code



8107800000@pz

हमारा पता

राजस्थान टुडे



बी-4, एम आर हाईट्स,
भास्कर सर्कल, रातानाडा,
जोधपुर- 342011

संपर्क जानकारी

वाट्सएप नंबर : +91 8107800000
ईमेल : rajasthantoday@gmail.com

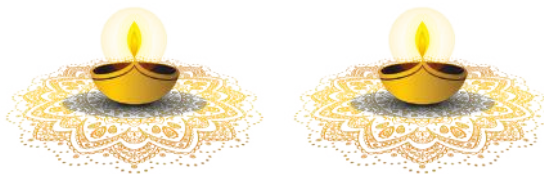
धन्यवाद,
राजस्थान टुडे टीम

RNI No.- RAJHINDI/2020/11485

सदस्यता के लिए आवेदन करें : यदि आप हमारी मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता लेना चाहते हैं, तो कृपया इस प्रपत्र को भरें और हमारे WhatsApp नंबर पर भेजें। हम आपको जल्द ही अपनी पत्रिका के साथ जोड़ देंगे।



AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.



AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS



221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in